श्री सद्गुरुभ्योनमः

॥ रत्नसमुच्चय ॥

तथा

॥ रामविलाश ॥

संग्रहकर्त्ता श्रीसाधुजीमहाराजके

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी रुद्धिसारजीगणिः

छपायके प्रगट कर्त्ता.

शिष्य पं। क्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंद

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा

वीकानेर वडा उपासरे पास पं। क्षेमचंद मुनिः

चि। पेमचंद अमरचंद विद्याशाला.

मुंबई विचले भोईवाडे श्रीचिंतामणजीके

मंदिर मेहता पास

संवत् १९६० मिति आसो शुदी ९-सने १९०३

शांति सुधाकर प्रेस-मुंबई.

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकलचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवा
नां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

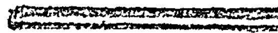
अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
सुधर्मगणभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर ।
ख्यगणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्नभसिद्धिपंक्तिसरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्बिरुदंकृतोखरतरे त्याख्यं
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभि
धः ॥ दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिउप,
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमधाटी
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
कानेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमाश्लोढा, नि
धानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं
पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचंद्रेण,
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृतसहायेन, सुबध्यांशोसकाकरैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेभ्योवै, नित्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृहदोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ हमारे पोषपुत्र शिष्य पं। श्रीक्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंदका हे. हमने हमारा सर्व स्वजपासरा पुस्तक धन्नमालका मालक इन तीनोकों किया हे, दूसरा किसीका दावा हजर नहीं ॥ शुभं ॥

दसकत। उ०। श्रीरामलालगणिःका खुद ॥



॥ रत्नसमुच्चय–रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रजवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोजद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंजूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ए श्रीथूलजद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी जये सो वीरजगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगछ प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बमे प्रजावीक विद्यासिद्ध जये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतन सूरिः जये सो एक तो निजशिष्य उर दुसरा साधुउंके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योंकों आचार्यपद दिया तबसें ८४ गछ जया, यह ८४ गछोंके आचार्य बमे प्रजावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३ए पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः जये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः जये सो अणहलपुरपट्टणमें डुर्लजराजाकी सजामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद दिया, अतिशयपणे खर–सूर्यकी तरे ज्ञानकरके जलऊलायमान। अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बमे कठोर इस वास्ते खरतर विरुद पाया,

कोटिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदीक्षित शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बादसाह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ ओर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेवसूरिः भये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हजार वागडीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोंनें चितोड ओर उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साधकर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्यवंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा भाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनोंका दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूपसें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण वदि अमावशकों स्वर्गवाश भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रगट होय प्रथम दरशण दिया, तिसपीछे सकलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्त्ति स्थूंभ स्थापन कर दादाजीके नामसें वंदन पूजन करणे लगें, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात भया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी भये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि भये, जिनोंने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको छांटा गच्छकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिनराजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गच्छ सागरचंद्रसूरिःसें भया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गच्छ भया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी भये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाभसूरजी भये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी भये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी भये, इनोके समयमें महेंद्रसूरिजीसें मंडोवरागच्छ भया, इनोके ७२ में पट्ट श्रीजिनहंससूरिःजी भये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः भये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । भ । श्रीजिनपद्मसूरिःजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें बहोत ओछे रहे तर वर्ष२ ज्ञानवंत क्रियावंतोको तर२ जगे चतु-

मास करणे नेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो नी गोचरी थंमिल्ल नूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलनूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपणे वि-द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बमा अपरबलीपणा हे सो गछमें साधू वहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंमित वि-द्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोमे हें, तब उपाध्यायजीने कहा म-हाराज यह वृहगछ खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी अनी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजांयगें, एसा कह दादासाहि बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरूके ध्यानमें लीन नये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-रणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाउमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें शांतरश का नरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोनें वि-वाहकी वांग गोम दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाम विस्तारनावकूं प्राप्त नई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरसेमें सीवाणची देशमें नई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बमे२ विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उस शाखा,

मैं उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ। श्रीक्षेममाणिकजीगणिः तत् शिष्य। पंडित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं। प्र। लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं। प्र। श्रीधर्मशीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं। प्र। श्रीकुशलनिधानजिगणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलाश तच्छिष्य पं। क्षमासौभाग्यमुनिः चि। पेमचंद चि। अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया। श्रीबीकानेरमें सं। १९८९ की ज्येष्ठ वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु। श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.

११ रु। श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी झाबक.

११ रु। श्रीसदारामजी गोलछा.

११ रु। मानमलजी केसरीचंदजी साफ.

११ रु। श्रीचूनीलालजी गोलछा.

१० रु। श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.

७ रु। श्रीआसकरणजी वरढिया.

११ रु। श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु। श्रीसिरदारमलजी तालेरा.

२५ रु। श्रीबालचंद कनीराम आजम मुमईवाला.

३ रु। श्रीबछराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंडित तत्वज्ञानी वण जायगें, जैनउपदेशक वधेगें, और जो नही प०

हते हैं उनोंकों इस्तरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोंके वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवैकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, बाजे गृहस्थ एसा कहते हें हमारे भावे बिगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगें न अन्नवस्त्र देंगें, देंगेंतो मानरहित कंगलोंकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंद्रताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलासादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला उतरे, दस बीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें बिगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा. प्रश्न । हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रक्खे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हें, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वडेरोंनें तुमारे वडेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वडा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन सुठाणे पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोंकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हे इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्ररुषननाराच संहणान विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकडीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोके चेला बणाणेमें इतना फायदा हे–मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही छोडदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, थोडेमें विचारणा ॥ प्रश्न–जिनोंकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरूके कमाये धनसें पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर–जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोंकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

हते हैं उनोंकों इसतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोके वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवैकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पढली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा कहते हें हमारे भाव विगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेगें न अन्नवस्त्र देगें, देगेंतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंद्रताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें विगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा. प्रश्न। हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रखे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हें, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वमेरोनें तुमारे वमेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वमा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन् सुगाणे पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रऋषभनाराच संहणान विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकमीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला बणाणेमें इतना फायदा हे–मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही छोमदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, थोमेमें विचारणा ॥ प्रश्न–जिनोंकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरूके कमाये धनसें पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर–जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

धर्म हैं, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करै करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

बीकानेर बडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीरामलालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणाक्य स्वरोदय भाषा	१	०
करुणाबत्तीसी। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ सिद्धमूर्त्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगच्छ तपगच्छकी	४	०
श्रावकव्यवहारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत उर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गछकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्तावणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाबही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अछे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोग्य उर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गछके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने उर पढाणेवाले होणा, वर्द्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

धर्म हैं, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते है संतान वैसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करे करावे अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

बीकानेर बडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीरामलालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणक्य स्वरोदय भाषा	१	०
करुणाबत्तीसी दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगच्छ तपगच्छकी	४	०
श्रावकव्यवहारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत उर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला डुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसैंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसैं जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसैं यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्ष्यके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाबहार करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अछे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोग्य उर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्टायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसैं धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसैं संघमैं परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने उर पढाणेवाले होणा, वर्ध्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गछ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं हे उहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधूओंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोंसें वेयावच्च कराणी नही, छती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहीसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा उर निंद्या करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पक्षते समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हे उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जग इन पुरुषोके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हें, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणठाणी, इसी तरे साधुउंके मुजबही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणठाणा समजणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूउंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गण२वालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसें सधेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंनें कषायकी चोकडी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालगेट करणेकूं तब बहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमेंसें वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वभा-

वही होता है सो गुणमें दुगुण निकालते है, भर्तृहर लिखता है-सूरवीरकुं निर्दई कहते है गमखाणेवालेकूं डरोकम केते है ब्रह्मचारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर एसे चेलेकूं सुखपाठ जैनधर्मका अवस्य कर्तव्य गुणाना नित फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे वोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि षट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती डंडा झोला चेहर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादत्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें भावें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूउंको पादत्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंथणा तिरपणीके डोरे वणाणे माला वणाणी छोकरे पढाणा मंत्रविद्यासें कुशलातां रखणी सो जी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, छती शक्ति सचित्त त्यागणा, राजदंड लोकभंड एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही वेठणा, कुविसनीयोंकें संगतसे लंछन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब वोसराके परभव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलभबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोमें लिखा हे, उस गुणोकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधूओंकी प्रतिपाल करणेसें श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य भगवंतनें कहा हे, बालक कसूर भी करे तोभी मातापिता अपणे संतानपर अंतरंगसे कभी द्वेष नही करते हें, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, भेषधारीसाधूओंमें कोइ तरेकी एब दीखपडे तो एकांतमें हितशिक्षा देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावे एसी एब कोइ नही होय ओर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल भाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय ओर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, ओर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर ओर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंभाल जरूर करे, विनासंभाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजबीजें बिगड रही हे, भंडार लोक खागये हे, बती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसें करें, अपणा लडका लडकीयोंकूं संसारविद्या ओर धर्मकी मजबूती करणेकूं पडिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार ओर जैनन्यायशास्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु ओर वडेर अकलवंतोकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजादसें जो विपरीत आचारणा करें उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको भी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म लडकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिखलाणा, क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेसें पीछे उस-

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हें इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समझा हे वोही जाणता हे उर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अन्नी बहोत नवभ्रमण करणा बाकी रहा हे उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ हे मानेत्नी तो कोन सच्चा उर कोण झूठा ? (उत्तर) हे नव्य हमने पेस्तरही लिखा हे न्याय जो जैनका सात नंगरूप हे उसकूं समझा उर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. (प्रश्न) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हें सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? (उत्तर) जो इतना नही समझो तो जो रुषनदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे बीचर में अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये हे, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार नगवान नद्रबाहुस्वामी उमास्वाती नाष्यकार जिननद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर वडा उपगार रत्नप्रन्नसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योने किया हे सो केइयक पापारंन की वातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई हे, जैसें मद्यका पीणा उर मांसादि अनक्ष खाणा लेकिन् आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोनें अधोगतीकी सडक बां-

धणे पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरन्नाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछ- तावा होगा थोमे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन उगुण हे एसें मांसमें देखो जैनतत्वादर्श न्नाषाग्रंथ, यही चीज अछी होती तो तुमारे वमेरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों ठोमते उर मुसलमीनोकों न्नी धर्मकायदेसें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं- मित तो डुस्मन न्नी अछा होता है मूर्ख हितकारी न्नी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाका- रण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे— डुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, डुस्मन नही पचास ॥ जणनी जणके क्या किया, न्नार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपन्नोगमें लेता हे सो सब उतम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता न्नाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य वोलाउ रूप हे, अन्न वस्त्र उषधी सज्या पात्रादिक साधुउंकों देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे ऊजमणें दान करे, सा- धर्मी तथा जैनपंमितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र न्नोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थंकर न्नगवान न्नी संवत्सरी दान देते हें, दानधर्म मुख्य हे न्नगवतीजीमें ग्रहस्थका अन्नंगद्वार कहा हे, न्नगवतीसू- त्रमें तीन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, क- लागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्तिपंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभंगी लिखते हें ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्वविराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोंके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्राये जैनमंदिर भोजगही पूजते हें उनोंमें इस वखत प्राये मिथ्यात्वी वहोत सम्यक्ती वहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हें सो सर्व जैन हें जिनोंको अन्य देशमें गंधर्व कहते हें; (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंने जैनधर्म कबसें छोडा हे ? (उत्तर) पहले श्रीऋषभदेवजीने भोगवंश स्थापन कर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्यशनें भोगवंशीयोंको पूज्य जाण जिनमंदिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें वलिदानें भोगवंशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंको अनेक तरेसें पर्व महोछव पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ से वर्ष पहले उसीयांमें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राजपूतोंके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव पमार वगेरोंनें भक्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारीपणा साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगेरोनें विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजीने लाखों उसवाल फेर बणायें, तब राजवीयोंनें गुरूसें अरज की इस दयाधर्मके प्रभावसें निर्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नही राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरुने कहा जो जिनमंदिरोकी भक्ती उर जतीगुरुकी सेवा अभक्ष त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगें तथास्तु वरदान एसाइ भया, राजाउने अपणें भाई स्वजनवर्गी उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सों रजवाडोंमें उसवालोंका राज्याधिकार बणा तबसें उसवालोंनें महेरबानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोंका पूजारीपणा भी भोजकोंकों सोंपा वह भोगवंशी फेर पीछे धीरे२ मिथ्यात्वी बणचेहे, विद्याहीनता होणेसें सब तरेकी हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण भोजकोंको कर्म कर करके मांनणे लगे पूज्यभाव उठगया, जो कभी भोजकलोक एसा समझतें होंगे की हम तो अव्वलसेंही शैव वैष्णव थे (उत्तर) यह समझकी भूल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहुलायतमें प्रजा जैन रही, बोधोंके अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अमलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोसें भी पाईजाती है लेकिन् जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना भोजकोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पंमारादिक परमजैन तुमारा लागा उर बहुमान उसवंश पर कभी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर उसवाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा ऊर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेही बहोतसें उसवंशी भी खुसामदीसे दूसरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट भी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसकी भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगभक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत डालणा नही, देव ऊर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सङकर्मो रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सङकर्मो रुपे श्रावक देते हें वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर ठ उपदेश मेंनें लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके छापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे वा गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते॰

हैं, उनोंका मैं सदा आभार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिक्रियत ग्रंथ, संतियद्यपिदुर्जना ॥ नहिदस्युभयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोभी करताहूं यद्यपि दुरजन बहोत हे चोरोके डरसें लोक कंगाल नही वणा वेठते तेसे १ मेनें अपने हाथसे लिख२कर मुंबइ भेजकर शिष्यवर्गोके कहणेसे इसमें संग्रह मैंने अनेक ग्रंथोसे किया हे, बहोत चीजें पं। प्र। श्रीअबीरचंद्रजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषभदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे वणा जो। राम। उनोके मध्यवर्त्ती सब भगवंतोके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

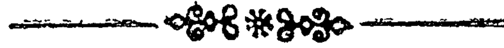
॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, द्युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिभव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोभयं नोमारीनचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्याप्रणत्पुच्चकैः ॥ यस्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनाम्माक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसठ योगण पाय लगाई ॥ डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरुप्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तरुक्क करक्क भटक्क, अटक्क रहै जु खटक्क न काई ॥ कहे भ्रमसीह खंधे कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ राजे थुंभ ठौरठौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, जगत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही भाव आय, पूजै लख लोक पाय ॥ प्यासनकूं रांनमांझि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु दाट,

ह्राठ पुर प्राट्यामें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो है ॥ धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो है ॥ १ ॥ कुशल अंग उवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कुशल देव देहरे, कुशलै घन राजदुवारे ॥ पुन्य प्रसाथे कुशल कुशल श्रीसंघ नणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घर२ गाईजै ॥ जिनचंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वर्त्तो संसार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लच्छि घर कुशले आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल घन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोमां थट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, नट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥



रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ छुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ पूजा प्रारंभ ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

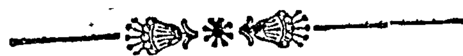
॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥

॥ अथ तपगछ सामाचारी ॥

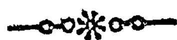
——*——

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥



॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर न्रूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा ध्रमसी करे ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सीस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे ध्रमसी गुण ध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें २ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥
एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें ध्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ नृ ठृ सृ शृ स्तृ हृं ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य ब्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र घ्र ज्र त्र द्र प्र ब्र भ्र व्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न त्न प्न स्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म घ्म च्म ण्म द्म न्म श्म ष्म स्म ह्म ह्म । र्क र्ख र्ग र्घ ॥ क्क ख्क ग्ग ग्घ ङ्क । च्च छ्छ ज्ज ज्झ ञ्ज

ट्ट ठ ड्ड ढ्ढ ण्ण त्त त्थ ड्ड द्द द्ध न्न ॥ प्प प्फ ब्ब भ्प म्म य्य र ल्ल व्व श्श ष्ष स्स ॥ ञ्य त्स्न्य ष्ट्र ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १ । १०००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृह्मस्था । णिंविद्राह्वास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृद्धल्युश्रेष्टात्म । ञम्यास्तेहृद्यज्ञासिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंम्डितेच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्त्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताम्डयेत् ॥
प्राप्ते तु षोम्डशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥७ ॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानम्भुजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्ठवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विकंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्ज्जोनामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अः इतिविसर्ज्जनीयः कः इतिजिह्वामूलीयः पः इत्युपध्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्‌विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरणसमाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

ॐअर्हतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पंचपरमेष्ठिपदहै सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकूं मंगलकरो. केसेकहै पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हणे सो अरिहंत कहीजै. फेर श्री अरिहंत केसेंहै, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहै फेर अरिहंतमहाराज केसेकहै भगवंतहैं भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालके फेर श्री अरिहंत भगवंत केसेंकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोसें बिराजमानहे सो बारे गुण एसेहें प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग उर पसीना उर मैलरहित बम्हा खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही उर मांस गउके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोंके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वींट नीचा रहे पांखडी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ भाषामें यथावस्थित समझै एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुसासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ श्चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोलता रहै ४ ॥ आसनञ्च ५ भगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिस्सें भव्यजीव भगवानके तरफ देखसके भगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे उर तीन दिसामें भगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसैं च्यारोंहीदिसामैं बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेहुये दिखाइदेवे ६ ॥ दुंदुभी ७ आकाशमैं देव ते देवदुंदुभीवाजित्र वजावे ७ ॥ छातपत्रं ८ भगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन छत्र रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहै एसे अरिहंत देवाधिदेव चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोभित एक हजार आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलोक्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमैं महाविदेह क्षेत्रमें केवलज्ञान केवलदर्शनसैं लोकालोकका भाव देखतेहुये पृथ्वीमंडलपर भव्यजीवोंके मनोरथ पूरणार्थके विचरतेहैं एसे अनंत गुणसैं विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमैं सदा मंगल करो १ ॥ (सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार हुवा केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप अग्निसें भस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तहुये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक भयादिकसैं रहित चवदे राजलोकमैं सव जीवोंके मनोगतभाव एकसमयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेहुये एसे श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्याजिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नमस्कार हुवा केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज छत्तीसगुणोंसें विराजमान मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अवुधजीवप्रतिवोधक क्षमागुणभंडार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिनशासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसिद्धांतसुपाठका) चोथे परमेष्टिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नमस्कार हुवा केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

णकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोसें विराजमांन एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्टिपदमें सरब साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंकें आराधक पांचे सुमतेसमता तीनें गुतेगुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थे ॥

॥ अथत्रिंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी — २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी — ४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी — ६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी — ८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी — १० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी — १२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी — १४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी — १६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी — १८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी — २० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतोजी — २२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी — २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी — २ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी — ४ श्रीअभिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी — ६ श्रीपद्मप्रभूजी

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी — ८ श्रीचंद्राप्रभूजी
९ श्रीसुविधनाथजी — १० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी — १२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी — १४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी — १६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी — १८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी — २० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी — २२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी — २४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी — २ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी — ४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी — ६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी — ८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी — १० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूव्रतनाथजी — १२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कपायदेवजी — १४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी — १६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी — १८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी — २० श्रीविजयनाथजी
२२ श्रीमल्लिप्रभूजी — १२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी — २४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी — २ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी — ४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी — ६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी ८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभूजी १० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी १२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहुजी १४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभजी १६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी १८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी २० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी २ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी ४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी २ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी ४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी ६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी ८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुभद्राजी १० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी १२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी १४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रभावतीजी १६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐ अर्हपरमेष्टिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो नवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खमा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अछुठि भुमि कहे पीछें खमासमण देकें इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इछं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जाननें ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलाडे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिछादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे हाथे परिहरुं ॥

॥ न्नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्णा॥५॥

॥ पीछें खमा होय कें इछामि खमासमणाका पाव कहे कें इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें फेर खमासमण दे कें इछा० ॥ न्न० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इछं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-कार गणी इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् पसाउ करी सामायिक दंरूक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि न्नंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि न्नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चरकामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण दे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि॥ गुरु कहे पडिक्कमह. पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नच्छ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अभिथुआ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थय रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देइ इच्छा० ॥ भगवन् बैसणो संदि स्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें वली खमा-समण दे कर ॥ इच्छा० ॥ भगवन् वेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भग० ॥ सिज्झाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा खमे हो कर आठ नवकार कह कर सज्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ पांगरणो पडिग्गाहुं? गुरु कहे पडिग्गाहेह ॥ पीछें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिज्झाय करेह. ऐसें कहे ॥ इति प्राभातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जिंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ भरुअच्छेहं मुणिसुव्वय, महुरिपास दुह दुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तित्थयर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदु जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लब्भई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स दुई, थुणिज्जइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउसय छायासीआ, तिहुअके चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठासिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ङ्गगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्नयदयाणं, चरकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट बउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मवाबाह मपुणराविति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढे अ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ नगवन् जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुझ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंत
अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं पायवप्रहिए ॥ पावंति
॥ नत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता दे संथुन महायस
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥ ॥ नवे नवे

॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होन मम
नवनिव्वेन मग्गा, णुसारिश्रा इठ फलसिद्धी ॥ य
न ॥ गुरुजणपूआ परछकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोयवं॥ इस
आनव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥ ा गल

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन क
खमासमण दे कें इञ्चा० ॥ न० ॥ कुसुमिणडुसुमिण
च्चित्त विसोहणछं कानस्सग्ग करुं? गुरु कहे करेह पीछें
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित विसोहणछं करेमि का
स्सग्गं ॥ अन्नछ नससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव
कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन
कर कें कानस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर कान
स्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो कानस्सग्गमांहे ॥ सागर
वरगंन्नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पमिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीनपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान नट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां
दीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस
तरे चार खमासमणसें पमिक्कमणां ठावी गोमालीयें बैठ कें मस्त
क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहमे दे कर ॥ सवस्सविराइय

)

संदिस्सह इच्छं इस माफक

वि ॥

उप्रासिय दुब्बिंतिअ इच्छा

मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति

ऐसा पाठ कहे ॥

कें ॥ करेमि भंते सा

इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इ

जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिरकावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेना ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ पीछें तस्सउत्तरी० ॥ अन्नउ उससिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछैं अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्करवरदी० ॥ सुयस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुक्करवरदी ॥

॥ पुक्करवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवेअ ॥ भरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सब्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठ्ठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स भ गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु- वगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे,

दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं न मंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वांदणां निमित्तें मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वांदणां दें. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उन्ना हुआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उक्कडू बैठ के डाबे हाथमें मुहपत्ती ले कें डाबे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाड पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछें फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खडा होकें पीछें पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे, दिवसो

वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पमिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणडुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सवकालिआए, सव मिछोवयाराए, सवधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पमिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो, परकीयें परको वइक्कंतो, संवछरीयेंसंवछरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह नगवन् देवसियं आलोउं इछं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें नलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायाएं करी मिछामि डुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्त कथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सवस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठ कें जिमणा गोडा उंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इछं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इछामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछैं खमा हो कें अप्पुठि
उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव सिद्धे, धम्मायरिए अ सवसाहू अ ॥ इच्छामि
पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे
अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सवं ॥ ३ ॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं·
कमणे अणाभोगे ॥अभिउगे अ निउगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका
कंख विगिंछा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे,
पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा
॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव-
याणं, गुणवयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिरकाणं च चउण्हं, पडि-
क्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥
आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ए ॥ वह बंध छविच्छेए,
अइ भारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आया-
रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे,
मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ
मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे
विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे
अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरइउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अणुरागे ॥ चनत्र वयस्स इआरे, पमिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसन्नंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इन पमायप्पसं गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चनप्पयंमि, पमिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु नट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ वुम्हिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ नवन्नोग परिन्नोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पमिबद्धे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि नरकणया, पमिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाम्ही, नामी फोमी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मसल जंतग, तण कठ्ठ मंत मूल न्नेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पमिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वत्थासण आन्नरणे, पमिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण न्नोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव न्नोयणान्नोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चनत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविन्नागो, न कन तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिहि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिरिकउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ नरुव नारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंजरिआ पडिक्कमणाकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥४४॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, उवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एव मइं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥२७॥ इहां प्रन्नातके पडिक्कमणामें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वांदणां देकर अवग्रहमांहिथ्यकाज कहे ॥ इच्छा-का० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ अब्नुट्ठिउमि अप्रिंतर ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडाली बेठ के, बे वांइ पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अब्नुट्ठि ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह न्नगवन् अब्नुट्ठिउमि अप्रिंतर देव-सिअं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं न्नत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर न्नासाए उवरिन्नासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा बायरं वा ॥ तुम्ने जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि डुक्कडं कहे. पीछें बे वांदणां देई न्नूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आय-रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, न्नगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, न्नावउ धम्मो निहिअ निअ चित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वखारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंम्लले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवंति त्रिनुवनवलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं नक्तिनाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३१ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सद्दियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, नवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, डुरन्तनावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, नवावहं मोहनरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलनरलोन्नालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलनत्रिकारागार

विच्छित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३१ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला. ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनिवासे ॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे. पीछें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नबू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणें ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण जाणणां ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सव्वलोए अरिहंत चेईआणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखगाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछैं पुख्खरवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षट्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ साभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमो-ऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछैं नीचा वैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमा-समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखैं मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा॥ अढारसहस्स सीलंगधारा ॥ अख्कयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तित्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ नर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि के सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंमणं पुमसेोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिच्छरायं ॥ १ ॥ इम हीज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंमण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिच्छं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा मद्दोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढारे ब्यासी मास आषाढे, वदि आठम सोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पडि-लेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपडिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पडिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी, एम कही ॥ थापनाचार्य पडिलेह रखें, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-च्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उहि पडिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पडि-लेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछें पोषध-शाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपडिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही करते दि-खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीछें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तवो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊनो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ भयवं दसण्णनद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसण्णनद्दो ॥

॥ भयवं दसस भद्दो, सुदंसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो ॥ जं च न संभरामि अहं, मिछामि डुक्कमं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिछामि डुक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पमिलेहण करे, इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चख्काण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चख्काण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चखे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चख्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चख्काण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नाहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

न॰ ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इछं कही वली खमासमण देई ॥ इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इछं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिझाय करे ॥ पीछैं खमासमण देई ॥ इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु॰ संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इछं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ पांगरणुं पमिग्घाउं ? गुरु कहे पमिग्घाएह ॥ पीछैं इछं कही शुन्न ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इछा॰ ॥ सं॰ ॥ न॰ ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछैं इछं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-घियाण न्नुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंन्नणय पुरट्ठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जण न्नुंजहि रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण महजिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुम्न वम्नाठुठ सुकुठिण, चक्खुक्खीणखएणखुम्न

निरसल्लिअसूलिण ॥ तह जिणसरणरसायणेण लहु हुंति पुणन्नव, जय धन्नंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो न्नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ उत्थियसउ अणउ पउ निझ्झारइ दय करि, उरिअई हरउ सुपासदेव उरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंभेइ नीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पछिअ अउ अणउहिउन्नत्तिप्पर निप्पर, रोमंचं चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्कालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंभणयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवण्णुअवण्णु सुण्णु वन्निउ छप्पन्नहिं, मुक्कधम्मुकामउकाम नर नियनियसत्थहिं ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अमण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयण विसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणाय ॥ तईसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पईपासविविअसंतनित्तपत्तंतपविन्तिय, वाहपवाहपवूढरूढ उहदाहसुपुलइय ॥ मण्णूहिंमण्णसउण्ण पुन्नअप्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेहिणि ॥जायइफलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भुवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठु अविसंवुलचिठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥ १७ ॥ मह मणतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुसपवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठिउकिठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्फललल्लुअह्मेहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवछल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पंस पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं झखंतइय पासन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसु हावभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अस्रविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चंगउ ॥ २५ ॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुयमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविडुइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहुं जंपिउ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयासउ, जइअवगिणसि तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअउ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्खंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरठिअ, इय मुणिवरसिरि अभयदेव विम्नवइ

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछै जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्थ परमत्थजाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयछिय पासजिण ॥ भविय हभीम भवत्थु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुऊत्ति संज नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खडा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सवलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें भक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछें पुक्खरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, भाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिके बैठ कें नमोत्थूणं कहे, पीछें एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछें श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजी मिश्र इसी तरें कह कर गोडालीयें बैठ कें मस्तक नमावी सव्वस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पछें खडे हो कर करेमि भंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजूणा चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरें आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह. पीछैं मुह-पत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज उन्नो थको इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इछं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अति-चार आलोवे. पीछैं सवस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमीने इछा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछैं इछं तस्स मिछामि छुक्कमं कहि कें संमासा प्रमार्जि प्रमार्जित नूमियें आसन पर बैठ कें नगवन् ! सूत्र नणुं एसा कहे. तब गुरु कहे नणेह. पीछैं इछं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि नंते नणीनें इछामि पमिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुनें. पीछैं खमा हो कर अप्नुट्ठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खमा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्नुट्ठिउमि अप्निंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछैं इछं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछैं विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-ज्झाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि नंते सामाइयं इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछैं दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुरकरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स नगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू०

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछें खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चख्खाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पच्चख्काण, ठ आवश्यक साधतां कानो, मात्रा, उंछो अ धिको अक्षर ऊंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इच्छामो अणुसट्ठिं० ॥ कही बैठ. पछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं, कही संसारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोतयो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरंगं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकच कमलमुच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थूणं० कह कें एक श्रावक खमासमण दई कहेः—इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवनभणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बमो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ए ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अड्ढाइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥

देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीलटीतटिनीलटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फलापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, निस्थनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमाकी 'सिरि थंभणयट्ठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थ समुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस मइं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंन्नणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमा दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही च्यार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें डावो गोडो ऊंचो करि कें खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छय वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्खी, चउम्मासी अरु संवच्छरीके रोज तो बडी शांति सुणे, परंतु और

देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नथू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उहावणढं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नथू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमाकी 'सिरि थंभणयठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थ समुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंनणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बेठ कें मावो गोमो उंचो करि कें खमासमण देई कें, इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पमिमल्लूल्लूरण, डुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कमप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणा लिद्धउ ॥ नंनव जलहर तमिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयछउ वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्की, चउम्मासी अरु संवछरीके रोज तो बमी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो ज्ञगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्थाय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह ज्ञूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ ज्ञवतु नमस्ते ज्ञगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे ज्ञवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, ज्ञद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अज्ञय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ए ॥ ज्ञक्तानां जन्तूनां, शुज्ञावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगरणज्ञयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ ज्ञगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

उमेति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भित: स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिन्नय विनाशी, शांत्यादिकरश्च न्नक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति न्नावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१८॥ इति॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पमा होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउ-स्सग्ग करे, पछैं प्रगट लोगस्स कहो पूर्वलो परें सामायिक पारे, पीछैं एक स्तवन दादाजोको कहे ॥ इति देवसी पमिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्न्नसमगौरी ॥ कमले स्थिता न्नगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु न्नुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुन्निः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, न्नूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंमान्निधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, डुरिततिमिरज्ञानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्ञवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्ञवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनादिछितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञक्त्या ऋषज्ञं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अज्ञिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंमित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोमि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अज्ञिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-सुत सार ॥ श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिक्कंता ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-पत्ती, संवच्छरीये संवछरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इछं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो संवछरीमें संवछरो वइक्कंतो. एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-क्खिक ॥ चउमासिक सांवछरिक भणजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो, पछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें उठी ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछें मस्तकें अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३॥ कहो, गोमादोयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें पनरसह्नं दिवसाणं पनरसह्नं राईणं जं किंचि-अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे, चउमासें चउह्नं मासाणं अ-ठह्नं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवच्छरीयें डुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं पक्खाणं तिन्निसय-सठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिच्छामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवच्छरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ उ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछे इच्छं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवच्छरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-मांहि पढिउं गुणिउं नहो, अकाले पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान होन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्में काजो अण ऊधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोज्झा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार कोधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपवात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कोधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आट अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठो अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कोधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलमलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमितो २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिरकेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः--श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः--ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिच्छाः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे पोड्या, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चाप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल माने माप वहोर्‍यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी मोकली ॥ छट्ठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सच्चित पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे॰सच्चित्त तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंवली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पींपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आम्रणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लक्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-दप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवो माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतनें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणि-हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणो उजाहो लागो. कण कपासीया माटो मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल क्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, सादं करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी; पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणा संसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी; कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चख्काण पारवां वीसार्यां. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्छितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायच्छित तप लेखा शुद्ध पुहचाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही; वाचना पूछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अट्ठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि पक्खिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्थेण पडिक्कमह, चउमासे छट्ठेण पडिक्कमह. संवच्छरीयें अट्ठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अभिंतरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेऊं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिच्छामि दुक्कडं देई खमावे, पीछें बे वांदणां देई. भगवन्! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥३॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इच्छं कही करेमि भंते सामाइयं॥इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ ॥३॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नत्थू०॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांभले, अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन्! सूत्र भणुं? गुरु कहे, भणेह. एसो वचन मनमें धारी॥इच्छं कही, ऊभो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि भं ते० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, ऊभा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि भं ते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं संवच्छरियं सव्वं कहे. पीछें ऊठी, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही, करेमि भंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ उ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अप्भुठिओमि अभिंतर प-क्खियं ॥ ३ ॥ खामेउं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पं-क्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वं कह्यो. तिम कहे, पीछें इच्छाका० ॥ सं०॥उ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह, पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-बिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक उणजो. एम चउमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछें वे वांदणां देई, अप्भुठिओमि अ-भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछें वे वांदणा देई. आय रिय उवझाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि दैवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछें भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरि-तान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वं वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पच्चख्काइ. अन्नच्छणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहिच्छसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्काइ. अन्नच्छणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्चख्के. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चख्काइ ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चख्कामि, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छ०॥ सहसा०॥ पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइउ पच्चख्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चरकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चरकाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चरकाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० ॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारि० मह० सव० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चरकाण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पच्छका० दिसा० साहु० सव० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ. दुविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठाव० मह० सव० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस० सह० पच्छ० दिसामो० साहु० सव० आयंबिलं पच्चरकाइ. असच्छ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव० एकासणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठा० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. नग्गए सूरे चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असन्न० सह० पन्न० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अस० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं नख्खित्तविवेगेणं पमुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं नोगपरिन्नोगं पच्चख्खामि. अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे नग्गए अन्नत्तठं पच्चख्खामि. चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं नोगपरिन्नोगं पच्चख्खामि. अस० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चनविहार नपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे नग्गए अन्नत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ अवढं वा पच्चख्खाइ अस० सह० पन्न० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं नोगपरिन्नोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वो-सरामि ॥ इति तिविहार नपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ्ढ अवढ्ढ वा पच्चरकामि. नग्गए सूरे चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह० पन्न० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइन पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चख्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम दुविहार पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिमं पच्चख्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकानी होय ॥ इति नवचरिम पच्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अभिग्रह पच्चख्खाणकेनी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चख्खाण ॥

॥ अहणं नंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चख्खामि दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उड्ड वा अणउवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चख्खामि नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि उलेणं न उलिज्जामि अणेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चख्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चख्काण करे. तब देसावगासी नही पच्चखे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ठ आगार पच्चखे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाडेण वा

अलेवाडेण वा अछेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोच्चेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ-यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयत्ताठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ चउव्विहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घडी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं, सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सातू गहूं जबकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखडी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आंबा केला काकडी अखरोट खारक बिदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादंम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरडे बहेडा आंबला तुलछी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लौंग वायविडंग अजमा अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंभटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजड वावची बांवल-छाल धवछालि खेजडेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जड पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूडेकीछालि चंदन-कीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कयर बोरकीजड इत्यादिक अनाहार चीज इछा मुजब छो-डणा यह जो इछाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इछा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नथणाभोगेणं कहिये अना-भोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे डालदी होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवे तो पच्चख्खाणमें भंग नही. डर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पछन्नकालेणं कहने कालकी प्रछन्नता. आकाशमें गर्द ऊडती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहाडकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब भ्र-मसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरबकूं पच्छिम जाणकर पच्चख्काणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत भंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें उग्घाम्हा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चरकाणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥५॥ सव्व समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चरकाणका काल पूरा होणेसें पहली अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चरकाण भंग नही ६ महत्तरागारेणं कहतां पच्चरकाणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चरकाणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चरकाण कर भोजन करणे वेठाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करेतो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोम्हासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अब्भुट्ठाणेणं कहतां आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ वम्हा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करतां एकाशनादिकमें आसन छोम्ह खम्हा हो जावे तोभी व्रत भंग नही ॥१०॥ पारिट्ठावणियागारेणं कहतां सब पच्चरकाणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतभी आहार करे तो व्रत भंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां भोजन करणेका थाल प्रमुख भाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाभया हे उसकूं हाथ वगेरेसें पूछ डाला उस परभी किंचित् वें मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवें तो व्रत भंग नही ॥१२॥ उखित्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्चक्खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत भंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत भंग नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां भोजन पुरषे जिससेती एसी कुडछी आदि देकर भाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरडी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें भोजन पुरसे तोभी व्रत भंग नही १४ पडुच्चमुक्खिवएणं कहतां सर्व था लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चोपडणेमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नीवी पच्चक्खाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत भंग नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत भंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पच्चक्खाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्वज्जामि केवलिपन्नत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-
णाए पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए कूइए कक्कराइए छीए जंभाइए
आमोसेससर क्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-
रियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-
भोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिओ अइयारोकओ तस्समिच्छामि-
दुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिक्खायरिआए उग्घाडकवाड उ-
ग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहु-
डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे अणेसणाए पाणेस-
णाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए
पच्छाकम्मियाए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंसट्ठहडाए रयसंसट्ठ
हडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए जंउ-
ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-
रिट्ठविअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउक्कालं सिज्झायस्स
अकरणयाए उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-
णाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-
सिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे
असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं
पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं
पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए
पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणसल्लेणं मिच्छादं
सणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं
सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए
दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं क-
साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं
पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्ना

ए परिग्गहसन्नाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त-कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-म्हलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं म-यठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिरकुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा-णेहिं चउद्दसहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए ना-यज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी साए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवज्झायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० देवाणंआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणभूअजीवसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणारिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमाहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं इत्थट्ठियाजीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउमि आराहणाए विरउमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्छत्तं परिआणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं परिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्छ

पडिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मझं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिय गरहिय दुगं छयं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पक्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवट्ठिउतं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोंए कालत्तणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावत्तणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंती-पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-गदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग-रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-इपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खू-णीवा संजयविरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए अ-सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोख्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिउंमि सव्वाउ पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

ज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायावेज्जा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंत्तंवा अचित्तमंत्तंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इम्मस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
व्वियारस्स निव्विसोलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिसमणुन्ना
ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ
इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादा
णं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
अदिन्नं गिन्हाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चक्खाय पाव
कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
दुक्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि स-
व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
व्वए मेहुणाओवेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा मा-
णुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि । अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविन्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्ञावसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्ञा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुख्खखयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओमेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं,परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसखियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो- यणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्ख- णस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि- यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावि- त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण- गमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ- णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा- याए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभु- जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे- निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं- भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सवेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु- द्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिएपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठे भंते महव्वए उवठ्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठ्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहंअजाइत्ता अव-दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-क्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बोयंबयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विर-यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-णधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छठंवयमणुरक्खे विरयामो-राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियाविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-समिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहु-

णाउ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंच-मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारस-मिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा उ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहे-णपडिक्कंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तं एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-वज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वए-पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतो-गुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसग्गाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि-महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उव-संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥ पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिम-हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंप-न्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय-भासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छविहमब्भिंतरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामि-महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविभंगा परिव-ज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-सत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अट्ठमयट्ठाणाइं अट्ठयकम्माइंतेसिबंधिच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अट्ठयपवयणमाया दिट्ठाअट्ठविहनिट्ठिअट्ठेहिं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसारत्थायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपढिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंबरंतहयसंकिलेसंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिट्ठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरओ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंवसाओ साहणट्ठेपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणा राहणा गुणाणं संबरजोगो पसत्थज्झाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो एसखलुतित्थंकरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिओ तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहओ नमोत्थुते भगवओ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्चक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स अंतोचउमासीए अंतो
संवच्छरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं
तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता
रणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नप
ढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवी
रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरि
हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं
पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे
हिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं
कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं
जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद
थुअ तंदुलवेयालियं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार
कप्पो चरणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिए
यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्नि
ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प
न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो
पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं
अणुपालंतेणं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुच्छियं अणु
पेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहि
लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप
क्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपा
लियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प
डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठे
मो आहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं न
मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नीदसाउ आसीविसभावणाउ दिट्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयंमि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाउ सुदिट्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुख्खरकयाएकम्मरख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिव ज्जामो तस्समिछामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं डुवाल संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिछामिदुक्कडं ॥ सुय देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अष्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घमियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पमिलेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें आपनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, नूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीछें खमासमण देई, ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसह मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें उन्नो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इछं कही, खमासमण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

ठाएह, पीछें इछं कही खमासमण देई उन्नो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार ज्ञगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि ज्ञंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोसिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चख्काण प्रारंभः ॥

॥ करेमि ज्ञं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बंज्ञचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स ज्ञं ते पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊज्ञो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि ज्ञंते उच्चरी दोय खमासमणें बेसणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय खमासमणें सिद्याय संदिस्साउं? सिद्याय करुं? कही खमासमण देई ऊज्ञो थको, आठ नवकारनो सिद्याय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं? पांगरणुं पमिग्घाउं? कहे. ए सर्व सामायिकविधि पूर्वें कह्यो डे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष डे. पहिलां इरियावही पमिक्कमी डे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक ऊच्चरयां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमण-वेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही खमासमण देइ कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नमस्कार जणे, जो पडिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें, इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इछकार जगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके भीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछें इरिं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, भणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहुर दिन चढयां. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुक्खरवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बैठके नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे, पीछें जयवीयराय कही. नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चक्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चक्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

न्न० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्खाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ न्न० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चख्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चख्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंन्नवें अतिथिसंविन्नाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चख्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण बेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चख्खे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चख्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो बहिर्न्नूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडा सा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही बेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सानं ? अंग पडिलेहण करूं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, नद्धरी एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार जगवन् पसान करी पडिलेहणां पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सिझाय संदिस्सानं ? सिझाय करूं ? नक्त रीतें क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार नपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चरके ॥ नपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चरकाण करे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ नपधि थंडिला पडिलेहण संदिस्सानं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ नपधि थंडिलां पडिलेहुं? गुरु वचनें इछं कही, दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदिस्सानं बेसणो ठानं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. नपवासी तो बे तेमाटें सर्व पाठे कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, नपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें नच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहे, जो चनदश हुवे, तो पाखी चनमासी पडिक्कमणो करे, संवत्सरीयें

संवच्छरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " गणे कमणे चंकमणे " इ त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासम णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करुं? कही बेठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ञा कहेतो थको, भूमि प्रमार्जें थंडिल स्थानकें जई, देहशंका निवारें प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पो रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही, खमास मण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० राई संथारो ठावुं ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमा ईणं महामुणीणं; 'अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणे देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिज्झाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पडिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सीम सिज्झाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊधरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उभो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरयो है. पीछें संध्यानी पमिलेहण करतां रात्रि पोसहनो ज्ञाव थयो, तो पच्चरकाण कियां पीछें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंमक उच्चरे. तिहां ज्ञाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वें लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीछें दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उही थंमिलां पमिलेहण संदिस्साउं उही थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पमिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो ज्ञाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरचो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पमिलेही इरियावही पमिक्कमे. पीछें चउविहार पच्चरकाण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंमक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछें बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पमिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि ज्ञंते ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिज्झाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पीछें बे खमासमण देई, अंग

पडिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण देई, तेही थंडिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो सर्व उपगरण पडिलेह्यां हुवे, तो पण थानक शून्यता टालवा भणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सव्वस्स विराहिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुव्वार पोयं, कलंका वली पंकपक्खाल

तोयं ॥ मणोवंछियदो सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंनोजलीणा, कलारूव लावस सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी नारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतनृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेपुपंचत्वदम् ॥ दीपानं गुरुपंचमारतिमिरष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, नक्तानां नविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां नवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणनें तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चख्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनाजिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रलकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिंझंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनिथोंगिनि, किटति गिगुरु धांधुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकि णेणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेंकि झूझू, झणण रणरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महे जनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहें ठ ठ

ह्रिंक, गह्रिंपट्टा, ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों, त्रेंषि त्रेंषिनि, म्रेंम्रेंषि नि, वाद्यते ॥ ठें ठें कि ठें ठें, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुच्छवे ॥ ३॥ षुंदांकि षुंदां, षुषुद्रुदि षुंदां षुषुद्रुदि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें झणण झेंझें, झंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुद्ध समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ नायक सदगुरु, श्रीजिनभक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभणे, श्रीजिनलाभ सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पडिक्कमण संवछरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंडार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाज्ञ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर उखेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवछल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शीलधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाज्ञ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगत्ति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाष्य पैंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डडुं दिसें बालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू, उख हरें अंबा लुंब सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुल्कशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यज्जन्मागमनोभ्भव ब्रतवरज्ञानाकराप्तिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्री.जिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चमत्का.रि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर छे जिनहर वी.स । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग । थांनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी चवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण ज.न मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थंकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविभासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकयछप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदू आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्खलया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुढ्ढिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्हिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणत्रिणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग डुवालस अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, सूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदे वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी यो, वंछित नित सेवोजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ जवजहरी गहरी सब मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन जाषित सिद्धांत । स्याद्वादन वादिक हेतुयुक्ति नवि ज्रांत ॥ पापकरदमपाणी सद्गतिनी सहनाणी । सुणिये नित ज्नविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाज्ञ अपारी । जिनलाज्ञ पयंपे होज्यो जयकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाज्ञेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखेज्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्षवे ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यताभिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं बिसवावीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुप्पभा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधिशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्जं ॥ श्रेयांसं धमशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथु अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसो, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

जिण गणहर भाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुभ भावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो भवि प्राणी । सुय देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अक्षत गिणतीसे चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भावइ इम जगदीस । तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्र मास शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद महिमा भापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अडबत्तीस पण वीस सग वीस सार । सडसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल हे मोटो श्रीसुरदेवि सहाईजी । खरतर गछ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसाथैं हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्ट जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वछल करतां भ वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जक्ख जक्खणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुक्ख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहे मुख्य वखाण्या ऋषभादिक जिनचंदाजी ॥ भाव धरी ने जे भवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुक्ख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं भारीजी ॥ नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी । वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥२॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सडसठ इक्कावन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ख चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता जी । भली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गछ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद भुक्ताजी । जिन सौभाग्यसूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण भक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषभादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम भावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीऋषभना गणधर पूंडरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सब आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । भाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवरू पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंद उदार ॥ देवचंद्रगणि भाखे भविजनने आधार । सब तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत उपद्रव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे भवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सब सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । बारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरुष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे भवफंद वंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी भाखीजी । द्रव्य भाव बिहुं भेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत् आरंभे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि आरंभकारी भग वइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीझे जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गच्छपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांतिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो नावे नविथण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषनलंछन सुखदायाजी । विजय नली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरनर नासन अनिनव सूर समाणीजी ॥ नवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो नविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिनुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक नाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो नविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक नव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर नविथण उपर सुथिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित नाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत । पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुक्ख अमंद । श्री जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान । इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

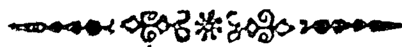
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह । सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार । जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो उपवास । मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो बोल्यो लाभ अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । दुखदो

रोग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिमर संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजांण ॥ इण पर ठाम२ तुम देखो चउदसॅ पख्खी होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन हरेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगच्छ मंडण कुमति विहंडण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पख्खी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल भावे, तेहं विउलतवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिठ सप्भावे॥ २॥ गाहा॥ सव्व दुक्खप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं॥ ३॥ सिलोगो॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं॥ ४॥ मागहिआ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमं सणयं॥ ५॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विम ग्गह सुक्खकारणं॥ अजिअं संतिं च भावउ, अभयकरे सरणं पव जहा॥ ६॥ मागहिआ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवई, पयय पणिवइअं॥ अजिअ म हमविअ, सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिवि ज,महिअं सयय मुवणमे॥ ७॥ संगययं॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं॥ संति अरं पणमामि दमुत्तम तिढयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ॥ ८॥ सोवाणयं॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय प सत्त विच्छिन्न संथिअं थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहम णाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं॥ ए॥ वेढउ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवो हरिउं॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे भयवं॥ १०॥ रासालुद्ध उ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कव ट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयन पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, नत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ नासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउरकशन्निराम सद्द मी सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव नाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायन ॥ तन चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सच्छिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा, अदोस दुठागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गई गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाडवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स नणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उनउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किर्त्तिं सुविछ्ररूं भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनक्क निग्गयपहा दंरूच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव पयरूं निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासभत्ति भरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिछिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरूइ लहु दुठ्ठ निठ्ठदोघट्टथट्टं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ्ठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भू रिदिव्वंगहारं, फुरूगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज हंसणछे अभीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभा रंभनिव्वाणलछी, घणथणघुसि णिक्कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसद णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसण्णं तावमिछत्तछण्णं ॥ फुरइ फुरूप

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयत्त पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरछरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ जासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराजिराम सद्द मीसएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराजिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव जाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायत्त ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, ऊयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सच्छिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा, अदोस दुठागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गई गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमजिनंदिं ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवछरिए अवस्स जणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उजउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किर्त्तिं सुविच्छर्म्मां भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनक्क निग्गयपहा दंडच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव पयर्म्म निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविड्ड इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समच्छो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासभत्ति प्परेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामच्छउसिं, फलइइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुठ निठदोघट्टथट्ठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ पायारविंदे, सयय मजिअ संती ते जि णिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भू रिदिव्वंगहारं, फुरुगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणच्छे अभीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभा रंभनिव्वाणलच्छी, घणथणघुसि णिक्कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वच्छणिच्चं अणिच्चं, सदसद णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसण्णं तावमिच्छत्तछण्णं ॥ फुरइ फुरुप

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयउ पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥ जासुरयं ॥ वंस सद् तंति ताल मेलिए तिउरकखराजिराम सद् मी सए कए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराजिराम सद् मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव जाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायउ॥ छत्त चामर पमागजूअ जव मंमिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सच्छिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा, अदोस डुठागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गई गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमजिनंदिं ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स जणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उजउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किर्त्तिं सुविच्छमं भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनक्क निग्गयपहा दंडच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव पयडं निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविदु इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासभत्ति भरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं, फलइइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुठ निठदोघट्टथट्ठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्घिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भू रिदिव्वंगहारं, फुडघणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणच्छे अभीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभा रंभनिव्वाणलच्छी, घणथणघुसि णिक्कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसद णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसन्नं तावमिच्छत्तछन्नं ॥ फुरइ फुडप

न्न करि कल, ह मुक्क सिक्कार पञ्जरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा न्नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्क पीमासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिक्ं, जमिह तिक्काहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसक्क सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिक्, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म वीआ, वीआपरमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुक्काणि तिक् स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तिक्ं, निहय कुतिक्ं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पमिणीय कए, वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाणसाहणिज्जिअ, साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तिक्प्पन्नावगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिक्स्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्चउमो सुअधम्मो, समग्ग न्नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ भवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिउस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपडिवस्कजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि बंभ संति सहिआ, कय नयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिंबा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुस्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अहुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहभावा संतावं, तिउस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव्व हासेवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिउस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धमग्ग, विहिअ भवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासस्कि, त्तवालया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कंटएहिं, सविठिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु दुरिआइं तिउस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिउस्स भ गवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स जविसालयं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं सव्व भय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय नि

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा, सलामि पयपनम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुरक जरका, पम्हिय पम्मिवरक परक लरका ते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पम्मिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासचउर, पुरठिउ वद्धमाण जिण नचो ॥ सिरि बंन संति जरको, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निब्बुइ पुर पहियाणं, नवाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरि उच्छिस कंधरा धणियं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिब्वइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो नयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा नयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, नयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमाण तिब्वस्स वुद्धिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्तगणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेन्नवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दु
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्ष
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्त्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्र, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन
भूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति
भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंमलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्, नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावित
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि त
त्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनें
द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रह
तांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योत
न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
रावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता
नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भू
पतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
रतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद
पंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणन
क्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया
नपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभी
षणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः
॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृ
ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विग
तबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवताम र्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्प्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमं रूले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋ द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य र्चितांह्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु,श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु, श्रीराज संनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते वि

भवन्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥ ३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षेत्, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैरृतिं च त्रिकालवित् ॥ ए ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

धांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्द्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतव मणभिंतरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघव, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघव ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धव ए नवकार, सयल काज महियल सरे डुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, ञोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अवदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अरिहंतदेव पनमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चन गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर ञेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विडुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ राती धोती पहर जपे सिद्धहिं पुव्व दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसैंवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर सहू जगधंद, मणमूली नबध करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पंखरी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित नवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज्न ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न नवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिजे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखमीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु नत्तर विभाग सामला वरुठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणै, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोक्कारो पद दिसिअ गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद्द जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरणिंद हुन पायालह सामी, समलीकुमर उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥ संबल कंवल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ए ॥ छींके बेठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्थों कंटही उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धाड संकट टले राजा वसि होवे, तिछंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण ज्ञूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुष्ठ जलोदर रोग सबे नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छनमच्छ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिछराज महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिछंकर गणहर पणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुड नवकार ॥ १२ ॥ अड संपय नव पय सहित इगसठ लहु अख्कर, गुरु अख्कर सत्तैव इह जाणो परमख्कर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि ज्ञणे सिव सुख्कह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु उख्क निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक्क चित्त, पंच

परमेष्ठि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शसति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥१॥ पणवीसाय असिआ । पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरियं । नवियाणं नत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रक्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥३॥ सत्तरि पण तीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चौरारि महानयं हरउ ॥४॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंस । हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गप्नं । चक्कं किर सवउ नदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्रसंखला तहय वज्ज अंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाकालि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्जा देवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मनूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो । वसोहिअं हरउ डुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तिछयर गयमोहा । जाए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्दुम । मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सव्वामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि डुठ देवा । ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फल हेलिहिऊणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गथ । साइणि नूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पडि

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये नर नावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यनेदि, नीतानयप्रदमनिंदितमंह्रि पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमन्निनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न विनुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या हमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश नवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुनवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं नवति तेषु ममावकाशः ॥ जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति नवतो नवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विनो शिथि लीनवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो नुजंगम मया इव मध्यनाग, मन्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपला यमानैः ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं नविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म रुतः स किलानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हृतप्रभाव वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामि न्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा पिलोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म नीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विभो हरिहरा दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिभिरीश सितोपि शंखो, नो गृ ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभा वा, दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १ए ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमधएव हि

बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गम्भीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गम्भीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तछदच्छविरशोकतरुबभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमादवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हताह

राशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदुर्जित घनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त मथ डुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन डुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवडुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधवडुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ डुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, डुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंह्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि

मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥४३॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विग लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा लासमं नाद, बिंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, म नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो न मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः॥४॥ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐनमः तत्वदृष्टिभ्यः। चा रित्रेभ्यो नमोनमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुभं ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्यं पदं शिखां रक्षे, त्परं रक्षेतु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घंटिकां ॥ नाभ्यंतं सप्त मं रक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफोद्यब्धि पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्याकान्, श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुः ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः। जंबुवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-मंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि बिंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-वर्णांतः, सरेफो बिंदुमंडितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्यां जिनो-त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुनीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-संलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-स्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेष, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मामांहिनस्तडाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य० मामांहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-तुसिंहका: ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुविलब्धयः ॥ ताभिरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-वेताला:, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रभा-वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीँ श्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंडी सरस्वती, जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-वाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जग-त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंडलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ, जगत्-त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्र-ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

भुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रे तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे तन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लभते पदमु- त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंडल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव ना मानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः॥ निर्भयो निरहं कारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । नि र्भयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्र भुः ॥ ४ ॥ निर्वाद्यो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-तुसिंहका: ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुविलब्धयः ॥ ताभिरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रभा-वंतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीं श्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंडी सरस्वती, जयांबाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जग-त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ, जगत्-त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्र-ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

भुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रे तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे तन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लभते पदमु- त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंडल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्षे तस्यैव ना मानि। मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः॥ निर्भयो निरहं कारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । नि र्भयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्र भुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क

प्रतिमश्लेष्ठ, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः॥६॥ निःशद्बो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुन्नं प्राप्तः । कर्मयोतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अचिंतः अ क्षयो विन्नुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो न्नवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः, वोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवार्जितः ॥ १० ॥ अजेयसर्वतो न्नद्रः । निष्कषायो न्नवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥ वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावाधो वरः शंन्नुः । विश्ववेदी पितामहः ॥ सर्वन्नूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं दरूपचैतन्यो । न्नगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥ गौरवादित्रयाद्दूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अन्नयः प्राप्तकैव ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स र्वेशः सतसुखावासः। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोन्नगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य कारकः ॥१९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो न्नुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लन्नः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच रः ॥ २१ ॥ सदाशिवो चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः ॥
सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥
स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद ।
चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा
देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः । म
हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
त्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा
पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंनो ।
महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तजसं बोध । एकानेकवि
निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो
महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ
द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्यु
तः ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा
परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआ
त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना
कृतिं नाकरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
जसंबोधः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्म्मजित्
धर्म्मनायकः ॥३४॥ बोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
महातीतः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश
नायकः ॥ ३६ ॥ वरेरायो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥
जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं
वंद्यः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरार्चितः ॥ नि

प्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुनः॥ ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभ द्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं । नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोच्चावच वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुस्तव इवेष्टार्थप्रतिभूपदोपास्ते पार्श्वासन यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांत्रामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु ना । सुनामन्नोदुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोभानो भु वनभवने नो वृषभरं । व्यधांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । र्जगत्त्रय्यारामेमरकुरुहवामे यजिनपाः ॥ हतोग्राक्रग्रामे शितरसमकामेषुविजयी । त्वमकाली न्नामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे भुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ श्रुतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्र्वारे भवदहनवारे कुरुकृपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान हिमिथुनमाराध्ययविभो ॥ ज्वलद्भस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारायतुजिनमहाराजसभवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥ तनालाम्भोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु तिकृते ॥ ७ ॥ कजन्मार्द्धकायंकिरवगणहंकीर्त्तिधवलं, कुवेरेज्यं

कुहाव्रततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं दधानंकंकह्रोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं नवकुशकदात्रंसुहृदये रहोरात्रंब्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रनो पवित्रं सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्म्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंदृगुदकनवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्द्यक्तिविकला न वारण्येटन्तकथमपिनवंत्वंनददृसुः ॥ १० ॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर प्रावृतदृशां गतिर्म्मोहक्काणादरहरनवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य निमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवनजन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां नवास्ताघोदत्व त्तलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर णः शरण्योसिश्रेयान्प्रभुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा धरितकनकाहार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिनटगनोरत्ववि दितः दितःप्रत्यूहालिः शुनमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः कुमतिबसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविश्वद्बोधंपरमपुरुषः सिद्धिन गरीं गरीयः साम्राज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्त्तुंकर्म्माष्टकरि पुबलंघ्नञ्जयमहा माहतीर्थेशश्रीनरमतुलमाप्तः प्रभुमहाः ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योदुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलन त्रिनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं मेवरसरसिकादम्बइवसन् वसञ्जी यात्पार्श्वप्रभुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीनोलोकोत्तरपद मुपेतःसकलवि । द्बवित्रंदोषालोयवसलवनेप्रातविनवः नवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ नवन्तंसद्योग प्रथि तपदवीचारिनिवहा अजस्रंविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने यन्तिप्रसृमरसितोस्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोपान्तकलरुप्रकाशोधतमसं हरल्लोकेकुर्व
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनो ज
गच्चक्षुः पार्श्वोदिशतुकुशलंमेसमयभृः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस
मतनुमतांयन्नमृतगुःकलाभिःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
षैनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताच्छ्रमापुत्रः सपदिविपदस्तार
कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति मेहीजन्मातद्वा
त्ययप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतंराजतनयो ह
यातीतोलोकेतनुभवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ धरादित्थेशानः शु
भ्रनरुचिभ्रागौरकरणः सदापायाद्वैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः
स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोभानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽन्येभ्यस्त्रिदसविसरेभ्योवरतया सि
लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलभृः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
न्माधिवसना च्चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यश्रीयोगात्कमलनिलयेसो
सिभगवन् ननाकश्चिच्चिश्वातिशयभरवित्तस्त्रिभुवने भवाद्दक्षोगीतः
परमपुरुषोतोहरिर्द्वयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि
पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः सकल
जगदर्थौघकलना भगलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥
अवासःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता दितेयाग्रक्षोणीरुहमहि
मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसङ्गःकृतकुमतभङ्गःसुमनसां हिताया
शेषाणांसुकृतपदवींत्वंकथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राद्धोरात्रंबहुविपदम
त्रंधृतमरं कलत्रंयेनात्रकसहरिहरादिःसुरगणः सकर्णानाकर्णामित
चरितताधूर्त्तनिवह प्रतारीसद्दोषः मित्तसततरोषःस्थितिहतः॥ २६॥
समयामग्रामप्रभवभयदो बोधरहितः सरुग्भव्यहेः परुदुरितकृतमा
नकलितः पुरामोहान्नुतश्चिरमिहमदाद्दीनमहि ः म ः गोथाद्यत्वंकथ

मपिसमासादिमयकाः॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवामेतैरज्ञिमतविधानेलसत्तरै रपास्योपास्यस्तंखलुजिनवरेण्येनवरतम् मनोलिम्मैत्वत्यद्धनजयुगले सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८॥ अदभ्रंद म्रांसिन् इविणान्नरमडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानाक्रमयुगं पुनर्न्निर्लोभानांधुरिसमतिमद्भि स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल क्ष्मांणदधत कुतस्तैर्नैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं प्राज्यंराज्यंविदितविभवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्दा रिद्र्याग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्ध्याध्यायन्तस्तवचरणयु ग्मं सुह्रादया नतर्षे स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि ल तवत्रातर्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् भवेवेशस्तोर्थोपिचनिरू पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना मनाक्यस्येद्धक्तोयदिभदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुरु तेतंस्वपसमं समाङ्कल्यंवाथप्रभवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र लापायाबुद्धास्तवगुणगणाभ्रान्तिविशदा स्त्रिलोकीभूजानेसुरपयमणे भानवइव रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टेसख्या तुमदरपरार्ध्यैतुसरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे नमस्तुभ्यंभीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी कृतसुधा समुद्रायामुष्श्युदवासिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद् महिमालयायसुमनः सन्दोहशुश्रूषितां ह्रिद्वन्द्वायकलिच्छिदेभगवते भव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्राययविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा भरनिर्जिततारकराजगणः कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द ॥ भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये हम् विततरवितबोधंयेनपश्यामिलोका त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसन्नृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भ्रवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्ष्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन परे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीउ मु णिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम लगिरिमहं तिछमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर ठांम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अभय देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वंस, फण पल्लव मं मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥ आराहउ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंमरीकनी भांण ॥ प्रभु द्यो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सुजगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । मंमण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामार्द्धे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शस्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशब्दघनोघा । प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासितचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसां, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवड़ा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समोसर्या, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं मेहदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न बावड़े, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ [illegible] ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाल [illegible] चैत्य झाड़ा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभु [illegible]र गांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग [illegible] विबुध ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं [illegible]त गलंतड़ी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोड़ियो, लाखां ऊपर कोड़॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलकी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलकी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंकन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धांम, जिन भाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अभिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥ ३ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोम, पण प्रभु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा डूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आंखमली उलझो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवमा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वडा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समोसरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न वावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ [illegible] ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके ला[illegible] चैत्य झाझा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभु [illegible]र गांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग [illegible] ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं [illegible]त गलंतझी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोड़ियो, लाखां ऊपर कोड़॥ अरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलमी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन नई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत नदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण नूप ॥ आचारज नवझाय साधु समतारस धाम, जिन नाखित सिद्धांत सुद्ध अनुनव अनिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परनव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संनारो ॥ ३ ॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय नली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर नाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रनु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे नत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रनु सुजस तुम्हीणो सांनल कान, मिलवाने नलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ नगति जुगति करवानी ठे मुऊ सघली जोम, पण प्रनु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा मूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रनुजी एटली दूर ॥ आंखमली नलको करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

ऊली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटऊली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाऊे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रज्जुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण ज्जरतना वाली ज्जविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियऊे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आतमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रज्जु करजो मोपरि महिर अठेह ॥ दूसम काल तणो ङुःख टालो दीन दयाल, पालो बिरुद संज्जालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण म्होटानी महिर ठतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रज्जु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म ठमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज्ज ठदयजिन चंङ लहे नित प्रेम अज्जंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्म ज्जगते ज्जणुं ॥ ज्जेटवा पायकमल ज्जाव हियऊे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मशुं कूऊ अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अठे तिस्यो कर जोऊि करि ज्जाखियें ॥ अति सबल मुऊ हिये मोह माया घणी, एक मन ज्जगति किम करूं त्रिज्जवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगऊे, रीश चटको चढे

लोभ्न वयरी नम्हे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयम्हे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियम्हे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रन्नु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नाहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवम्ह नाहिं अवर वीं ल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांन्नलुं, बारवर परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय न्नलगुं, किम करुं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ न्नोलिम्हा न्नगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रन्नु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकम्हा जेम हियम्ह वसे ॥ ए ॥ न्नल न्नलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय न्नेटवा अति छणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आन्न कागल करुं, क्षीरसागर तणां दूध खम्हिया न्नरुं ॥ तुह्म मि लवा तणा सामि संदेशम्हा, इंद पण लखिय न शके अछे एवम्हा ॥ १२ ॥ आपणे रंग न्नरि वात सुख जेटली, उपजे सामि न कहाय सुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाम्ह ने कोम्ह प्रन्नु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भम शे रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रभु पालशुं, दुःख भं डार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवडी मारी भगति जाणी करी, आपजो बापजी लार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम ऋद्धि वृद्धि, समृद्धि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ भवभाय वर श्री, भक्ति लाभें, थुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोडि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सदह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोड बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें भर्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ भगवंत भांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुभदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी भावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पांचमि स्तवन सुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव भवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे चारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्गरली ॥ भण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

भजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीय कमली पांच झिलमिल अति जली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पम्पाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करें पांचम उजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरू अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाम्यें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाम्यें ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक में नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंमित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुणयो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज्ज समय सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥ मति अगावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ब असंख्य प्रकार रे ॥ दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि जविय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥ जव उःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिमे नाहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रजु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही गम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन म्हारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खडू खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अळवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी छांडिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी जुडी, मागशिर शुदि इग्यारश वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें धर्मी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावमी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पमी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकमी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखमी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो थाहमी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपै सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांत जपीने कीजै कांमा, सोइ कांम हुवै अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावै, ऋद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछै सोही पूरै, दालिद दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट२ के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावै, कहितां मो मन अचरज थावै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचै, राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, भिक्षा हारी नांम कहीजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक है सम भायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ए ॥ सायर जैसा होय गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहै प्रभु एकण गांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तैं जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये त्रिगडो सेवीजै ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणै सिर छत्र धरावै, नांम जती पिण चमर ढुलावै ॥ अभय दांन दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म सवीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापै, लच्छ घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज पगठावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकतणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक छै वडवीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वडभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १ए ॥ जामण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्री गुणसागरके मन भायै ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पडे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल नखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमडियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै, नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै छाणा डमै हुंढणियां ॥ सूकवै कप्पड पप्पड वडियां, नासीय छिपै नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या वैतालीस लहै ॥ हथियार घडे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रांधै ॥ ८ ॥ भांजो निस्सही जिनगृह पेसे, धरै छत्र ने मंडपमें वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर वींजै मन ठांम नहीं ॥९॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, भूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसाडै उत्तरासंग न करे ॥१०॥

जांण, लाख तीस पूरब परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब बीस, दस लख पूरब चंदप्रजु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय, इक लख पूरब शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित जणी, वरस सहस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऋषजतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शांतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल बयाल हजार, षमधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोमि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नणासु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्रप्रभू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुंथुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वल्लल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम भरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, छठो कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र भरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ सभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्ठ जांण, द्विपृष्ठ दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जाणिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगडो, पुरुषसिंह परमांणिये ए ॥ ए ॥ छठो पुरुष पुंडरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच छठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नेर, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें भद्र, सुप्रभु सुदर्शन, आनंद नंदन शुभ मती ए ॥ रामचंद्र बलभद्र, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलोय बलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखै छता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय बारे टळ्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिळ्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी थई साठ लेखे इसै ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुणया तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन उलट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरब निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचनमासे रह्या, श्रिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांमे शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुंमरगिरि तिण कारणें, जगति करो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस२ परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलें, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मूंगरे, मुनिवर कोमा-कोमि ॥ पाज चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ए ॥ जे वाघण प्रतिबूझवी, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवम मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील बिलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीमा जात्रा निनाणूं करिये रे॥१॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरब निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या०॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोमिसुं पूंमरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमी

॥ या० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पाम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संब प्रद्युम्न कहाय ॥ या० ॥ ए ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाष्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ गजाल गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहु दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद्र सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे॥ जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण लोभा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥मु०॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥ ज०॥तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ज०॥३॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेष धरथा डुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंडीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंमक मांहि ज्ञमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ ज्ञव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुऊ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुऊने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुऊ नाटक देखी रीऊया, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीऊया तो मुऊ ज्ञाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम ज्ञलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुऊ सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुऊ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे॥ ज० ए ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारै गुणातालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन ज्ञेटया, वीकानेर मऊारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुषज्ञदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोमी हो कहुं मननी वात ॥बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिज्ञुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं ज्ञम्यो, ज्ञव मांहे हो स्वामी समुइ मऊार ॥ डुक्ख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रज्ञू, डुख ज्ञंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुऊने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारे हो नहीं ढीलनो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्र साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काछली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आर्द्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखडी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो साम्भो आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यांन

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री महा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागै, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिरतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंडक हुं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नैं तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नैं वैमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए बोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखै नर तिरि, निश्चै देव ज थाय जी ॥ निज आउखै सम के ओछै, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०॥
॥ ८ ॥ आउ संख्यातै जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर
पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९॥ पर्याप्ता
इण पांचे ठांमे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण
आगै, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी
मांझी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,
मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव भमै संसार॥दोय गति
नें दोय आगत जांणिये, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-
ख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-
ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३॥ प्रथम नरक लग
जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी
लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४॥ पंचमी नरकै सोमा सा
पणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊप
जै गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै,
तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती
जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरया, जे
फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्ट भांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही को
य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि
बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥
॥१८॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, छठि देसविरत्त ॥ सातमी
नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्यातै नर सहु दंडके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥२०॥ तेह वाऊ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आवी थाये मानवी रे, सुख दुख कर्म सहीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखी आउखे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरनें मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत नाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव भमें इण पर भव मांहि करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्यातै आऊखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आउ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहै सरबविरति पिण मुगति न पावे, तेउ वाउथी आयो तेहनें समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवै दसे ठांमे, थावर विकल तिरी नरमांहै उतपत पामै ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ बे जावै, विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अने चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवै छूटकबार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर गुणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥३४॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं॥

॥ अथ इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिच्छामिडुक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंदी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते करिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्ज-त्तग वखाण्या, विगल तिय छह ज्ञाल ए ॥ जल थल खचर ज्ञुयंग डुइ, पण इंडिय तिरि अम्याल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद ज्ञेदे करी जाणो, पज्जत्तय अ-पजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंत्रिय दस रे नव लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥उल्लालो॥ वखाणियै दस विध ज्ञुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ वारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव ज्ञण्या ॥ पज्जत्त अपजत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिण्यां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचज्ञरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर ज्ञूमिका ए॥ खेत्र ए पनरह करम ज्ञूमि जाणीयै असि कसि मसिहिं आजीविकाए॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए॥मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम ज्ञूमीकहीए॥ ४ ॥ हिम-गिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासें दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसैं ज्ञेद डुइ आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम ज्ञेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठविध जीवसहू छे एह अज्ञिहय आदिक दस गुणित करीजे तेह ॥ पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ डुइ सहस इग्यारह डुइ-सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितज्ञर आण ॥मन-

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए च्यारे असमत्थ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरे ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिन पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि करयां विना ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पड़ै कोलियो ए, मुखमां क्रेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै२ सरवर भरै ए, कां करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोड़ै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय रसै जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचे समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगे

कवल तणी पर, जे बूझै ते रीझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वडाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावै, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तब, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमांन जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ थंबणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदै गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिगणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोञ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणों, संस यी नाम मिथ्यात चोथो जणों ॥ ६ ॥ समजे नहीं काय निज धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ नंत अञव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुञव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंम जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम ढठे ठाण चढने पमे, किणहि कषाय वस आय पहलै अमै ॥ ७ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थित इसी सांजली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकिती, कैतो सादि मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा बेऊ वती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै नहीं, आउ बंधनपमै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकित लहै, मति सरखी गति परजवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आस्ता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥ सहु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ, तातें तिहां थकी, तीजे चोथे जव तिरै ए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटै चोकडी प्रत्याख्यान ॥ जेण तजैवा वीस अजक्ष, पांम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुवकोड, पंचम गुणठाणे थित जोड ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव- स्यक सार ॥ उदयत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१ ॥ रूंधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सत्तम गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अठम गुणगणातणें, आरंजे दोय श्रेण संख्येपै

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै, अष्टम नांम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल ध्यांननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अभिग ध्याने धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणें, उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करै किणही परै, तो थायै अहमिंद अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडै ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी वारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेडो आयो केवलज्ञांन ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरैं श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ठानी परगट वात, महिमावंत अढारे दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूंध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर उचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाभै पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहि मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहड़ मेरु मंडण, सुमति जिण सुपसाउलै ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेद आगमनें भलै ॥ संवत सतरैसै छत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदे गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा भाखा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संबर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी बलि बायाल, सत्तावन बारै चौ नव क्रम भेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छव्विह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदे गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदें होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित्त वीरज तप तिम उपयोग, ए षट लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन षट् ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगिंदी पंच पजत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षट् पजत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ एगिंदी विगलें जाण॥ असन्नि सन्नि पंचेंद्री नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना तिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विभेद॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव॥६॥चलण सहाई धम्में थिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल॥७॥षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आ तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दुगु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तिछंकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पजत्त प त्तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसैं त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मित्थ थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एकेंद्री वि ति चौरिंद्री तेय, कूखगई उपघा अपसत्थ वन्न चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढ म संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप त तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरे गेय, असुभ दुभग दूसरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय तिम जोग बायालीस सेव पच्चीस किया संजो

ण ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं भकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वती तेम,, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि य ने सत्थि सहत्थे जेह, आज्ञापनकी वेयारण अणन्नोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पच्चयना नवन्नगी समुदाय, प्रेम देष इरियाव ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म न्नाव ण चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ रिया न्नाषा एषणा सुमतीना न्नेद होय, आदान न्नंम उच्चार नि रकेवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जांण, हि व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ न्नूख पिपासा सीत उसन मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिज्जा सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलान्न रोग त्रिण फास, मल सक्कार य न्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं सौच आकिंचन बंन्नचेरज इ धम्म ॥ प्रथम अ नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निर्ज्जर न्न वि न्नावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुन्नाव बोध डुरलन्न इग्यारम गाम, धरम साधक अरिहंत ए बारे न्नावना न्नाव ॥ सापायक छेदोप स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चनत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहरकाय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु विधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारें बिध निर्ज्जर तत्व बंध ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुन्नाग प्रदेस न्नेदें निरधार ॥२०॥ अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सल्लीनता बाहिर तप षट् न्नाग ॥ पायछित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान काउसग अन्यंतर तप षट् विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु न्नाव काल अवधारण थित निरबंच, अनुन्नागे रस तेम प्रदेसे द्रल

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगड चित्र कर कुंभकार भंडारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना भाष्या जे जे भाव, तिम ज्ञानावरणादिक अम्हना एह सभाव ॥ इम संखेप विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं इव मोक्ष तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण द्रव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो छठो अंतर जाण ॥ भाग सातमो भाव आठ तिम अल्प बहुत्त ॥ ए नव भेदें भावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी छै जे पदेअविनाभाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अभाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सन्नी असन्नी येसन्नि, अणाहारी आहारी अणाहारी रूपभ्र द्रव्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ द्रव्य होय अनंत, लोग असंखम भाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां भावै नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी भाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक भाव, जीवत जेहनें वलि परणामक भाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी भाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहनें मन संमत निच्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इम पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त भेद पम्भिभेदै विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुभ्न सदन प्रकास नदो अपमांन,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वडसाखानी पडिसाख ॥ ग्यानसार ते पडिसाखानी सूखम डाल, ए नव पद नव रयणे विनाणे गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवच्छर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गते ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भ्रज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रुषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणे थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गभ्रधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनायें ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहणा संघयणेंतणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संखेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गभ्रय तिरि वाउ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंडक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

बाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि आय ॥ २० ॥ थीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१ ॥ बेइंदी तेइंदी पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता भिनैं सिद्ध अनंते रूप अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ

तेन वणस्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी बन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ ओफल तूरी ऊस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विछेद ॥ भूमि आकास ऊस हिम करग आकना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा फाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उब्भामगउक्कलिका मंफल वलि मुख वात, सुद्ध गूंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण बलि जंबाल, भूंफोमा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ काटी फाल भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजे जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुत्तैं आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहाकम पौरादिक बेंइंदी होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक ईली घीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कृम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंदी एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इंदी च्यार, तीडा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला मांकडिय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंदी च्यार बिछेद॥

धम्मा वंसा सेला अंजन रिठा कात, मघा माघवई नारग ए नामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नजचारी तिरयंच, मछ कछ सुसआर मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय नरपरि ज्नुजपरि साप ज्नुचारी तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथो बाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरवे जल थल खचर समुच्छम गब्भय दोय, कम्म अकम्म ज्नूमि अंतर दीवा मणु जोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ, जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु नें दिठ ॥ पनरे ज्नेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आनखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण ॥ अंगुल ज्नाग असंख संहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय ॥ १५ ॥ बि ति चउरेंडी अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण ज्नास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमांण, तेहथी अरध२ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस गब्भधर मछ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त ज्नूचारी पंखी जेह खेचर नव धणु उरग ज्नुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुछम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाउ ऊंचास चउप्पय गब्भय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमांण ॥ ज्नुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंदै पग ब्रह्म लांतक पांच, शुक्र सहस्सारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्चुत हाथै तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुत्तर इग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्से आय ज्नू आऊ वाऊ वणाती दिन तेऊकाय ॥ बार वरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिय मनुजनौं तीन पल्योपम थाय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कासे पुव्वकोरि, पंखीने इग भाग असंख्य पल्यनो जोम ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसे अंतमुहुत्त थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उस.प्पणी सहु एगिंडी आपणी काय, उपजे चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवछर विगल आपणी देह, सात आठ भव पंचेडी तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिंडीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जे.व प्रयोग जिय मरणें होय ॥ भोम सायर संसार अपार अनंती व.र, भमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार॥२५॥सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रें साख ॥ भू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत भंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धातै सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी भाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्री जिनलाभ सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करे तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहूं अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंदै मिल्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस दु दस वेमाणिय जुड्या जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजै जी, भूमि योजन सम भाग ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण उरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमांण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो भलो जी, करय ते सुणाउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी, सवा-तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम नहिय चढतां थकां जी, एक कर ऊंच विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, ऊंच

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ उसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें झाकझमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंदुभि नाद उपदिसे जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू ॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी, भगवंत उपदिसै बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणैं करी, गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊभी सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मछर छोड ए, भूख त्रिस विसरै सुणै कर जोड ए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज ऊंच आकास ए, झलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु धरिय पहिले गढै, होय पगचार नर नार ऊंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्टंग अर्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठाम ए ॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह धधन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सरदहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसायर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजारी कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुझ ऊपर महिर धरीजै, दिल रंजन दरसन दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भवरना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसे मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ॥ ४ ॥ समरचा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुझ

आतम पुन्य भरावै ॥ कृ० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणीजै ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा भय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ ॥ कृ० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा, भव जन मन नयण आनंदा, उलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभ जिनंदा, प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी छे दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लभै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषभ ऊदार, घरणी जिण धरयो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमें पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीवो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज्ज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ए ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख्ख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर आंनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार, घर २ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २ कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान १ए

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ संवच्छरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरे महिमा करी ए, आपीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गोडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पउमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुण-शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोडी पार्श्व-जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडिहि लाख पचास ए, सागर जिनसासण भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, नवझाय सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ भयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उच्छाह ए, क्रमर बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥ ए ॥ हिव हथणापुर गाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवर्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवतर्यो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पभणै लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो ससि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥१५॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ वल छल अंग यण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरत छखंड ए, वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जखें अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मौरुबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरू ए, भिन्न वे नमें बे कर जोरू ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्कण ला वण्य लीला भरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सहस अंतेउरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रूद्धि प्रकार ए, मणि कंचण रयण भंडार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए सार ए, बिहुं लीधो संजम भार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन झाण समाण ए, बिहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम्हिमहि ए, बिहुं चोतीसे अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए, बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, बिहुं पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणे विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार भुवन भरी ए, बिहुं सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं भंजी भव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ सुणि अति संरू विहाण ए, तिहां इह परभव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उछव मंगल करण, बिहुं संघ सयल दुरिय हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज भुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम भगते भोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय नणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ नविक जन धर श्रीजिनउपदेस, छूटे कर्मकलेस ॥ न० ॥ आंकणी ॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, नाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए नाव विचारिये जी, इम नाखै जगदीस ॥ न० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ न० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ न० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोडा आदरो जी, नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ न० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ न० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ न० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जांणनें जी, तीने दंड विशुद्ध ॥ न० ॥ ८ ॥ पडिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ न० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज नय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ न० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ न० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करो घात ॥ १२ ॥ भ० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ भ० ॥ इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरे करे जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ भ० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली ॥ नवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुखथकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद नपगार थाये घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निमर्ल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै॥३॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥ कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दप्पे इण नांम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकुट्टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोप धर प्रायच्छित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरणतणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमड्ढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंडित थायै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपडिलेह्यां परिमढनो तप धार, गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमड्ढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदें मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी असायां एकासणथी वृद्ध॥ बहु बि ति चौरेंद्रिय हणयां वि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ९॥ उदेही कुलियावडा कीडी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै आलोयण जोइ, बहु पंचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें लकडी प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें छठ विचार ॥ साध समक्षें लोक समक्षें राज समक्ष, कूडा आल दियां डुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंडायां तेम मरायां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवडना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतांने पोस ॥ करीय डुवालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छादुक्कड देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इ कश् आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, भां गै आलोयण इमैं ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊप रां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमादान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उ पवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२आंणिये ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतनें अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववांडि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधु अने श्रावक पोसाध, एकेंद्री सच्चित्त संघट्ट कीध ॥ वीसर भोले सच्चित जल पी

ध, दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रे, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रे ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम नवे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार लीमो राखे, व्रत पच्चखांण करे षट् साखे ॥ दोषे मिच्छामिडुक्कम दाखे, आलोयण लेतां अभिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावे पार ॥ तोपिण संक्षेपे तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ एकांत पूछे गुरु बतावे, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीधर्मसिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरे ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्भुत, वलयाकार विराजे रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर गाजे रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अभिरामा रे ॥ मूले प्रथुल सहस दस जोयण, उवरि सहस कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे त्रिविध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै२ इकसो चोवीस, बिंब संख्या सत्र दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सत्तु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसे आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उचैरे, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ वाव२ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्संगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं०॥ ९॥ वाव२ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रूडारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसै, कह्या नही ए कूडा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस२ सहस विस्ताराररे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारया रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपडिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणै रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर वर द्वीपे रे ॥ द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भड जीपै रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाभिगमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहा ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किण २ गामे कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहै द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २॥ पहिलो जंबूद्वीप सभै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण बिहु करमांभूमी छए अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीससे तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी बत्तीस विजय विराजे जेहने ठाण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारे श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, वीतसोका नगरी तिहां चोथो सुवाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ पिहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छै जिहां, तिण-हिज नांमें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजै दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज२ मेरुथी मांभिने,

लेखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस॥ ऋषभानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली बिहुं जिननी थरे, विजयनगर दिसि ठाण,॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंद्रानन जिन, पश्चीम धातकी मांहि ॥ विचरै च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उच्छाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, परदक्षणा परकार॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूडी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए॥ उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधे पगे॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगे॥ तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजे, धात-की खंड जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधे पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसै॥ पश्चिम विद्युमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही॥ बार २ कहनां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए॥ उ० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पछिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरबे पुष्कर अरध मांहे, सरब जीव सुखंकरा॥ २२ ॥ ढाल॥ वैरसेन वंदू जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो॥ देवजसा भुगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए॥ भ०॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पछिम भाग ए॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए॥ चौरासी पूरब लाख बरसां, आउ इक २ जिण तणो॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए॥ हिव उत्कृष्टे भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांचे लहे॥ उ०॥ जिण लहे पांचे तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहा पिण छै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली॥ २४ ॥ ढाल॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसे जिन गुणगेह ए॥ उ०॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमुं बे कर जोड ए॥२५॥ कलश॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणातीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह धरि धर्मसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं ३॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच-

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीभाभाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र भणी कु महेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो मांहे गाजै, आबू मारूभै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला गो, नंचो अंबरिये जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावै, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू लभानो रंग सुहावे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्केसरि देवी सहा ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाम वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंमायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी झेरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया झिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ छगणिस कोम सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवम कोई, भूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि ति ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासै, बार कोमनी लागति न्नासै रे ॥ जा० ॥ देरा णी जेठाणी, आलानी अनव कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देव ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वामो दीठो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आ गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा न्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते धातो, झिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा लौ, जिण बिंबनो न्नाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली न्नोम सोन्नागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन न्नावी रे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥ ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० ॥ साहमी वच्छल कीज्यो, जातमलीनो जस लीजो रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये छै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवे रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषन्नानन व्रधमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि णा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिन्नुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, त्रेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोडि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस ढिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवे नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अडत्रीस सह स सत साठ अडे गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखाण, चउ२ चेईहर साठ सबे त्रिहुं ठांण॥इकसो चोवीसै गुण प्रतिमा चिहुं नाम, ध्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कु रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्रू सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सही ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारैसै सत्तर सुक्ख ॥ कुंड त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा सुणियै॥१२॥त्रिण लाख सहस वलि ध्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबालै सब मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोडि सत्तावन लक्खा रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्खा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे, अमवन लख अधिके जोमी ॥ उत्तीस सहस अधिक कहीये रे, प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ५ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजे प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर नूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारषी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ नवियणने नवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि नाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांनलतां नणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, चिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिनुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण नणें अनिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुऊ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

नविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥ प्रनूजी विराजै रे सूरत विंदरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ न० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवत्स सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रनु देह ॥ २ ॥ न० ॥ विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिनुवन नाण ॥ न० ॥ ३ ॥

वेदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहियै ए प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, दुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत भाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भराबियो रें, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहमी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गच्छ भाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हांरे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्यै कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातडली तब थास्यै महारी सबि वगे रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथ जो, उलवस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छै दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस लेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, गाली रे सी करवी तेहथी गोठडी रे लो॥ हांरे कांइ कूडूं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतडी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाणयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोश लायक नायक जगत वछल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उभ्भोगलो रे लो॥ हांरे कुण जांणे अंतरगतिनी विण माहा-राज जो, हेजे रे हसी बोलो ठंडी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखडली अणियाली का-मणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुज जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण आंणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांडयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारया भोंयरा रे लाल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥म०॥ लख्ख नवाणुं लगावियां रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियं-तरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाड्या सम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजे, म्हारो मनडो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस लेव्यांथी स्वारथनी नहीं सिद्ध जो, गाली रे सी करवी तेहथी गोठडी रे लो॥ हांरे कांइ कूडुं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नहीं प्रीतडी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक जगत वछल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उभोगलो रे लो॥ हांरे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहाराज जो, हेजे रे हसी बोलो डंडी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखडली अणियाली कामणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नयणा लंपट जोवे खिण १ तुझ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण आणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाऊं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो, गिरुआ थइ मन आणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नहीं संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारया भोंयरा रे लाल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरू रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥म०॥ लख्क नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियं-तरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स०॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरबनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघामा सम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजें, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजै, म्हारो मनमो रीझै रे ॥ आ०॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पालै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापै, पिंड भरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति आलापैं, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आतम उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै, सिद्धरमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोडाकोडीमें भमतां, तुझ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीझै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार ॥ ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम भोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्तें भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अभेद॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंम अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टव्यो रे, जास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अनिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक जोक्ता जाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज जाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा जासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ए ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, जावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूम कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुऊ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन धणी जी, मुऊने डुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी, दीगं डुख अनंत ॥ जागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे डुःख जांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुरक ॥ परडुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुरक ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखै जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूधो [illegible] संयोग ॥ परमारथ पीछै नही जी, गमरप्रवाही लोक ॥ कृ० [illegible] तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज [illegible] बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० [illegible] न धरम२ सहू कहै जी, थापै अपणी जी वात [illegible] जुइ जुइ जी, शंसय पमयां मिथ्यात ॥ कृ० [illegible] ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र [illegible] तने काग

भूभावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कु० ॥ ए ॥ नग-वंत नाष्यो ते किहा जी, किहां मुझ करणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ कु० ॥ १० ॥ आप परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते मैं लह्यां जी, तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाम्पिया जी; किहां जइ करूं पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कु० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गमें ऊंमी वात ॥ परनिंद्या क-रता थकां जी, जायै दिन नें रात ॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखैं धंदे पड्यो जी, नरकै करसी रीव ॥ कु० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख भली दियै जी, तो मन आणूं रीस ॥ कु० ॥१६॥ वादभणी विद्या भणी जी, पररंजण उपदेश ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कु० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक मनमांहे ऊपजे जी, मुझ मरकट वैराग ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कर उच्चरूं जी, भगवंत तुम्ह हजूर ॥ वार २ भांजू वली जी, छूटकबारो दूर ॥ कु० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा आरंभ कोडि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोड ॥ कु० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंड ॥ कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंड ॥ कु० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही जी, राचे रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोन्न ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोन्न ॥ कृ० ॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीन्नोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण न्नव परन्नव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कमं जी, न्नगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे मैं कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर नें दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषन्नदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रन्नु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कमं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, न्नव २ ताहरी सेव ॥कृ०॥३१॥ ॥कलश॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण न्नेट्या नान्निनंदन जिन तणा, करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि न्नणें॥ ३२॥इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री ऋषन्न देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषन्न जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, न्नांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट जक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो ठाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुऊ नाम ॥ पं० ॥ ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोश अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्र वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित से वक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ ॥ मत२ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धी ठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस ण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम जाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल ज सुलज कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि जेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर जाव॥परमातमनू हो आतम जाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्णा रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक गंमे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ न्नयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्ष्णता गुण न्नावे रे ॥ प्रेरण विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिन्नुवन प्रन्नुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी न्नोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु नं ग त्रिन्नंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनम्रो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म०॥ जिम२ ज त्तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो न्नाजे हो॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज नी वासर वसती ऊजम्र, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखमुं थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २॥ मुगतितणा अन्निलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अन्न्यासें ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरनें हाथे, नावे किण विध आंकू॥किहां कणे जो हठ करीहटकूं, तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांहे ने सहुथी अ लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंम्रित जन समऊावे, समऊै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छै नर, एहने कोइ न ऊेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं०॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं डुराराध्य तें

मृत पाननी, किम भाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल भ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता नजय विलक्षण, एक ठामे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ नयदान ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण भावे रे ॥ प्रेरण विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी भोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भं ग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनडो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म०॥ जिम२ ज तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो भाजे हो॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज नी वासर वसती ऊजड, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखडुं थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २॥ मुगतितणा अभिलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अभ्यासें ॥ वयरीडु कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरनें हाथे, नावै किण विध आंकूं॥किहां कणे जो हठ करी हटकूं, तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अ लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडित जन समझावै, समझै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छै नर, एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं०॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य तें

वस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ लुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोडि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी॥३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुख अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आंछेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आंछेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमा-कल्याण ॥ आंछेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे॥ तीन कमल मुझ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं छाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्रीजिनचंद मुणिंद, वांछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुझ वीनती गोड़ीचा, अलवेसर अवधार हो गोड़ीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोड़ीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवड्यो, गो० ॥ सगली

भ्राति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सत्रीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करे, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपे जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वामी रे॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरामी रे ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ६ ठुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन भाय ॥ प्या० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज है, भवदुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितमांमें लागी है चूंप ॥ सवाइप्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पामीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो थ घमी सुप्रमांण ॥ स० ॥ जगतवछल जल भेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंद्रनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घमी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास गियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधो जिम तिम करिनें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारी मानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो भव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुह्म पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थावै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गछपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीनें मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतरजामी, पूरव पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताहरो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥१॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका कांइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे

तूंहिज साहिबो कांइ, बंदू बे कर जोरू, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फल्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधा सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी माहाराज, कारज सगला सीझै ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भमरतणी पर मोह्यो, केरूायो नवि छूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने, नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जांणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम लही तुझ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुद्रानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण मति उपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणै किंचित गुण भाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुझ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंडायो ॥ लाभ उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरू पलश्में ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रज्जु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन ज्जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव दयासागर प्रज्जु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रज्जु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिव इण ज्ञरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अज्जंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथमाय ॥ वीर विहूणा जीवमा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे॥ वीर० ॥५॥ निर्यामक ज्ञवसमुद्रनो रे, ज्ञव अटवी सथवाह॥ ते परमेसरविण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे वीर० ॥६॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो ज्ञविजना रे, जिनपमिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ ज्ञव ज्ञव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषज्ज समोसरया, ज्ञला गुण ज्ञरया रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ नरतें नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति नलो, त्रिनुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्ध तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धें नरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, डुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंनण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीजरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जादवो, गोमी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन नलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा बती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे॥समयसुंदर कहे एम॥ती०ए

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं बहेनी, विमलाचलगिरि जईयें रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम नांखी ॥ नरतादिक नरपतिने आगल, इंडादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां डुःख गेमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां नरतां, आतम शुद्ध सुनावें ॥ कोमि नवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें जलग करस्यां ॥ अभुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुभंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भवसायर निसतरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ कहे ए गिरि वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिशलानंदन जी, भले में भेव्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चरकाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण ओलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से हथ देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सह्या सेठ इम चिंतवे जी, हो सी सफल मुझ आस ॥ पङ्का आस गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ यार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे ले पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्यूं पारणो जी, हूं प्रभूने पमिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ्र ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवसर कख्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने वा कला जी, प्रभूने आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्रभु पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुभि जी, जै बोले कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढाबारे कोमि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा दिक सहूए कहे जी, धन२ पूरणसेठ ॥ ऊंची करणी तैं करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा जित डुंडुभिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंमल ठांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किधा जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर धन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछे जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण घाल्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घरमी एक सुर डुंदुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल गंम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें आपियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-पात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुझ मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ अ-रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु० ॥ २ ॥ सात लाख पृथवीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चवदे लाख साधार ॥ वि ति चउरंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यारश् प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, दुरगति दातार ॥ ते०
॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा
नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, की
धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ मैं कीया, वलि राग ने द्वेष
॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निं
द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ए ॥ चाडी की
धी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आं
एयो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना
वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०
॥ १ १ ॥ माछीगर भव माछला, झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली
भवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी
मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
१ ३ ॥ कोटवालभवमें किया, आकाराकर दंड ॥ वंदीवान मराविया,
कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नार
की दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना, अति तिख्ख ॥ ते० ॥ १५
॥ कुंभारने भव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीभव तिल पि
लिया, पापे पेट भराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल ख
ड्या, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूडाने दान किया घणा, दीधा बलध
चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल
पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही
आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया ना
वी लिगार ॥ ते० ॥ १ए ॥ छीपाने भव छेतरयो, कीधा रंगणपास
॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
पणे रणझूंझतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां,
खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

उलंघ्या ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, घरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूमा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भव ऊंदर गिल्या, गि रोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे भवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ भाम्भूजातणे भवे, एकेंडी जीव, ज्वार विणाग हुंसे किया, पामंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण ईंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाम्या, रोदन वि खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने भागा, मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवमे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंजाया ॥ ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ कर वो- सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेराग्री जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, बूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुऊ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह मदावाद पास ॥ गोमी गे धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घमी, महुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अछनी भूमे अछनी पीमा, अछनी वाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुऊ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहऊठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठगो मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी, लाब घणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुऊने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकमो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अब सताब परगट करो, नहितर मारे सोय ॥११॥ पाछलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संभलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुऊनें होसी बहु फलदायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रदक्षणीने थुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो,

आपणे आंनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, ईंम्ह तुरकने जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिल क निलाम्हे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाम्हे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपूं, श्रीपास जिने सर केरी जी ॥ पांचसे टका जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १९॥ गादी रूम्ही रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उछव दिन२ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठाम२ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी मुजाय ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाय॥ ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोम्ही काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषभे जोतरे ॥ पार करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनहु विमासण थइ, पास भवन मंम्हावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुट को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंम्हाउं कि म घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी उलटस्ये खांण॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुउ, अमृत जल निसरिस्ये कूउ ॥ खा राकूआनो इह सहनांण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सि लावटो सीरोही वसे, कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो॥रोग गमाडुं ने पूरुं आस, पासतणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया तेडवा॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांड घृत चूरमो॥ घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंडप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी ईंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पवासण बेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगडे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अछे, यात्र करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विडारण जक्ष जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरउ गोडीपास जिन ॥ आपे अरथ भंडार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चूकां मांनवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ दोजागीने दे सोजाग ॥ पग विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेहने द्ये ठांम ॥ मन वंछित पूरे अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने द्ये आधार, जवसायर उतारे पार ॥ आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां साद दिये जक्खराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि प्रकाश ॥ गूंगाने द्ये वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो दा तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेमीतणा, श्रीपार्श्व नाम अक्खर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्खर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध दूरे टले, डुछर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जय चूकवे, विष अमृत उम्कार ॥ विषधरना विष ऊतरे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥ रोग शोग दालिद डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजततु २ ॐज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्खर ज पंते ॥ जूतने प्रेत ऊोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ डुछरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डु त्तपंते ॥ गर्जबंधन व्रणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी माइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोन्नावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंहो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग भणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, भमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणभत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं लभामो ॥ नहि कोइ उव हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वुच्चं ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शाशनं ॥ १ ॥ मंगलं भगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा भस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव ज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयो सुभे ॥ एसो पंच नमोक्कारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च स-

ह्सिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य नस्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा० स्तोत्रं संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोड़ि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक वुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्य लोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो छो, पड्या पाश मे भूतमाने भजो छो ॥ सुराधेनु छंडी अजाने अजो छो, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाडने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना डुरक दालिद्र दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो छो, कुशीले करी देहने कां दमो छो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंतं तजो द्दष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअडे मेह बूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्रांण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयजयकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पक तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम नदयो अविचल ज्ञांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वारू विलसे वंछित कोमि ॥ महियल मांने मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, नत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रज्ञात नठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी ज्ञरतनी बहिनमी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल ज्ञगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे ऋषज्ञ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिज्ञुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, नमदना बाकला वीर प्रतिलाज्या, केवल लहि व्रत ज्ञाविका ए ॥ ४ ॥ नग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लज्ञा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव डुल्लज्ञा ए ॥ ५ ॥ पंच ज्ञरतारी पांमव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरज्ञुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो कामण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कूवाथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुन्नद्रा चंपा बार उघामियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांमवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांमव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो, त्रिन्नुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रन्नावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरें दाखी शास्त्र बे साखी, उदयरत्न न्नाषे मुदा ए ॥ प्रह उठीने जे नर न्नणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ इख्वीकूख रत्नहीर, विश्वन्नूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जझ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रन्नु आये चंग, वाणी गुण सप्त न्नंग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख ॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, न्नये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन श्रुति सारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नंद चंद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक रुद्धिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हांने० हाथ लकड़िया कांधे कंबलिया, शिर शोभित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पांगरणी, भजन रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जयणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थिवरकल्प जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥५॥ करत रामरुद्धिसार वंदना, निरखत एसो भेस ॥ म्हां० ॥६॥ इति पदं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहंत२ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय२ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ रचाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुंदुभि नाद बजाते हे, धर्म केते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें लाते हे ॥ रामऋद्धार कहे रुद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं ऊठे परभात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार; जेम पामे भव सायर पार ॥१॥

त शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक घृत दूध ने दहिं, उघाम्रां मत मेलः सही ॥ उत्तम गामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुजचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चार आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण जव जवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, जेटीश हु धन धन अवतार ॥ ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एथी थाये जवनो ठेह ॥ आठे कर्म पमे पातलां, पाप तणा ठुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पजणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद करवि निसुणहु जो जविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिजरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदेस सेणियनरेस रिजदल बलखंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुजूइ तच्छ तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विवहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपामिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमामिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयचाङ्गिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल जीत्त इत्र गुण मेल्या संचिय ॥ अह्वा निच्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पनमा गवरि गंभ रतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र गात्र हींमे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल हासे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासम्मि खोणीतल मंमण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वरगाम तिहां, विप्प वसे वसन्नूइ, सुंदर तसु पुहवि जज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ जास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठा जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चनविह देव निकायाहें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण माह दिगंत पइठा ॥ ए॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुंडुन्नि आगासें वाजे, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चनसठ इंदज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ नपसम रसजर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अन्निमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम नपम दी

जं ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्मविय, समवसरण बहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो करसंचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरविवर्जितजंगुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेरू वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतादिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासे पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेरू फुरंततो ॥ बोधबीज सज्झायमनें, गोयम भवह विरत्त ॥ दिस्क लेई सिरका सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय भरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर ऊपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल ऊपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु नक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग नरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चनवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुन ए अनिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वम सहिय॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन नल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजृंनकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम घृत आण, अमीयवूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुन्न नाव, नजल नरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, नप्पन्नो नजोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, नपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जगगुरु नयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम नणे,

गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए ऊंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए॥३६॥ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हंसा, जिम सुरतरुवरें कणयय तंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणं विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३ए ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम नूमीपती नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पन्नणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोन्ना संन्नवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय नमी जें, कवण काज आयास करे ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीजे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पन्नणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या नंमार, तसु गुण पुहवी न लब्नइ पार, बम जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास नणीजें, चनविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन बमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

णो ए ॥ तिहां छेठी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणुं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा डुरित पुलाय ॥ भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजा ने श्रीपुंमरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजना एकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरवे सुखकास ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने गांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपण, छवीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यांन धरूं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणो विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो परबत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुंजसाधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

ए पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परन्नात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, नमीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सीधा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राव मने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सीधा, नव नारद रूपिराय रे ॥ संब प्रद्यून्न गया इहां मुगते, आठू कर्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवसर्या गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहू, रह्या चोमासे सुरंग रे ॥ से० ॥ ए ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साथ रे ॥ पांचर्सें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, नरतेसरने पाट रे ॥ राम अने नरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने नवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अनंता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल नद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमरना पातिक जाय ॥ १ ॥ रूषननदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ नरत गयो वंदणने काज, ये नपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहि मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, नरत सुणीने मन गहगह्यो ॥ नरत कहे ते किम पांमिये, प्रनु कहे सेत्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ नरत कहे संघवीपद मुऊ, ये आपो

हूं अंगज तुझ ॥ ईंद्रे आण्या अक्षतवास, प्रजु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ ईंद्रे तिण वेला ततकाल, जरत सुजद्रा बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषजदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर घर तेमीया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणी, संघ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम साथे लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रूद्धि, जरते साथे लीधी सिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामे रही महोछव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊम पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरूख बे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, जरतें दीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, ईंद्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, जरत करायो गुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा आपी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्राशाद, जरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो आसाउरी ॥

॥ भरततणे पाट आठमे, दंडवीरज थयो रायो जी ॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब भंडारीयो, पश्चिमदिसि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र करावियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय करावियो, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेट्यो अपारो जी, काष्ट नैं

त्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिडोतरे, श्रीमाली सुविचारे जी, वाहडदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे डोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते बे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पामीजे नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांनलो जिम बे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ नगवंतनो नेष मांनता, लान्न हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोडि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे बोडि ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक नणी, नोजन पून्य विशेष॥ सेत्रुंज साधु पडिलान्नतां, अधिको तेहथी देख ८

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेत्रुंज गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥४॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोर्या नर नारो जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते छूटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध्ध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भैंस घोडा महीं, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ द्ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥१०॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा

करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ डहरी पालतां चालिये ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि ल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वमने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥ से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परन्नात ॥ सेत्रुंजनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हमे ए, कलिकुंम नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ॥ ६ ॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ वी कराविया ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, न्नमतीमांहे न्नला बिंब ॥ पांचे पांमव पूजिये ए, अदन्नुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमडुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ न्नगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, न्नमतीमांहे न्नमंत ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल श अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंमरीक गणधार ॥ रायण तल पग ला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प गला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी न्नूमि बिं बावली ए, पुंमरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंम नि हालिये ए, अति न्नली उलकाफोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा ण, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण सरीर मनोहर प्रभुनो जांण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशंभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दु रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-मेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरी ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संबर राजा सोहे मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रग ट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥ पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि छ लाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकण्यांरी संख्या जाण ए, नायकयक्ष कालिका गण ए ॥ उल्लालो ॥ ठाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥ २ ॥ चाल ॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रोंच सोहै सुभगे हसे ॥ पूरब लाख पच्यासी आन ए, इकसौ गणधर गुणगण भान ए ॥ उल्लालो ॥ भान ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलतणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाईसै त॒ कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावै एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय खल सहस बिहतर श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकणयारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई ॥ तसु चरण पंकज वालवंदे हृदय आनंद गदगदी ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमरसु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर वनारसी सोहता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसैं देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी थाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवार लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चव लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, नए सुविध सुज्ञ जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रज्ञुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या नए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रज्ञु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं जेर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ नद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंछन सुज्ञ श्रीवच्छनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥९॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रज्ञुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या जेर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रज्ञु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ धनर संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रज्ञूजी, नपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिज्ञुवन राजा, खड्ग लंछन प्रज्ञु पाय जी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चोरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ख जी ॥ ३ ॥ न०॥ अड़तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज रूपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख वछरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अड़ सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ए ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पच्चास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमोश् जगन्नाण ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमाण ॥ श्रमणी वासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय२कार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सहस मूनि छसै जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरूडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ए ॥ नवसै मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ ऐसें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ छसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, श्राव क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब ला गंधर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रो ता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥ ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांण रे लाला ॥ सहस बहुत्तर तीनली लक्ष श्राविका संख्या आंणरे लाला ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा वन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चा लीस सहस मूनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्र्यासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ए॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष बीस देहीतणो, आयु वछर तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नांम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा यहय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे नर आवै, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै भक्ति, संघपति नांम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव थाट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीनें, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गच्छपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुहात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद्र निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसै सितमोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

रुषन्न प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावें श्रमण सुगुरु जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ जरत महामुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उपशम जंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पाम्यो विमलाचल जवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषन्नवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरूपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महाबल संजम सीह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर नवम अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ७ वसुंदर, श्रीमल्लिनाथ पूरबन्नव मित्र ॥ पहुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोन्नसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध रुषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ए ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण रुषि श्रीथावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनि वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंडरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोहइ ए, अंतर प्रकासे तिमर नासे, नविकजन मन मोहइ ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय मुणी, स, मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांडव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल थिवर आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म नाख्यो सोधि सिवपुर सक्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंडरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंदु वलकलचीर केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू दुमह नमि तिम्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृषभादि देखी थया वड वइरागिया, संजमसिरि नज मोहनिद्रा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंतें कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुद्ध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणभद्र सुभद्र सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ट मीस सुव्रत, साधु सुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुड गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये, दसारण भद्र नमुं दुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदढप्रहा

री सिवरमणी वरो॥ उल्लालो॥ सिवरमणी वरो श्री कुरगडू क्षमावंत प्रसिद्धउ, कोडिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खंदकुमार सदा अभिनंदिये, नमिइ उदइ मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्रीइंद नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि १ जसतणो, श्रमण सुदंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर देवसांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हित घणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल ऋषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७॥ ॥चाल॥ जति जयघोष विजयघोषे जुउ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुउ॥ श्री इखुकार नृपति कमलावती, रांणी भृगुसुं प्रोहित सुजसमती ॥ उल्लालो ॥ सुजसमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए छहूं लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती॥ १८ ॥ चाल॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कह्यो, विघसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण वीर ए ॥ २० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु भद्र नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

सुख रिप च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नेकुमार मुनि अन्नयंकरो, इल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥ उल्लालो ॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनक्षत्र ने सर्वानुन्नूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नइ सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वरूवैरागी वर नमूं, युगवर जंबूसामि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्नव परगम्मो, सुजस जसोन्नद्र स्वामि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी, नामे घर नवनिध्य वाधे रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संन्नूतिविजय जयो, न्नद्रवाहु कृतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥ म० ॥ ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहस्ति विसाल ॥ संप्रति नृप पम्किबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसामि यसंसियो, अज्जसुन्नद मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवयर स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्षत गुरु दक्ष ॥ पुस मित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु उरवलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंक साधु सुविधइ न्नरयो, श्रीखंदिल सुविहद्ध ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो, क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री डुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि राधने, सातुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल बत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिभद्र सुगुरुलयों, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीये, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख भरपूर ॥ म०॥ ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम हासिद्ध घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधे नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्र प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ अइ सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमिये, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नांमे, वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे ज्ञविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज्ञ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नांम सुपास ए, हुसी जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत ऊदाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साध ए, चोथो स्वयंप्रज्ञ नांम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणिये, पंचम सर्वानुज्ञूति प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वांमि सलहीजिये ॥ संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो ज्ञणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निरमम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती, अढारमो शदालजीव संवर जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अंबड श्रावक ज्ञणं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत वीरज नमो, स्वातिबुधजीव ते ज्ञद्र चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चोवीस जिन जांणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ परसिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, सास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंधिर वाहुजी, श्रीसुवाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु ऋशभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रवाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा भद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नांम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमांन ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोडि छप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे गयासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोड़िया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अगावीस च्यारसै, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ त्रिभू जिणवर नांम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम कित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम भ्रिण चोवीसी वीस विहरमांण चक्र जिणवर सासता, संथुणया सतरैसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता मणितणी पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री त्रिभूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

जग चूड़ामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइञ्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए जाए उव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइं वहुचाई असरिसजं

णस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सवसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न चइ ऊइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ न्नहो विणीय विणउ, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं; विम्हिय हियउ सुणइ सवं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति ॥ इय गुरुजण मुह न्नणियं, कयंजलिउडेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जह सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पन्निरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंन्नीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी सोमो, संगहसीलो अन्निग्गहमई य ॥ अविकछणो अचवलो, पसं तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए न्नगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिरिकयस्स दमग, स्स अन्निमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउ सव अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिरिकयाए, अज्जाए अज्जदिरिकउ साहू ॥ अन्निगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो, किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्सरस्सो, तइया वाणा-रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तह वि य सारायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरछिएण इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म ज्जाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १ए ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिन मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहछिन अप्पसक्खिन धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्झ मिन ॥ संव धरमणसीउ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग प्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गव्विउ निरवणा मो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्व केइ बुज्झंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स उक्खमल्लिहियए॥ जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुबंधिं च ॥ २ए ॥ उवएस सह स्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू णवि जीवाणं, सउक्कराइं ते पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पमिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवमियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं॥ ३३ ॥ इति पोसह सिक्खा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते १, कहियें. अणुजाणह जि ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंभिअसरीरा ॥ बहु पभिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुम पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, नवट्टंतेय काय पभिलेहा ॥ दवाई नवनगं, ऊसासनिरुंनणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमान, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा नस्काण परपरीवान ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, स्कम ग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो हं नच्छिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासन अप्पा, नाण दंसणसंजुन ॥ सेसा मे बाहिरा नावा, सव्वे संजोगलस्कणा ॥ ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सवं तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लक्खाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मझह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरयां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम तुटकवारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण प्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं भरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाफी चढयो, पेखियो मुनी ए कंत ॥ वर रू पकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुऊ पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ ए क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही, नाहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईथा, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं सं जमज्ञार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नाहिं, ते जणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मऊार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पमिक्कमणो ज्ञावसुं, दोय घमी शुज्ञ ऊाण ॥ लाल रे ॥ परज्ञव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पमिक्कमणु ज्ञावशुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते व्रली, एम

हीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसथ्थो, भलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म नि वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यानथी, पच्च स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सथ्या यें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियडे रा खिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधु तणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भांख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए चारु मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कह्यां हो ॥ भ० ॥ ए चारुं तहतीक हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार ॥ ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतमां हो ॥ भ० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर भव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा खो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेडो नहिं आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सही हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ न० ॥ वरते कोम कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ न० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ न० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥ न० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ न० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ न० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिझाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति उठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न लै असूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, बांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आएयो भाव विसेसरे हुं० ॥५॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरचा हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वत्स ताहरी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, चाल्या परठ-

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे आपने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पाम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिज्झाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमें तो मांनी रे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीन्न वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी ॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥ कोमे बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर२ जिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छै ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥ सुख अजिलाषी हे अम्मा, झूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाणयो परखदा सहु सुणयो ॥ १४ ॥

में इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही ॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा, नव पखवारे मोरी अम्मा, मास संथारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर हुआ महा पूत्रनो दुखियो, कम्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कम्मैं कीयो तनु छार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कम्मै हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥ बारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा०॥ क०॥ ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥प्रा०॥क०॥६॥ संभूम नामे आठमो चक्री, कम्मैं सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मैं कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ छपन्न कोड जादवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंओ एकलडो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे वरस लग वन रडवडिया, भमिया जेम भिखयारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलडे जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरणी नरगे कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥क०॥१३॥ तीर्थंकर सिरोमणी हौ पहि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरव कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकडो, कर्म्मैं नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वालो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंडया नर करमें, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धिहरष कर जोडीने विनवै, नमो २ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे भाइ सातेई, आपै दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पमृयांथकां, पामव पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू रा जरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जक्षण अवगुण घणा, करै पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार वबेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तजे मदिरा पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दहव्यो जा दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे स्याघर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेमे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे डुख जोर वि० ॥ मुंजदेव रा जायें मारियो, चावो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेमाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत ठंवार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जी ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ भगवंत सांसो भांजियो जी, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवतणो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ भूलो मनभमरा कांइ भमै, भमियो दिवस ने रात ॥ मायारो लोभी प्राणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय ने बाप ॥ अ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखै बेठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरबो छे रे अेह ॥ वीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नदी मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड माय ॥ ८ ॥ भू० ॥ मह मंद कहे वहत वोरीयै, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाभ नवा रियै, लेखो साहिब हाथ ॥ भू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मूठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथ की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भासे रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासे रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु बांधव बांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलड्यां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाड्यो वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहूबल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड्के दाझे सीसो जी ॥ पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठे जी ॥ खरे दुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीठो निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियै२ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ ततर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिल्ला उपरै, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापूत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावडी, वस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गांवे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमें, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पडै नट वो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै रे नृपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवडा, मन आणयो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे जोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि घुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुक्क अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछै जी, जोवन जरयो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुक्क अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुक्क न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियौ कांन हे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांबलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ जुंइ पाला नित हींमणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जोवनजर गेरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ०॥ १०॥ खमिइ मात पसाय करी जी, मैं दीधुं तुझ दुक्क॥ दिउ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणें ल्युं दीक्क हे ॥ मा० ॥ अ०॥ ११॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठे, तव दीठो निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियैं२ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिला उपरै, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरव नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आया रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चढ्यो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गांवे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमें, गाजे अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियो, लुवधो नटवी रे साथ ॥ जो पड़ै नटवो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपे रे भूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवड़ा, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावै रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायड़ी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऋणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि धुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहिस भार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछे जी, जोवन भरयो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियौ कांन हे मायड़ी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांछलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायड़ी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोझे नवसर हार ॥ जोवनभर गोरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजड़ी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहड़ी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगवियै सोय हे मायड़ी ॥ अ०॥ १०॥ खमिश माउ पसाय करी जी, मैं दीधुं तुझ दुख॥ दिउ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणे ल्युं दीख हे ॥ मा० ॥अ०॥११॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

तिम करो जी, में दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रुळै जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुळी थिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिविका तब सझी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उच्छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जांणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोडी पूनो भणे जी, ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली पडवा तीन विमास ॥ चौथी पडवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जां लगि होली झळै वार, धुंवर पडती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो भय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ झूझै मल्ल मांहोमांहि जांम, तां लग असिझाई तिण गांम ॥ ३ ॥ भूपति परभव पोहतो होय, जां लग पाट न वैसै कोइ ॥ तां लग बोली छै असिझाइ, स हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पडिवा लग असिझाइ वकी ॥ पडिवा बीज तीज चांदणी, समीसांझ असिझाई गिणी ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागै जांम, गाज वीज असिझाइ ताम ॥ गाज वीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संभाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारे आठ विचार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्ये बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै भविषण सरदही ॥ नगर प्रधांन मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए ॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥ ११ ॥ ईंडो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पडै तिन गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिणइ पोहर के ऊपर नही ॥ १२ ॥ असाढै चौमासे दिने, पडिकमणा गयांथी गिणै ॥ बार पोहर असिझाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छै बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांभलि ए मैं कही संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षर जेह, च्यार मात्रबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अक्षरै, तब कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जि-शासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालो रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो भवि यण भ्नरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ बली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोभी नर कूडौ करौ, जांणी सावद्य रे अ भक्ष बावीसे परिहरौ ॥ वड पींपल रे पिलखण नैं कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ रखे तुमें भक्षण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा भंडि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीभोजन, प्रथम डुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब नाम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण रे तुछ फला सवि ठाम ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंम ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंमए व्रत नियम लेइ, वेइ फल व्रत भंगनौ ॥ अज्ञात फल वहुवीज भोजन, चलित रस होय जेहनो ॥ संवर आणी अभक्ष्य ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥ गुरु वयण विगतैं वली पूछयौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥ अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु भक्षण रे पातिक बोल्या छै वहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदू वली ॥ वज्रचूरण रे कंद बहूं कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली वीज पावै, चाखै चतुर नर आंविली ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली ढुकवत्थुलौ, पल्यंक सूरण वाल वीली मौथ नीली सांभलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे कूंपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी रे भमरवृक्षनी छालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ए ॥ वेलमी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, भूय भूंफोमा छत्रा कार जांणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोल्या लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी ते सवि सुख लहे ॥ १० ॥ इति बावीस अभक्ष सिझाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिझाय ॥

॥ संवेगरसमे झीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनश्र गजसुक माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभू पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा यवा अलजयो, पऋषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो, पिण दिन जावे रे तो बेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय काउसग्ग रह्यौ, तिण सांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिंतवे, एहनैं साची रै बे मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगडी रचि सिर ऊपरै, चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अधिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मुनिवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई, ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांझी करी, रातिनी वीतग वात ॥ हरि देखी हियडो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचलराज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ए ॥

॥ अथ प्रषणचंद्र सिझाय ॥

॥ राज छंडी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागै मन वालियो, कांइ लीधो संजम भार ॥ प्रषणचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध२ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दुरमुख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मांडियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे, एहनी सी गति थाय ॥ भगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि वि

मान ॥ वाजी देवनी दुंदुन्नी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥ रिद्धह रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरन्ना वासे जीवम्रो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नान्नी तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाम्री है दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, रुतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥ नाम्री वांसतणी न्नरियै घणी, रूघाल॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, है नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी मिळ्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ए ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरन्ने कोइ जीवम्रो, जंपै जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ वीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरन्नावास ॥ सात

दिना ऊपरि रहे, नर गत नव मास ॥ ऊ० ॥ १४ ॥ आठ ब रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टै काल ॥ गर्भावासै भोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ ऊ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने स्रोणिततणो, नही ऊठ लिगार ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ पर- जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा रिक मीस ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, ऊपजावै अंग ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ ऊ० ॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करै प्र कास ॥ १९ ॥ ऊ० ॥ बारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गर भतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ ऊ० ॥ कलल हु वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ ऊ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अड़तालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ ऊ० ॥ सु थिर मास बीजे हुवै, हिव तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजे, मा- ता मन आस ॥ २३ ॥ ऊ० ॥ चोथे मासै मातना, प्रणमै सहु अं ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ ऊ० ॥ पि त्त रुधिर छठे पड़ै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे सी सय पंच ॥ २५ ॥ ऊ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोड़ि ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोड़ि ॥ २६ ॥ ऊ० ॥ आठमें मा सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ ऊंधै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ ऊ० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वड़नीत ॥ वात पित्त कफ गरभथी, थायै नर नीत ॥ २८ ॥ ऊ० ॥ मात तणी सूंटि लगै, बालकनो नाल ॥ रस आहार करै तिहां, आवे ततकाल ॥ ऊ० ॥ २९ ॥ जननी ढये आहार ते, जाय नाड़ोनाड़ ॥ रोम इंद्री नख चख वधै, तिम मीजी ने हाथ ॥ ऊ० ॥ ३० ॥ सबहू अंग ऊल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरभै सुविचार ॥
॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विभं
ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥उ० ॥ ३२ ॥
कटक करे वैक्रियपणें, जूजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधे मुख गोमा
हिये, सहितो वहु पीड ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी
भींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिके, ऊपजै आ
धांन ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥
॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डुखावास ॥ पुन्य करी तिम
नीकलूं, नाउं गरभावास ॥उ०॥ ३६ ॥ ऊंठ कोडि चांपे सुई, कोइ
समकाल ॥ तिणथी गरभै अठ गुणी, सहे वेदन वाल ॥ उ० ॥
॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभथकी डुख लख
गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां डुख वीसरै, धिग२ मोह वि
कार ॥ उ० ॥३९॥ ऊपन्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु
रत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै,
पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करै रंग अपा
र ॥ लाड कोड माता पिता, पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
इग्यारे नारिने, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर
सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, छै सातसे ना
डि ॥ नवसे नाडी पिंडमें, तिम तीनसे हाड ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि
एकसो साठ छै, सतोत्तर सो मम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,
ढांको छै चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाव
सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अछै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणथकी यदा, ओछो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान पान भूषण भला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै दसके भणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥ उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ छठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ उ० ॥ आवे दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल भागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणैं, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै वचन वहुआंतणो, दिन झुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाथ हुकम हाले नही, दीयो परिजन छेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुर मिले, पडे मुंहमे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संभाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा ते दोहिलो, लह्यो नरभव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम भव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ उ० ॥ कोडि रतन कवडी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संभार ॥ ६१ ॥ भ० ॥ चवदे राज प्रमांण ए, छै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ भ० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ भ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ भ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ भ० श्रीनमि रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ भ० ॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ भ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ भ० ॥ तंडुलवेयाली अछै, एह नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही कूड लिगार ॥ ७० ॥ भ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परि सिंह केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ भ० ॥ इति व्रतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा! हे चेतन! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घड़ी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कभी तूं मिश्रमोहनीमें, कभी तूं कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कभी तूं कुगुरुमें, कभी तूं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामें, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी व

चनदंममें, कन्नी कायदंममें, कन्नी हास्यमें, कन्नी रतिमें, कन्नी अरतिमें, कन्नी नयमें, कन्नी सोकमें, कन्नी डुगंगमें, कन्नी कृष्णलेस्यामें, कन्नी नीललेस्यामें, कन्नी कापोतलेस्यामें, कन्नी तुं ऋद्धिगारबमें, कन्नी तुं रसगारबमें, कन्नी तुं सातागारबमें, कन्नी तुं मायासल्यमें, कन्नी तूं नियाणासल्यमें, कन्नी तूं मिथ्यादर्शनसल्पमें, कन्नी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता हे, कन्नी तेरे बाहिर कर अगरे पापस्थानक आय फिरता हे, रे तूं आत्मा महा डुष्टो, महा डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणदृष्टी, अरे तूं अयोग्ग कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव, प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमी, विचारा तेरे खपी नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलना तेरे मिटी नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे नबल रहा हे, तें जो धर्मक्रिया करता हे सो शून्य मनसें करता हे, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा हे, अरे चेतन ! सोगन नही लेवे सो पापी, डर लेकर नांगे सो महापापी, तें अनंतकाय, अन्नक्ष, शीलव्रत, जरदा, नांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तें पुजलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो हे, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधांन हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगाणेवालेकेही लोन्नका त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरै, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुद्ग
ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,
संसारमें न किसीका तुं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं
तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पूत्र
पणे, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें ठगकी बेटी
नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण ज्नो
गेगा ? मा बोली—बेटी, करेगा सो ज्नोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्
हे इस स्वारथिये संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क
उएकूं उडाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि
रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-
डंबरी कुगुरुउके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें
होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा ज्नया, मांनरूपी गज
पर बाहूबल चढा उर संज्वलनमांन था, उर ब्राह्मी सुंदरी बहिना
जैसी समझाणेवाली थी जब समझे, उर तेरे सो एसा मांन, अरे
चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं ज्नरतमाहाराजा जिणोंके
केसीक राजऋद्धि सो केसीक ज्नावना ज्नावतां, धिःकार राज्यनें, धिः
कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोंकूं,
धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य
जो सर्वविरती धर्म पालते हें, धन्य जो दांन देते हे, धन्न जो
सील पालते हें, धन्य जो तपस्या करते हें, धन्य जो ज्नावना ज्नाते
हें, एसें ज्नावना ज्नावतें ज्नरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोंकी बराबरी मतकर, वहनो तेसठ

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्र-का कोरा भनोके देखते तूं किस गिणतीमैं, कर्म अजीववस्तु तें जी-ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि राया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्र भाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं भिगाय दिया तो तेरी तो विसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामैं रह सदागमसुं परि-चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीछी मार, जेसेंतें तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका ज.प-क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वाडका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, बारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुन प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुझै कब उदे आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसव्र-ती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणै षडावश्यक कर, मुझेभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-मायक मनसुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां चनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण हे, उर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझे पढणे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञांन उर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्त्तार होता हे. दिवस प्रते दे कोई सुजांण सोना खंडी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे कांम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौद्रध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवड धरै, साचो ओझो आगम भणे, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा भला चाहता, वो पराया बुरा था नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे गाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन उर कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भस्म कर जिस्से तेरी गरज सरे, अहोहो में भव्य हूं अभव्यहूं अथवा दुरभव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता हे, प्रायेतो में अभव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने भाव देखा सो सही, हे रे भाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खणे खाज मोडे

करमका, चंघतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिं-कारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहानिसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे छती शक्ति साधू जिनमंदिरमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका दंड उर श्रावककूं बेलेका दंड ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घडी रात रहे पिछली तब ऊठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी वाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अछा वस्त्र आभूषण पहरके घोडा हाथी रथ पालखी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे. जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखणीथी सोभी गई २; (इसमें द्रव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भावपूजाही करे, लेकिन् द्रव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक—प्रभूकी अंग १ अग्र २ और भाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे और फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुभी देवकार्यकों छोडके, और कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ हो सो विकथाको छोडे, जन्म और कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया भया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोपेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया है उस जीवके भावसे निस्सही होय, और जिसने दूषणका त्याग नहि किया है उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र द्रव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, भावसें दुसरा निस्सही कहते मूलगुंभारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अछा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्द केशरचंदनसें विलेपन करे, शुन्नवर्ण शुन्नगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुला- ब चंपा चंपेली केवरा जाई जूई मोगरादिक पुष्फोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंम उज्वल अक्षतोसें प्रजूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लीखे–दर्पण १ जद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्ति क ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसें अष्टमंगलीककूं पूजे, अछे केसर चंदनके हछा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अछे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाजिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग जक्तिसें प्रजूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा- पदादि तीर्थोपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसें करीजावे सो अंगपूजा १ प्रजूके सन्मुख नेवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रजूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो जावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक–तीन अवस्था विचारणी. पिंमस्थ १, पद स्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंमस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. ज न्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवलअवस्था कों विचारणा सो पदस्थअवस्था. निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक–तीन दिशा गेमके प्रजूके सामने नजर रखे,

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ वांइ पिछाडी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे तो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ८.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोडा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ९.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधांन तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाइं इह संतो तड्संताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंड विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आभवमखंडा तक प्रार्थनारूप प्रणिधांन ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं, सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे भोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट छत्र खड्ग चमर पाडुका अचितवस्तुउकाभी छोडणा आभूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजिणवंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद हे. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंडक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोडे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सच्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परबल भींडी तोरी केला मतीरा ककडी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण. तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें कालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिणतीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापड खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचडी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी ज्ञई हे तोज्ञी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण डुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ उर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीडा सुपारी लोंग इलायची गोटी उर बडी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघडी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कई जे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रक्खे. पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केककी कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रक्खे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाम्ी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोमा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुमदोम लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रक्खे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी बालका चमम्का कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ए.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य निमय. रातकों तथा दिनकों सूइ मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रखे, घड़े प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत दुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रखे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रखे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंड तंदुल मुठ ३ थालमें रखके उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पडिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइआरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाथे पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीछे सतरे थुईमें नवकार १ एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके वडा स्तवन कहे पीछे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः। पीछे खमासमण देइ श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोपनार्थं करेमिकाउसग्गं. ४ लोग स्सका काउसग्ग करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मननें धारणा रक्खे. सूत्रं अहन्नंभंते तुह्माणं सम वे मिछताउ प.डिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतिछिएवा अन्नतिछिदेवयाणिवा अन्नतीछिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुविंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणुप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नछरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तछदव्वउ दंसण दव्वाइं अहिगिच्च खित्तउ भाव भरहमझिमखंडे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावछलेणं नछ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नभविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थ सत्तावीस उस्सास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिकों डुविहार तिविहार चनविहार और बावीस अजक्ष बत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे छोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमाण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे जपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंमक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं समीवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिन निरवराहं पच्चरकामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंमक तीन वेर जच्चरावे॥१॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसावायं जीहाछेयाइहेन अकन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पच्चरकामि दरिकन्नाए अविसए दवन खित्तन कालन जावन सवनणं मुसावायं खित्तनणं इहवा अणहवा कालनणं जावज्जीवाए जावनणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवमइ तावअजिग्गह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थणाजोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चरकामि दवन खित्तन कालन जावन दवनणं अदिन्नादाणं खित्तनणं इहवा अन्नहवा कालनणं जावज्जीवं जावनणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि असेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवमई ताव अ

ग्गिगह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव्व० वोसि
रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंन्नंतुम्हाणंसमीवे उंदारिय वेक्किय न्नेयं थूलमेहुणं
पच्चक्कामि अहागहियन्नंगएणं दिव्वंतिरिढं माणसियं एगविहं एग
विहेणं पच्चक्कामि दव्वउ खित्तउ कालउ न्नावउ दव्वउणं मेहुणं खि
त्तउणं इब्बवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
न्नंते तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चक्कामि
धणधन्नाइ नवविहवत्नु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
हियन्नंगएणं तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ न्नावउ दव्वउणं नवविह
परिग्गहं खित्तउणं इब्बवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवं न्नावउणं
जावगहेणं नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ५ ॥
अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चक्कामि तंजहा दव्वउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दव्वउणं दिसिपरिमाणं खित्तउणं धारणाप
माणं कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
व० तावअन्निग्गह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंन्नं
ते तुम्हाणं समीवे न्नोगोवन्नोगयेन्नोयणउ अनंतकायबहुवीया राइ
न्नोयणाइं परिहरामि कम्मउणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
इं बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायान्नियोगंच परिहरामि तंजहा दव्वउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दव्वउणं न्नोगाव न्नोगवयं खित्तउणं इब्बा अन्न
त्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंन्नंते तुम्हाणंसमीवे
अन्नत्थदंमं पच्चक्कामि अववज्काण पापोपदेश हिंसोपकरण
दाण पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंमं जहासत्तीए परिहरामि तंज
हा दव्वउ खित्तउ कालउ न्नावउ दव्वउणं अन्नत्थदंमं खित्तउणं इब्ब
वा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणंनगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा स त्तीए पडिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वयं सत्तसिक्खावयं दुवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सव्वस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख ब भंडी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ भविश्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पुंडरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि, आचारज भगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवज्झायाणं रे छठ्ठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल र वहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी भगति करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयकारीणं विनय वडानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ वारमे थानक रे नमो बंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उपध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं ज्ञणवूं थापिये ॥ १ ॥ नमो सुअन्नत्तीणं रे जगणीसमे ज्ञविया सुणजे, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पन्नावगाणं कही, संघज्ञगती रे यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस जली एक षठ मासि कीजीये, जपवास करिये बे सहस्स गुणिये पमिकमणे लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये, आरंज्ञ वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेणे नामकर्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणांगे रे सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास जदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने हढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थांनक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, ज्ञेटे सहु ज्ञवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस जमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रज्ञु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखमिया, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय ऊलके, शशि सूरज सम ज्ञास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिज्ञुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हांरे में खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखमली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय जन दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घमी तमको अब रहियो, छठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिस्यो संसार जगतमें, मेटो भव दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ ह्रदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ करूखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर डुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंमार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रूषभजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, कायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवें सदा, अणहूते एक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोह आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्धारण गे तुमें, दूर हरो भवडुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावड शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां थूभ जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने कुभ जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे कुभ जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुजनें पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चारडी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो मैं विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोनी मनवा छित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तु- मारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण दीजें ॥ धूंवाम्हे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥ ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंम्हण साहिब, वीनतम्ही अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, जवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मझ र ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आम्हो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाम्हला, कागल द्युं किण हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलतां घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रजु सुखवास ॥ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज बधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जर सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मल्हयारे, मेरु शिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधैं रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रली री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणींद पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनमें व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत्त, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुण० झा:रम्भो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुद्दपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पुग्गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोडे टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, भविजन तारण जेहनी वांणी ॥ परमानंदतणी नीसाणी, तसु भगते मुझ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कुसुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्मदिठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्षतणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक विहि संठविय, करिस धम्म सुयविस्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, भत्तहि भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ ढाल ॥ भव तीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी

सुर मल्हयारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रलो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना वीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद हुकुम कर धरणींद पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनीं व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत्त, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल ऊाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुण॰ज्ञा रम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पुग्गल संगेजेह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोरे टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, भविजन तारण जेहनी वांणी ॥ परमानंदतणी नीसाणी, तसु भगते मुज मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कुसुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥(एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्मदिठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्षतणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक विहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, भत्तहि भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ ढाल ॥ भव तीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी

भावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आजबंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरभव उदार, भरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्जल सुंदर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्थे, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांभले सो भागी ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्राउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ- णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भवअमविय पारग सत्थवाह, केवलना णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अम पय समुहा आवि तत्र, कर अंजलि

प्रणमिय मन्न सत्थ ॥ मुख भाषे ए करण आज सार, तिय लोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समांन, मिथ्या विष चूरण गरुडवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समत्र, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुउ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कत्थव करेवि, तब देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तब रंभा गीत गांन, सुरलोक हुउ मंगलनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे उछव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइश थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खडा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुखकार, नरखित्त मंडण डुह विहंडण भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख उछव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि विशेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींजणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि मज्जणकार ॥ वर राखडी जिन पांण बांधी दिये इम आसीस, जुग कोडिकोडी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उलालानी ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता धरे, सुभ लगनेजी ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे, तिण अवसरजी इंद्रासण पिण थरहरे ॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उच्छवकाल जांणी अतहिं आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण भगते ऊमह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद करावए, सुरलोकेजी घोपणा एह दिरावए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुन अछे, तसु भगतेजी सुरपति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउच्छव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांभलजी सुरवर कोडि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कृतपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय आपिस आतमा पुन्ये भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोडिजी जिन दरशणनें ऊमहे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोडकोडी नाचती वलि नाथ सचि गुण गावती, अछपरा कोडी हाथ जोडी हाव भाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम द्ये आसीस ए, अम त्रांण सरण आधार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पांडुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि वणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाभणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, छत्त चामर सिंहासण सुभतरा ॥ उपगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवै, आगमे भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरिय करि कलश कर देवता, गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे भक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उछंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा॥ हंहोदेवा अणाइकालो अदिठ्ठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिछत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिमिविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्ठो२ हिंयकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पभणंति वण भवण जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइउछगा॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुय२ इंद आदेस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदभुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पारग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अभिषेस ॥ ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हामे ॥ आतम निरमल भाव करंता, वधते सुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तबईसाणसुरिंदो, सक्कंपभणेइकरिसुपसाउ ॥ तुम्हअंकेमहताउ, खिणमित्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासक्किंदोपभणइ, साहमीयवछलम्मिबहुला

हो ॥ आणाएवंनेणं गिएहइ होनकयत्थान्नो ॥ १ ॥ (कलस ढाले) सोहन सुरपति वृषन रूप करि, न्हवण करे प्रन्नु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि, वर आन्नरण अन्नंग ॥ १ ॥ तब सुरवर बहु जय२ रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, न्नांज सु हिव न्नवफंद ॥ २ ॥ कोम बत्तीस सोवन नवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रन्नुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राखज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति न्नगते सहित नंदीसर, करे जिन न्नक्ति नदार ॥ ५ ॥ निय२ कप्प गया सब निर्जर, कहता प्रन्नु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इन्ना चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतर गन्न जिनआणा रंगी, राजसार नवझाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन न्नगते गायो, जनम महोन्नव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो नलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा न्नगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विन्नाव निज न्नावमा, रमता सिव राज ॥ इ० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रन्नु, केवलनाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जन्ममहोन्नव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां न्नव पार ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही सुत्र मझार ॥ इ० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल न्नासन न्नास्करं, जगत जंतु महोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि विसुद्धये ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चंदन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्च्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरंचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संबर भावसु धूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ भविक निर्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतु भाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधति नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतन भाव विलासकं ॥ सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति भाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफल व्रज ढोकनं ॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्घ) इति जिनवर वृंदं भक्तितः पूजयंति, सकल गुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व मुद्भावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौक्षं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्च्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ प० वस्त्रं यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकम तथा केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डाले मुखकोस वांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भलै भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर सिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार ॥१॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि सुचिंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद॥१॥ गाहा॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५॥ मालारोहण ६ व न्नयं ७ चुन्न ८, पम्हागय ९ आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुथ वंसुधरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अठमंगलयं १३॥ धूव उखेवो १४ गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपदि परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोज० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअ वारिवारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसमांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंद जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

सी पूजा साचवै, श्रावक शुभ्र परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु नवे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण ब्ब्योरी सुधारस, तपत बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभुकुं विलोक नमि जतन प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत, पंककु चरष जिम घनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि भवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिल्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ्र मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगभर करतां, आस फली मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकम भेलीये, कर लीये हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचोलिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे देवा, भाल कंठ उर उदरंत रे ॥ डुख हरै हांरे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजीये ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरे, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरे, तिम करै हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजिये ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शसिरता संग ॥ चित्त खेद सम उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगे, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर खंधै सिर भाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विबुधपति अथ मेरो कर त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगे ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि करो सुललित पूजा, जैसे गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोडी ॥ कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधे अधिवासिया ए, हांरे अइयो० ॥ कनक मंडित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ हांरे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें, वस्त्रयुग पूंज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैराडी ॥ देवडुष्ययुग पूजा वन्यो है जगतगुरु, देवडुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥ तूंही है सबहि हितु तूंही है मुगति दाता, तिण नमि २ प्रभुजी के चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवडुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सब राड दुख संसय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रभुजीकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोडी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हां हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हां० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजे जिन अंग नवगू ए ॥ हां० लाभि नवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अंग गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ मेरे प्रजुजीको पूजा आनंदमेलै, पू० ॥ वासनवन मोह्यो सबलो ए, संपदा नेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासे, पूजिथे जिन राज तत्ताथेइ, चतुर गति फुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासरूप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥ प्रजु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई वरणें, मन मोहे री माइ वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनचरणै ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रजु हम सरणै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विषै हां० पं० फुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति नगति नगवंतकी, नविक नरां हांरे न० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छट्ठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ बठो पूजाए बती, महा सुरनि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी आपे गले, जेम टलै फुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुजरी ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ भला पा० ॥ मरुक दमणाक वकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाल पाडल भली ए ॥ भलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मोगरा वेउला मालती, पंचवरणे गूंथी मालती ए ॥ भलां गुं० ॥ हे माल जिनकंठ पीठे ठवी लहलहे, जाणि संताप सब पालती ए ॥ भलां ल० ॥२॥ इति॥ राग आसाउरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदे, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदे ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदे ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोम्हरपूजा सब म्हार धूजै ॥ सब अरियण हांरे स० होइ तिम छंदे ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्या सुख, भविक भगत हांरे भ० जे जिन वंदे ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोम्हर पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगे फूल केसरसें अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवडा, सोभे तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौडी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हांरे अ० ॥ कुंद गुलाबसुं चंपको दमणाको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग भैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ दमणाक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जुई वेउलवाती ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी भांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमणा गाती, भैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु ज्ञावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरज्ञि सिखर मृग नाज्ञिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुज्ञ करम चूरीजे जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब सुमतीजन रीझै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधे, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधइ ॥ ज्ञलां१ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से- ल्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर ज्ञाव घन वरषत, सामेरी मति जागै ॥ ज्ञलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौमी ॥ वस्तु ॥ सहसजोयण१, हेममय दंम ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुग्घरीय बाजै ॥ मृडु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल सयल ज्ञाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ नवमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥ आपै दान अज्ञंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधववधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ ज्ञांति वसन पंचवरण बन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू ज्ञणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईजे ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारेमै ॥ दसमो पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अति भंति ॥ २ ॥ राग अधभास गुंडमल्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, कांने कुंडल हांरे अति जुगतै जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ भाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहै मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक भालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसें अलंकरयो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धरयो, अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक द्रव्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोभतो, फूंदे लहकै फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पाडलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिभुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हांरे अ० ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झूंवकाभ्रयं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद झिलै, फू० ॥ असत उसत दांम वघरी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंरूप थंन्न गुब्ब चंड्रोदय, कोरणी चारु विनाण सकै ॥ इग्या रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि न्नजे ॥ ॥ ३॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फूल ॥ हर ण ताप ऊख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग न्नीम मल्हार कमखेकी जाति ॥ मेघ वरसै न्नरी पुप्फ वादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वएयो विकच अनुक्रम चिएयो, अधोवृंते नही पीम पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै न्नमर न्नमरी न्निलै, सरस रसरंग तिण ऊख निवारी ॥ जिणप आगे करै सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग न्नीममल्हार ॥ पुप्फ वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम पन्नणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण थुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीम नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ बारमी पूज न्नविक तिम करै, कुसम विकस हस नचरै ॥ तसु न्नीमबंधन अधरा हुवै, जे कराहिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुप्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै सुमते सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणै न्निल्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लषण समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगे सुथानक

धेर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टलिह करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वर्णी ते रसमें, रसमें ३ हां हो ते० ॥ दर्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पुर्णकुंभ, मत्स्ययुग श्रीवच्छ तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रभु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचपूर ॥ कुंदरुक सेल्हारस सार, गंधवटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस भेलिये, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलिये ॥ वेरलिय दंड कनक मंडित धूपधाणो कर धरै, भववृत्ति धूप करंति भोग रोग साग अशुभ हरै ॥ २ ॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवा क० ॥ धामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत भविकुं, मधमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ भावो अधकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्दनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारीचारी गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गानं श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र बंध धूयो प्रतिमानं, आयति बंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद समान रुध्यो त्रिभुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मान शिव श्रीगीतं, पनरमी पूज हरे डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करे ॥)

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करे, सज सुंदर सिणगार ॥ भवनाटिक ते नहि भमै, सोलमी पूजा सार॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ भावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा सम रूव वेस वयसो मत्तेभ कुंभत्थणा ॥ लावन्ना सगुणा पिकस्स रवई रागाईआ लावणा, कुम्मारी कुमरावी जैन पुरउ नच्चंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठसयं कुमारिकुमरोअ सूरियाभ्भे णंदेवेणं संदिठा रंगमंफवेपविठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥२॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागमदि तत्ताथेइ ॥अ० ॥ डागमदि२क थौंगि२न, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे णु वीणा मुरज बाजे, सोलही सिणगार साजे ॥ तनन्नन्नन्नेईय ॥ अईयो० ॥ घणण घणण घणणण घुग्घरु घमके, रणस्सस्सस्सेईय ॥ ॥ अइयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी फंकार क रणी ॥ सोभंती कुमरीय ॥ अइयो० हस्तकं हावादि भावे, ददन्तां भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाभ्भ रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप भगतें भविक लोणा, आणंद तत्तत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥४॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततघन सुखिरे आनधे, वाजित्र चौविध वाय ॥ भगत भली भगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर मद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरे, पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिवल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव भविक मधुमाधव फेरी, भवनी फेरी नप्पभणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ भवि तूं भण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजे ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय रंग हम गाजे ॥ भवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आबाजे ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, भणी में भगति हित काजे ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजे ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजे ॥ भ० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध हुय गाजे, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजे ॥ भ० ॥ ४ ॥ इति सतर भेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेवीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती भोरहिं कीजे, जन्म२ को लाहो लीजे ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्वान्न खजली मिश्री पतासा ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज२ शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं दिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यांनथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुमममर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्य ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोप ग्रही च्यार छै जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वडवीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने थोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे भव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकालै नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजै, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायै रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यांने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयका

रगाणं, जम्मंजरा उक्क निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेग वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्भवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसहंस समवड़, नमो सिद्ध महागुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥ २० ॥ भ० ॥ सि० ॥ जाणे पिण न सके कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ भ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ ॥ ह्रीँ० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूझै भाव असेप ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽत्थुसरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अस्कंखछत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा॥षट्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना,पंचाचारनें पालवे सावधाना॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै,सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निक्कामो जी भव्यालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण बीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, दुविधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ भ०॥ २६ ॥ सि०॥ वर छत्तीसगुणैंकरि सोभै, युगप्रधान जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे भ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथुंभ आचारज, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवज्झायापद अरचियै, अनुभवरसमो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुत्तत्थ वित्थारणतप्पराणं, नमो२वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंभभूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्तप्रभूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंआकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्याद्वादवादई तत्वसाधक, आत्मपरविभजनकरा ॥ भवभीरुसाधनधीरसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांनसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनविभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भवत्रिणदे जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणे ॥ ते उवज्झाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणे रे ॥ भ० ॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणे, अहितताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिज्झाये रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण सं साहियसंजमाणं, नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंतपयठिआणं ॥ करेसेवनामूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तेनहाकाम भोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअभ्यंतरेग्रंथटाली, हइंमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुभाष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निका मी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्र णमो हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांचइंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे बिध तपसूरा ॥ ए हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढते वाने ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमाने रे ॥ भ० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखे नवि सोचै रे ॥ साधु सु धा ते आतमा, स्युं मुंडे स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ्र रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततत्तेरुइलरकणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिछत्तनासाइसमु ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुईसहजथीशुद्धध्यानं, कहि यैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि चित्रंभ्रवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपैस दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू पी जी॥जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सबल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रग टै अनुभव करुणा उछलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नांम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उ पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश म लहीजै, क्षयउपसमीव असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहियै, समकित दरसन बलिउ रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सड़सठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाइ ॥ आ

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण सं साहियसंजमाणं, नमो२ शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंपयडिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तैनहीकाम भोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअभ्यंतरेग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुभष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निकामी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्रणमो हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूलै भमरो बेसे, पीडा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांचइंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे बिध तपसूरा ॥ एहवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढते वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ भ० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखै नवि सोचै रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततत्तेरुइलरकणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिठ्ठत्तनासाइसमुग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुईसहजथीशुद्धश्रद्धानं, कहिवैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रंभवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेसदाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपी जी॥जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पामीजै तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नाम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै, जिनधरमे दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्रमाण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सड़सठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवे रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञानने, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण सं साहियसंजमाणं, नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंरपयछिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तैनहीकाम भोगेषुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलीबाह्यअभ्यंतरैग्रंथटाली, हइंमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुभष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निष्का मी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्र णमों हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूलै भमरो वेसै, पीड़ा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांच२इंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे बिध तपसूरा ॥ ए हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढते वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ भ० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु धा ते आतमा, स्युं मुंडै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततत्तेरुइलक्खणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिछ्त्तनासाइसमुग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहिवैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रंभवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपैसदाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपी जी॥जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै॥बहुमांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नांम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै, जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्रमाण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सड्सठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुणा, खयउपसम जे आवे रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमांह ॥ आ

राधीजै शुभ मनें, दिन२ अधिक उछाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा रगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स ॥ होइंजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुपट्द्रव्यन्नावा, नहोवै विकल्पानिजेच्छास्वन्नावा ॥ ५९ ॥ होइंपंचमत्यादिसुग्यानन्नेदे, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदइं ॥ वलीज्ञेयहेयानपादेयरूपै, लहैचित्तमांजे मध्यानेंप्रदीपे ॥ ६० ॥ ढाल ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्र काशक न्नावे जी ॥ परयाय धरम अनंतता, न्नेदान्नेद स्वन्नावे जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादसं गी तत्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ न्नक्ष अन्नक्ष न जे विण ल हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ न्न० ॥ ६२॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांतै न्नाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चा ख्युं रे ॥ न्न० ॥६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रध्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ न्न० ॥६४॥ सि० ॥ पांच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश क तेह ॥ दीपकपर त्रिन्नुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ न्न० ॥६५॥ सि० ॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धी रे ॥ न्न० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ उँ ह्रीँ प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजा महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिअखंडिअसक्कियस्स, नमोऽसंजमवीरिअस्स ॥ सम्मावणासंगविवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निराशंसताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्रअप्राप्तमूल्यं ॥ ६८ ॥ होइंजासमहिमाथकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिप्पापथाये, थईसिद्धतेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धिअनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भेद धरमैं यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजैं तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ति पिण वरिउ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिउ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउ ज्ञान आनंद रे ॥ भ० ॥७३॥ सि०॥ बार मास पर्याये तेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ ॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नांम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा: ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म द्दुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधण स्स, दुसज्जअत्थाणयसाहणस्स ॥७७॥ इयनवपयसिद्धिलद्धि, विज्जास मिद्ध, पयमियसरवग्गं ह्रीं तिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढाव यारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले, निकाचितपणें बांधिया तेह बाले ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होइं जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होइं सिद्ध सीमंतनी जिम संके ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवभव सिव जावै देव नर भवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रभा वै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व ता, पर परणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अ क्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आ त्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न वपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स म्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥ निरधार सेती गुणे गुणनो करइजे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनंत म हंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भ विक पूजो मन रली ॥ उवझाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोन्नता ॥८४॥ ढाल॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते न्नवसुगति जिनंद॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ न्न० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि काचित पिण क्षय जाये, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमिये ते ह दीपावे, जिनशाशन नजमंता रे ॥ न्न०८६॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रन्नावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र गटै, नमियै ते तप न्नावे रे ॥ न्न० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ न्न० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न मिये, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ न्न० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोथे खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ न्न० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ ह्वारोधन संबरी, परणित समता योगे रे ॥ तप तेएहिज आतमा, वरते निजगुण न्नोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, न्नाव ते जांणो साचो रे ॥ आतमन्नावे थिर हूउ, परन्नावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दा खी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे ॥ वी० ॥९३॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जांणो रे ॥ ए हतणे अविलंबने, आतमध्यांन प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसें तिलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, वाकी च्यारपद में चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्ट मुजब पट्ट पर नव साथिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढावै ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उछाला पढ वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंदुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्चरुभिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्सुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्रीं० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्भटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्चरुप्रदीपक धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पभंती धारा, भयवारण तूंही सुखकारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्मति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुकम धरै ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांभोवज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ९ ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ उर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भैंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ जर जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. जर मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ जर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. जर जो मृतकको बूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंम नियम होवे, तो समताभाव रख कें संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीके हाथ लगावे नहिं. जर जो मृतकको छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पमिक्कमण न करे ॥

भैंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांमादिकको न छुवे. २ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणों तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पमिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा है.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असद्याय.

१२ अजवालीये पर्कों समी सांफ, पम्वो, बीज, त्रीज, इयारी असद्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असद्याय.

१४ नूमिकंपे प्रहर ८ आठ असद्याय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असद्याय.

१७ आसाढ चनमासा पम्किमण गयाढूंती प्रहर १२ बार असज्फाय.

१८ कार्त्तिक चनमासें पण प्रतिक्रम्या पीठें पम्विा लगें प्रहर बार असज्फाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्फाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्फाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्फाय.

२२ फागण चनमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उम्फे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्फाय.

२३ दंम्को मार पम्ते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्फाय.

२४ परचक्रादि नय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र नणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहम्फे, तो अहोरात्र असज्फाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहम्फे, तो अहोरात्र असज्फाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणनख्रे एख्ले ज्यां पर्यंत मृतककूं न जगावे, त्यां सीम असझाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो मांहे अहो- रात्र असझाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो- रात्र असझाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझाय. अने दीकरीने प्रस वे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विना की जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशि रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर २०, गाठी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवमां प्रहर २४, घोलवमां प्रहर ४, तल्यां वमा प्रहर ४, पूमी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा कृष्ण प्रहर १२, जवार कृष्ण प्रहर १२, बा जरीकी खीचमी प्रहर ८, जवारकी खीचमी प्रहर ८, चावलकी

खीचड़ी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्वान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन १५, वरसाले पक्वान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, व रसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ओजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वड़ी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीथे परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते॥

॥पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणडोरा मंत्राय के बांधै ॥ (ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै. पीछै एक थालीमें १०, एक थालीमें ए, फेर एक थालीमे फेर ए, एसें ३८ नागरवेलका पांन रखै. जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकद्रव्य यथाशक्ति धरै उरन्नी पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नेवद्य लरे२ के गीले उर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीछै दसदिग्पाल के पट्ट ऊपर जलका छींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेल-का पान चढावे ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ ॐ इंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोछवे आगछ२ बलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐइंद्रायनमः इति इंद्रआह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ ॐअग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोछवे आगछ२ बलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ ॐयमाय सायु० सवा० सपरिछदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन० अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिंगृ० उदयम० स्वाहा ॐयमायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ ॐनैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोछवे आग० बलिं० उदय० स्वाहा ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दिग्पाल पूजा ॥ ॐवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू० आ० बलिं० उदय० स्वाहा ॐवरुणाय नमः॥ पश्चिम० ॥५॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ॐवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहोछवे० आ० बलिं० उदयम० स्वाहा ॐवायवेनमः॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ॐकुबेराय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपूजामहोछवे आ० बलिंगृ० उदय० स्वाहा ॐकुबेरायनमः उत्तर दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ॐईशानाय सायु० सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलिं० उद० स्वाहा ॐईशानायनमः ॥ ईशानकूण ॥८॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥ ॐब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

णा सन्निहियाय तेसव्वेविलेवण धूवपुप्फफलवइत्रसणाहिं वलिपम्भि च्छंता तुष्ठिकराञ्जवंतु पुष्ठिकरा संतिकराञ्जवंतु सव्वंजणंकुर्वंतु सव्वजि णाणं संहणप्पन्नावउ पसन्नज्ञावतणे सव्वत्थरक्खंतुकुर्वंतु सव्वदुरियाणी नासंतु सव्वाशिवमुवसमंतु संतितुष्ठपुष्ठिसिवसत्थयणकारिणोञ्जवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखछोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खों लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अेता, ५ पांचमा धूप धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहै. जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बा कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र वजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावै) (अग्निकूणके सामनें) ॥ सदावह्निदिशो नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोऽस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥ (एसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावै) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥ (बलबाकुल चढावै वाजित्र वजावै) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ यमापरांतरालोको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ए ॥ (अथ उर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकवि भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ थोर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकन गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोत्सवे सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअ ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐन मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वा हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्ष० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्ठायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाह्वलि० गन्ध२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह्व लि० गन्ध२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाह्वलि० गन्ध० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह्वलि२ गन्ध२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्म्मशक्ताः, आयातास्नात्रकाले कलुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षमतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, स्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछै यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतंश्रावय२ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः॥(सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछै ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्हते

नमः) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीछे) ॐ ह्रीँ अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीकः क्षः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मैंढल मरोड़ाफली मंत्रायके हाथके बांधै और जब मंडलजीके च्यारुं तरफ मौलीमिंढल बांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोड़के बेठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछे तीन वेर नवकारमंत्रसें मं त्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्ना त्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंडलादिकमें स्नात्रियोंकों प्रथम अवस्य कराणी चाहियें. पीछे मं दिरजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावे अष्टद्रव्य चढावे. पीछे चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपाला यनमः) एसा बोलता हुवा चढावै. पीछे मंडलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे वांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै.) पीछे सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावै.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हें ॥ पहली इरियावही पडिक्कमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे बेठके द हिणागोडा धरतीपर रख के डावागोडा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंघ्रिन मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी थथी गाथा कहे. पीछे बेठके नमोत्थुणं कहके खमा स्रो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदण व० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिन्निर्दोषै रंजितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशांतिजिनन्नक्ताय न्नव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात् द्वादशांगीजिनोन्नवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्रीन्नुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ए ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितडिंबामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १०॥ (ततः श्रीपद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निन्ना चिरंचक्रेश्वरीदेवीनंदतानिवन्नाच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअच्छुसादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः तुरंगगमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्व श्रीपार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोन्नयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रा दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायि का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बेठे चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहैं ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दीपक करै. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै (पीछे) सोने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करै, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणे.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु२ स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तरफ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीछे) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेंढल मरोडफली चारुं तरफ बांधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हंतेनमः॥ इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छींटा देवे (ऊपर) चावलोंकों साथियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चावलोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरै (पीछे) केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूर्सीभूतधात्रीविश्वा

धारेनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे (पीछै) स्नात्रिया मंदरके जीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगमके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐनमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेतिष्ठ२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्टा करकेपीछै सिद्धचक्रपूजा सरू करै॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ७ कर्केतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोल्लसद्बोधा नाव्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजेसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ७ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् निदधेभक्तिनिर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेपतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिनदलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं नग्रोपसर्गैकनिवारणार्थं मन्नर्च्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीँ श्रीं सूरीभ्योनमः स्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालडु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. नपाध्याय पद पूजा पढै (यथा) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राएयनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं नपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ नपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, नमदकालडु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् नदकपत्रगतान्वारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ए ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्दादशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ (नत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, लक्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूणमें दर्शनपदको

थापनापूजा करै इति ॥ पीछै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोकालड्डु, आदि सर्व द्रव्य ले खडा रहै ॥ काव्य पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खडा रहै. काव्य पढै (यथा) सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैहनैरुतेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरुतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥) पीछै) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्वयं ॥ निधाययामिव्यक्तथात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ) निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणभृदाचारसाराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं, स्ततसिद्ध्यैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्च्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनमः (इति मूलामंत्र) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें च्यार दिशिमें च्यार विदि

साँमे एसें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंमलके मध्य जाग में होय जनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीछै) दूसरे वलयमें चूमीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनं तर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (और) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा है उसमें अनाहतपद ॐ ह्रीं णमो अरि हंताणं) एसा पद स्थापन करै (पीछै) एक रकेबीमें मिश्री ल- वंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खमा रहे. अनाहत पदमें मिश्री लवंग चढावै और आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा) (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः) (इहां) १६ दाख चढावै २ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ (ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख चढावै ४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ५ च छ ज झ ञ (ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ड ढ ण (ॐ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ए त थ द ध न (ॐ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ११ प फ ब भ म (ॐ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंता णं) १३ य र ल व (ॐ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावै सब ए६ (उर) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोमें ६४ चोसठ दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिश चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके बीच२में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एकें

क खानेमें २ होय २ होय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरों में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै. उर लब्धिपदका नाम बोलके खारका ४८ चढावै (यथा) ॐ ह्रीं अर्हंणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसव्वोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोकुठ्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोदिठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोदसपूव्वीणं॥१७॥ ॐह्रींअर्हंणमोचउदसपूव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअठंगनिमत्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउव्वणइढ्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐह्रीं अर्हंणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपह्नासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हंणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हंणमोभयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअरकीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हंण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोतत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोघोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोघोरबंभ्रयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोआमोसहिपत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोसव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोमणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंणमोकायबलीणं ॥४८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हंअष्टचालनलब्धिपेदभ्योनमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नांम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका चढावे ॥ (पीछे) मंन्डलजीके गलेमें ह्रीँकारजी स्थापन किया हे (जहांसे) साढातीन नवलाका मंन्डलजीके चोतरफ देके नीचे (क्रों) एसा अक्षर लिखा हे (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दिशायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाड्मिफल चढाव (यथा) ॐ ह्रीँ अर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥१॥ अनारचढावे ॥ ॐ ह्रीँ सिद्धपादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ आचार्यपादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अदृष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ अष्टगुरुपादुकाभ्योनमः स्वाहाः ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दाड्म चढावै (पीछे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐ ह्रीँ जयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ जंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ थंभायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ जयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ मोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अपराजिता

कड्केचढावै ॥ फेर कोहलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंगलीमें (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा बोलके चढावै २ ॥ पीछै तीसरा कोहलाफल) हाथमें ले के नीचै पींहिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें) ॐचक्रेश्वर्यैनमः (एसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा कोहलाफल हाथमें ले के नीचे पींदेके वांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः) एसा बोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछै दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै. बणसकेतो अपणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावै अथवा सर्वको एक द्रव्य सर्व समान चढावै (यथा) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आदि सर्व द्रव्य चढावै १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूणे) ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै (पश्चिमदिश) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ (वायव्यकूण) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ (अधोदिसि) ॐनागायनमः ॥ ए ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ए ॥ (उर्द्धदिशि) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करै ॥ (पीछै यंत्रके पींदीके स्थानक नव कोठा किया भया है जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) ॐसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐसोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोल वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐशनेश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ढींटरंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा करे. पीछे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावे चैत्यवंदन कर थुइ कहकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करे पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे ॥ इति मंडल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये (जब) कोइ श्रीमंत ओलीकी तपस्या करे तब तो छए महीनें मंडल पूजा विस्तार विधीसे करता रहे ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उच्छव के साथ मंडलपूजा कराके नव२ उपगरणोसें उद्यापन करे. जलजात्रादि अठाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारे (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरूखाते चढावे, ऋद्धिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (और) पंचायती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंडलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहे ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणभद्रस्वामीसर्वज्ञाय नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १ए ॥ रत्नेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र प्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ ऋषभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिप्रभसर्वज्ञा० ॥ २ए ॥ अजितप्रभसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ डुक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ मल्लिनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंभूत सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णचंद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुडगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीदेवनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रभानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रभनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वरसर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रभाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीसहस्राभसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीविऋषिकसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

इंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरभूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रन्नसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलन्नद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीनमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २८ ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ९ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नाम्नसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीन्नी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुन्नडसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीन्नडगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुढधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मन्नूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजितनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ (धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननांम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननांम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरते जिननांमः) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननांम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धातकीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव तेजिनना०) आम्राह्निकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीबलिभद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ तत्पद नाम्बी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाग्र्थंकासरदातणो, उर धरि समरथ शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु चि व्यक्ति ॥ २ ॥ बे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि लेहनें, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु प्रतिदिशा, कथनाऐं युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि श्वावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग बे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

लिये, द्वीप सकल गुणखांस ॥ अर्ध भाग जसु भरतमें, गिरि युग जलद समांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हीस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, भाष्यो श्रीजिनभाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनरा य ॥ ते हूं प्रति विजये भणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अजित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ भविकजन ध रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां णी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ भ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साव जिनंद ॥ वि चरया महियल बोधता जी, विजय मझार सनंद ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच२ भरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरैं जगजन ता रता जी, समरयां संपति थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ भ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल भाधरू जी, कनकवर ए बत्तीस ॥ भ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित विमल प्रकाश ॥ भविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचा स ॥ भ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुभातमां जी, धरिये भाव विशाल ॥ भ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी भक्ति ॥ भ० ॥ ए ॥ ए त पविधि भवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पशुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवल्लन्न कथनधर न्नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-न्न जैनचंद सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७,अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)—सातावे दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोन्नर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोन्नर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोन्नर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोन्नर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, न्नयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुगंछमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपूंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृता

४)–देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)–देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदारिकबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककार्मणबंधनर० ६८, वैक्रियश्बंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणबंधनर० ७०, आहारकश्बंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककार्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणबंधनर० ७५, वैक्रियेतजसकामणबधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कार्मणकार्मणबंधनर० ७९, तेजसकार्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्रऋषभनाराचसंघयणर० ८६, ऋषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्त संघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुकरसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुररसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, न्नारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, षरखराफरसर० ११४, सुकमालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया० ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभविहायोगति १२२, अशुभविहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, उसासनामकर्मर० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अगुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थंकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनामकर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बादरनामकर्मर० १३३, पर्याप्तिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म १३५, थिरनामकर्म १३६, शुभनामकर्म १३७, सौभाग्यनामकर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०, यशनामकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३, अपर्याप्तिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अथिरनामकर्मर० १४६, अशुभनामकर्मर० १४७, दौर्भाग्यनामकर्मर० १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयशनामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृती २) उच्चैर्गोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर० १५४, लाभांतरायकर्मर० १५५, भोगांतरायकर्मर० १५६, उपभोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयडीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद विदघन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयडि विस्ता

२ ॥ वरणूं नविजन हितनणी, प्रवचनने अनुसार॥ ३ ॥ (ढाल ॥ ॥ रामचंदके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नांमे निन्न कह्या री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री॥ आजखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो री ॥२॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय, तीस कोमाकोमि नणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस कोमाकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, शिव मोहनीय थुवे री ॥ ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मांन नणयो री ॥ ए नत्कृष्ट थिति जोम, केवली काल गएयो री ॥५॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म, अंतरमुंहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री॥ ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वदे री ॥ बारे महूरत मांन, शास्त्रानुसार मुदे री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच२ नेद जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो नेद नदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नव नेद, आयु च्यार विधे री॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अडावन्न, नत्तर प्रकृति कही री ॥ अष्ट करमना जांण, सर्व विकल्प सही री ॥ १०॥ ढाल ॥ नण दल चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण बे, दर्शनावरण प्रतीहार, नवियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु लिप्त असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ नविय० ॥ १ ॥ मदिराछाक समान बे, मोह सुनट महराण, नवि० ॥ खोमे बंदीखांन सारखो, आयुकर्म प्रमाण॥ न०क० ॥२॥ चीतारे सम नांम कहीजे, गोत्र कुंनार समांन, न० ॥ श्रीघर नंमारी सम दाख्यो, अंतराय कुध्यांन ॥ नवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए नावना, वीर वदे व्याख्यान, न० ॥ कर्म संसार स्वरुप बे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ नवि० क० ॥ ४ ॥ मिछ सास्वादन मिश्र विरति, देसविरति प्रमत्त,

उ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सवीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ उ० क०, ॥५॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, उ० ॥ सुहुम संपराय दशशम ठाणे, विन मोहायु षट बंध ॥ उवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, उ० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ उ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, उ० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, योग युगत च्यार होय ॥ उ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; उ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय ॥ उवि० क० ॥ ए ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार, उ० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ उवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन अथा, चउत्थभत्त तप सार, उवि० ॥ तप उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ उवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण भला, अष्टमंगल वृद्ध थाल, उवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ उ० ॥ क० ॥ १२॥ इम आराधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, उ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी भरतार ॥ उ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचनें स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवझाय तत्त्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा भणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो, नव निधि सिधि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अरकेरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपाई, सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी बेअ, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, बीजे भव राज-सिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्र, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीरवव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥ नवकारने परभाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥ ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ गामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम न मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्टित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्ष करे नरने तिहां, द्ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर छेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

न्नद्रा नांमे नारि सुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पछतावे, चोर समीपे छानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रन्नावे वंछित सीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे उधरियो ॥ ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंडक पापनी ठेठ ॥ एकदा चोरी करतां फाव्यो, राजा हुकमें सूली घाव्यो ॥ ४ ॥ हुंडक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार दीधो नपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमें जे कीधूं, सुन्नद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥ न्नरतनृप न्नावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, बीजलो वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष नपाडी चलावियो ए, अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाछरूया एक चारतो ए, नदिय प्रबाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप अनेक, न० ॥ बुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ तीर्थंकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२ अधिकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयाकुसल वाचक वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुन्नदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका जितना अक्षर होय नतनाही नपवास करे ॥ नस पदका ।२०००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा वास ७ ॥ ४ । णमोउवज्झायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सव्वसाहूणं ॥ उपवास ९ ॥ ६ । एसोपंचनमोक्कारो ॥ उपवास ८ ॥ ७ । सव्वपावप्पणासणो ॥ उपवास ८ ॥ ८ । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥ उपवास ८ ॥ ९ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ९ ॥ एसें नवकार मंत्रका ६८ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वह्मानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उच्छव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रभावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुभभाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण भणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणैं परिक पंचमि दिणैं, नाण संभवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरभवणथी बारसे, पउमपह जम्म वलि दिरक तसु तेरसे ॥ वीर सिवमा वसें परिक हिव ऊजले, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार सि मिले ॥ २ ॥ भास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि यो, सोइ छठे रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-यम आदर्यौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यौ ॥ सिर वर्यौ मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पामीयो ॥ इग्यारसें वलि मल्लिजिणने जम्म दिरक सुनाणीया, वलि मल्लि दिरका नाण छठे अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संभा विये, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण भाविये ॥ ते परि सवि रे गीता-रथ सद्गुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सदहे ॥ सदहै

सहूथै ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चनद्दसि जनम संभवनों सुणौ ॥ पूनिमें संभव दिरक पांमी दया धरि जगजीवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिरका पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेरसि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो केवली, पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनिमें धम्मैं वसें ॥ माहाइ छठे पनम चवियो बारसैं शीतल थयौ, वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमैं, जिन पांमी रे माहसुदें हिव अनुक्रमैं ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपूजनों, कल्याणकरे जनम गंण अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमैं मांनों बिहू त्रीजे विमल धरम सुजामिया, श्रीविमल दिरका चनथि अठमि अजित जतपति पांमिया ॥ नवमियें दिरका अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथैं सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥६॥ ढाल ॥ फागुण वदि छठें सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंद्रप्रभु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्रय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिझंस तणो चवदस वसुपुज्ज, जम्म हुउ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चनथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्रय वय उब्भव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पखि चनथि नाण चचवणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने संभवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नांण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवैं वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना
ह केवलसिरि पायो ॥१०॥ ढाल ॥ हिव वैसाख वदे पडिवा दिन,
कुंथु सिद्ध शीतल वीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशी
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिक्खा नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, ध
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउत्थ ॥ १२ ॥ सुम
तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ
णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पक्खि
छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ
सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥
ढाल ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि तिरि
विमल ॥ मुक्ख नवमि नमि वय गहण, सेय छठे चवण ॥ वीरनो
अठमि नेमि मुक्ख चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधु
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमहणि मुग
ति रमणी वरयौ ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अह निम्मल वीजै, सुमति
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म ढणीजै ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर ने-
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्वय पूनिमरयणि, चविउ गु
णमणि वास ॥ १७ ॥ भाद्रव वदि सत्तमें संति ससि चवण ढव
क्खय, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गन्न ॥ हरण अम्मावसी ए, नांणी नेमीसर ॥ १० ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कल्याणक रासि ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत न्नत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कल्यांण नीते कोमि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कल्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच न्नरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कल्याणक हुवे इण दिन सुर करे उत्सव घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कल्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कल्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताक्षर संलक्ष्० यह ऋषिमंमल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रन्नात समय सुणे. ऋषिमंमलमें जो मूल मंत्र हे सो शुन्न दिन शुन्न घमी हाथमें फल फूल न्नेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. न्नेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करे. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करे, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद उजमणा करे. उजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणे. पीछे शक्ति होय तो विधि संयुक्त ऋषिमंमल स्थापन करायके पूजा करे, विशेष न्नक्ति करे तो २४ प्रकार पूजा करावे, गुरुन्नक्ती करे, साहमीवत्सल करे. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ ऋषिमंमल सुणणेवाले पूजणेवाले न्नव्यजीवके घरमें कन्नी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उत्साह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल न्नरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऊपन्न चरण अंगूठमो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले काउसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खमा२ केवल लह्यो, पूजो जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंमे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, भुजाबले भवजल तरया, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ॥ नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंमनें, हृदयकमल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तीर्थंकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ॥ वसिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे, जल विन कुंभ न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रमवमिया संसार ॥ ३ ॥ भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दान ॥ भावें भावना भाविये, भावें केवलज्ञान ॥ ४ ॥ पांच कोमीनें फूलमे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, वरत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिंनाम- तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन हृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्मकायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एषां योगथी समयें एक, हीना संख गुणो कर छेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणसें गुण सथै देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ ताजै भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण भूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुव्व पत्तयपसंग सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निर्गुण निरागी ॥ चेतनरूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल हो० ॥ उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममें, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै भवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलैं गुण श्रेणिता, म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नगरज्जुसें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इकु गुण नव परमाण योजन लकें कही, म्हा० यो० ॥ वर्त्तुल विशदाभास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्षथी हीन भणी सिद्धांतमें, म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपभ्भारा नाम सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरिद्धो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म नगेहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव पद ध्यावो केवलज्ञानी जासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें पम्त, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खम्गथी जेणे, हण्यो क्रोध सुजट सम देणे हो, गणपति गुण पेखी ॥टेर॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोजन मद्दव वयरे हो॥ ग० ॥१॥ दंजरूप विसवेली, वर अज्जव कीलै ठेली हो ॥ ग० ॥ मुर्च्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्र कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहामल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या, सुरवर पिण जिण खेद्या हो ॥ ग० ॥४॥ रस कृति गुणथी लीणो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संजम पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता धन भंजन । जिन वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए। आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने२ दूरी हुयने, चेतन भापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं मुझ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुझनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगे निज पंचेंडीनो, रचना चरम भुलाणो ॥ नाणावरणी खयउपसमसें, भाविंडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ द्रव्यै ते परजाते कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क मैं उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णकी समता लेती, में भयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥ उप कहियें हणिथो भवियानो, अधियां लाभतआय ॥ आधीनांमन पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सठताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपैं तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

नये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण भरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालन२ मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चउगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहे, सा० छठे पूरब कोम हो मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु काले गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रचलानिद्रामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी, षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवालै जी, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तव करि लहे, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लक्षन अभिराम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके वाग आंवो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध जणयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लछण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज सप्तम नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही छांह लहेरी ॥ उपशम क्षायक भेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ भवसायर है अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद भावे अप्रमाण, नाण चारित्र भलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाभें कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपण्णत्ततत्त सूधा सरधै समकित गुण उजवालै जी, भेद भेद करि आतम निरखो पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो भवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ भाव मिलापसें जिन अनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ भव गुण पज्जवि उहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल भांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, भविजन अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ भक्षाभक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें जेण विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय है इंद्री सारू,

सेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ इंद्री मण केवल हे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ श्रयविजस्स बलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुभ अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसे जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखे जी ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंद्री जनित कहियै लहियै गुण गंभीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो भविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करे शुभ भाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इखु कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निरसंग ॥ सुग्यानी साभलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्यं कारण भाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जोगसुधामता, लब्धा संख स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते द्वौते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ प्राप्ता घस्र प्रकारता, सत प्रभृतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तद्धेधन रूपी भलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावे आतम ध्यान लगावे जी, बारे जावना सूधी जावे सागर पार ऊतारे जी ॥ खट खंरू राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारे जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारे जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषजादिक तीर्थनाथ, तजव सिव जाण ॥ बिहि अं तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दग्धन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इछारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जण्या जिनराजें, बाह्य मध्यतणा जग काजें रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स मता सहितें जिनतें जारी, जली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुक्कर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इछा रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक श्रीहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख भाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमदृषभ सर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाद्य, नाभिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषभ स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, भगवं-स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वर्यात्, संभवः संभवाभिधः ॥ सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥ ॥ ६ ॥ इति शंभव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्व, वीतरागं जग-त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यभं ॥ ७ ॥ अभिनंदन नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया भक्त्या, सनालोकेभि नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यभिनंदन स्तुति ॥ मेघाभिध धरि त्रीस, तन यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण भृद्धेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ भविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराभिव नृपोद्भुतः, पद्म लक्षण धारकः ॥ ११ ॥ भवाब्धौ भव संकीर्णे, दुस्तरे पततां नृणां ॥ त्राणाय सततं देव, पद्मप्रभ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रभ

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ट नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्मणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, स्तं नौमि सदा विभूं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिछ विज्ञान, तमोव्यूह वि नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ (अत्राद्यश्छत्रबंधः श्लोकः)॥ संस्तुतोवोवदस्वाशु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वांछितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरा मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोववातोयो, मायौमकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ)॥ श्री मछीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांह्लां कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राक्कृ तंवृंजनव्यूहं ॥ इष्टंशंभोद्यदेविभो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु तिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यभः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज स्रं, खड्गलांछिनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरीवार्त्तिरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिछे दितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंद्दि, वासु पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इ ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पुत्रकल्याणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदांयस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपुत्रस्य, सुयशाःसिंह सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्धानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्राद

योपियस्यांतं, गुणानांलेन्भिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक, भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रभसर्वज्ञ, धर्मनामाभिधेश्वरः ॥ २९ ॥ तवाशोपिपुरश्चारी, भृतलेयास्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधीसं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णाभं, कलायामिजिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनाथाख्यं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्रीयुताया: श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यभ ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागलक्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, भवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ सुदर्शननृपोभूतं, नंदावर्त्तांकसंयुतं ॥ अंभोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसुवर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यंप्रभुतयाजिनं ॥ चरीकर्म्मिनमस्तस्मा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥ कुंभप्रभावतीपूत्रो, नीलवर्णोघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त, नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ छत्रत्रययुतोभाति, देवयोविष्टपत्त्रये ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ सुमित्रभूपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्म्मलक्षणभृद्धर्म्म, दायकस्यामलछवे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणकर्म्मारिमंडल ॥ देहित्वंमेव्ययीभावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिरण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये, समुद्रविजयोभवे ॥ हरिवंसहरौशंभो, शंखांकेकमलप्रभे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्रत्यक्तेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेनाह्वनृपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनहितायेन, कमठस्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनासनचिन्हाय, नीलवर्णायसंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्के, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजार्हत, कल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोहेभदहनेमृगात् ॥ त्वद्भक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः ॥ २४ ॥ इति श्रीक्षमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः॥

अथ नवपदजीके उलीके देववंदनमें कहणेका चैत्यवंदन पहली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध मरूपी रे लोय ॥ अहो अ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजे पदै, वंदू अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं वडभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उलखै, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुन्न न्नावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परन्नाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक दस धर्मनो, जेह बे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे वलि तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर न्नेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुन्न न्नावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप श्रीपालतणी परें, मन वंबित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥ ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परें, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥ व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥ अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ न्नविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यो नवपद ध्यान ॥ न्न० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ न्न० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोन्नता जी, साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥ न्न० ॥ ३ ॥ संबर साधना चरण बे रे, तप उत्तम विधि दोय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ न्न० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुन्नव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ न्न० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, भविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जन्त्र अरु तंत्र घणे रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य भं डार भरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणो आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इय जिन भए आगामी होयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज भज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर द्वार मत भमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र शुभ भाव, हिव कारज सि द्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न मियै सिद्ध सूरी उवझाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

ज्ञग विधि चारित्ते वुध विध तप मन ज्ञाय, ये नवपद ध्यावता नि रुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे ज्ञाष्यो एह विचा र, ज्ञविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणन्नंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ नुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ द्धि निद्धि उवव करि चारित्रनंदी मम ज्ञाय, जिनचंद सूरीसर खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू करे, कन्नी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीछे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि काल पूजा करै. प्रन्नातसमें राईपमिक्कमणा करके पीछे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीछे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पूजा करे, पीछे केसरचंदनसें पूजा करै. गुरु पास आयके अब्जुठ्ठिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प चक्खाण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीछे अरिहंतके बारे गु णोंकों विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हें. सब गुणोमे इच्छा मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
६ भामंमल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
७ दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चक्खाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीछै पडिक्कमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही पडिक्कमके चैत्यवंदन करै, फेर र.इ संथारा गाथा सुणें ॥ निद्रा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रभात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग है इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसें आंबिल करै॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण है. ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥

२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके आठ लोगस्सका काउसग्ग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करै. आचार्यपद पीले वर्ण है इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै. आचार्यके ३६ गुण है. छत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते है ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥

३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥

४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ०॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य नावना नावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण नावना नावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ०॥
२९ अन्यत्व नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव नावना नावकाय श्रीआ० ॥

३२ संबर न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३३ निर्जरा न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३४ लोकस्वरूप न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३५ बोधकुर्लन्न न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥
३६ धर्म्मकुर्लन्न न्नावना न्नावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह उत्तीस नमस्कार करके अन्नत्रूससि० कहके उत्तीस ३६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ उँ ह्रीं णमो उवझायाणं ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
५ श्रीन्नगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
८ श्रीअंतगमदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२२ अबिंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपुर्व पठनगुण यु० ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
२५ लोकबिंदुसार पठनगुण यु०॥इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः॥

इस तरे २५ नमस्कार करै. खमा हो के अन्नत्थू० कहके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. साधुपद काले वर्ण है इस वास्ते उरुद के बाकलोसें आंबिल करै. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ एकेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ चोइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करे, २७ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाणेसें १०८ होता हे, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके सम्सठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद्द० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्तरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधूवर्ग विनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद्द०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद्द० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥

२१ शंकादूषण रहिताय सद्द० ॥

२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्द० ॥

२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद्द० ॥

२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद्द० ॥

२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्द० ॥

२६ प्रवचनप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

२७ धर्मकथाप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

२८ वादीप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

२ए नैमित्तिकप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

३० तपस्वीप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्यान्नृत्प्रन्नावक सद्द० ॥

३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रन्नावक सद्द० ॥

३३ कविप्रन्नावकरूप सद्द० ॥

३४ जिनसासने कौसलता न्नूषण सद्द० ॥

३५ प्रन्नावनान्नूषणरूप सद्द० ॥

३६ तीर्थसेवान्नूषणरूप सद्द० ॥

३७ स्थैर्यतान्नूषणरूप सद्द० ॥

३८ जिनसासने न्नक्तिन्नूषणरूप सद्द० ॥

३ए नपशम गुणरूप सद्द० ॥

४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥

४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥

४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥

४३ आस्तिका गुणरुप सद्द० ॥

४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद्द० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०॥ इति स०॥
॥ इस वजे सफसठ नमस्कार कर खमा होके अन्नत्थू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहैके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शेनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेकरीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनैनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः॥

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पंण ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खडा होके अन्नत्थ० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसीसें तंदुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

११ संयमधर्म्मरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ बंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ बेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रभक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंडगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुड्यंतरसहित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ उणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायश्चित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खमा दे के अन्नत्थूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पच्चास भेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥

४ अभ्यंतरउणोदरी तपभेद त० ॥

५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

ए कायकिलेस तपभेद तप० ॥
१० रसत्याग तपभेद तप० ॥
११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥
१३ आलोयण प्रायछित्त तप० ॥
१४ पडिक्कमण प्रायछित्त तप० ॥
१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे० ॥
१६ विवेक प्रायछित्त तप० ॥
१७ उपसर्ग प्रायछित्त त० ॥
१८ तप प्रायछित्त त० ॥
१ए भेद प्रायश्चित्त त० ॥
२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
२१ अणवस्थित प्रायछित्त त० ॥
२२ पारंचिय प्रायछित्त त० ॥
२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
२५ चारित्र विनयरूप त० ॥
२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
२७ वचन विनयरूप त० ॥
२८ काय विनयरूप त० ॥
२ए उपचारक विनयरुप तप० ॥
३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
३२ साधू वेयावच्च त० ॥
३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥
३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥
३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥
३७ संघ वेयावच्च तप० ॥
३८ कुल वेयावच्च त० ॥
३९ गण वेयावच्च तप० ॥
४० वायणा तपसेनमः ॥
४१ पृछना तपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥
४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥
४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद भेदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नत्थूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीछै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घमी देखके अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड्व्य लेके नवकार गुणता थया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीछै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थे गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीको लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढमें अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद२ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजब पीतुरेसे नरके चढावे पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे वलयमें ४० बूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव वर्ण फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्वान्न रंगरंगके चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. उर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणे मंमल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपदजीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजित्र बजावै, महा महोछव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्रमुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधी आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानजक्तिके कारण ए थूगा ए घोटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव झिलमिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रुआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुन्नखेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे–बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोछव आते हें जिसमें चेत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते नये अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें नक्ति करे, पीछै नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं सफल मानते नये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी (१४) पीछै (४१) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोछव करे. लेकिन् यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीनी जावे, पहली पीछेनी करलेवै ॥ यह नवपदजीकी उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके नव्यजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली नगवान नद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते नव्यजीवोंकों यह तप प्रमाण हे, उर जो अनवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंमन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें नमेंगें. सूत्रोंमें नगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें उर उन सूत्रोमेंसें एक हरफकेनी यथार्थ अर्थकूं तोमके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अनिन्नदसपूव्विणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा नयेकूं नगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम भगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते भद्रबाहु उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त भेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहियें, एक क्रोम्न पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अभी भंडारोमे मोजूद हे ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक भव्यजीव) अष्टापदजीकी उली करते हें (जिसमें) पडिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै. (इतना विशेष हे) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल (वा) एकासणेका पच्चरकाण करै, पीछैं पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंडल रचै, सो विधि लिख्यते हें ॥

पूर्व

१ । २ ।

दक्षिण ३ । ४ । ५ । ६ ।

त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
भद्रः

उत्तर १५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।

७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।

पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमउ अठउत्तराई ॥ दस पुव्वाए दो अठ, वंदमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वाइं उसभमजियं ॥ दक्खिणउ संभवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंडलमें बणाणा. इहां कांकणमोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंडलवत् जाणना. नवग्रह दशदग्पाल थापना करे. पीछे एकर काव्य पढर के एकेक कोठेमें एकर

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशत्वं, नंद्यायत सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतीनेता, नंद्यायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंभक्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्बोधितंज्ञान, कंद धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंभवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभवस्वामी० ॥ ३ ॥ येभिनंदनतेतीर्थ, राजपादसभाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसभाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअभि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीद्वयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाहः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूषेव, भूरिशोभात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वं तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्प्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प्पकोप क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेदेण, यैरभाजिसमुन्नतः ॥ यैरभाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐ श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूभाजां, परमोक्षगतिर्भवा न् ॥ अनंतानसत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्ण, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर त्वंदिरहंमोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीविमल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्रयोलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनंत० ॥ १४ ॥ नाशुतस्लवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजिनःधर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥ ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक, सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥ कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाद्दतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, विधुतारोवृषाद्दतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७ ॥ येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽरनाथकुधीर्नव्या, वनवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥ नांह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेन्नियतेमल्ले, प्रतिपन्नसुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥ श्रीसुव्रतजिनाधीश, मक्षमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवध्, मक्षमालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥ देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेन्नत्त्या, सहामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥ ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षं, शमितादानवारणा ॥ श्रीनेमेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाक्षम, महाहारतरंगिताः ॥ नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ विभ्रन्नमेघुनिस्सीमां, तत्वांनःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पोवै

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीछै बलबाकुल देके दिग्पालोंको विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चैत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक भया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करै, एसैंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये. इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पूंजसें सेत्रुंजयपर्वतकों स्थापन करै (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै. अक्षत मोतियोसें पर्वतको वधावै, केसरचंदनसें पर्वतको पूजै. सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहई॥चउछठ्ठअठम, दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्ह्वण करावै, पीछै श्रीसंघ खडा होके (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै. यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० और फल

फूल यथासंभव चढावे. धूप खेवे, कपूरकी आरती करे, पीछे सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० खमासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंडरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करे. पीछे (श्रीसेत्रुंजय पूंडरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उच्छव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करे १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र वजावे ॥ इति प्रथम पूंजा विधि ॥ अब इसी तरे (वीस । तीस । चालीस । पच्चास । यह चारों पूजाके भेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करे ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करे. चोथी पूजामें १० की जगे ४० की विधि करे. पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करे. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपूंडरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करे. उत्कृष्टसें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढावे. जघन्यसे पांचूं पूजा किये पीछे १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करे. गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछें सिद्धगिरीकी जात्रा करे, ग्यानपूजा करे, गुरुभक्ती करे, साहमीवच्छल करे (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीऋषभदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपूंडरीकजी पांच कोडी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तभये. (इसवास्ते) भरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्री पूनमकों आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया. यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पूत्र पूत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परभवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होयेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसाउलै, पुंडरगिर रे गाईस हूं सुभ भाउलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण छै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंडरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै भलो ॥ (उल्लालो) गुण भलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंडरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोडि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंडरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै, बहु भाव भत्तै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ भावना भावै तेण दिवसै पंचकोडि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ छट्ठ रे अट्ठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसै ॥ (उल्लालो) मन वसै पूजकपूरधूपे मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअठै परंपरा, ते मोह माया कपट छंमी सुणो जवि यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजे ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियरू धरेवा ॥ ७ ॥ ऊन्ना थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला पुप्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप ऊखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंद सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्सनउजोय दसे वखाणु, वेला प्रमाणे अहिण्ग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारैं धूपपूज एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गणीजे, एक चित्त सूधे शुन्न पून्य कीजे ॥११॥ धजातणी रोप तिहां करीजै, एकेक धूपे अथवा गिणिजे ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पछी प्रनु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवच्छल करो जविका जवसमुद्र लगावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहू लहै, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥१३॥इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वडे स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुन्न घमी शुन्नदिन गुरूके पास नंदीश्वरतप ग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस२ (५२) बावन उपवास

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामकी २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय. ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंमल बणावे, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंमलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहाम्की रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वेसाख सुदि ३ है सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशाराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया. उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोम्ि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडभी वाजित्र ५, एसे पांच द्व्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरणा

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चक्खाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, उर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णात्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें बांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे.॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्च्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य है सो चोमासेके मंगल है, अर्थात् अलंकार समान है. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करै, कोइ भगवानके मंदिरमें नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन् कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, और चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदै, पीछै गुरूके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांझकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कोंभी सेवन करैं ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार,

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. और देस देसमें श्रावकण्यां इस महीनेंमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती है. जिसमें उत्तमफलको देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसें उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ दुष्कर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ ओली) इस तरे पांच ओली करै. तपोदिन २५. उजमणेमें २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

उली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लड्डू चढावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उली ३ करै. तपो दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकालण १, एकलठाणो १, दत्ति १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उली. इसी तरे उली आठ करै. तपोदिन ७७. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूडणतपः ॥ ७ ॥

भाद्रवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे भरै, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥ इति अक्षयनिधि तपः ७॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगें) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै. अंबिकादेवीकूं वेस चढावै॥इति अंबिकातपः।

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. उजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. उजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. उजमणे एकसो वीस लडू मंदिर चढावे, स्नात्र करावे ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके छोटी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. उजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति छोटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. उजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढावै, सत्तरभेदी पूजा करावै, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावै. इस तरै वरस १ तप करै. उजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीआ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल बणाके सा ते राज सात पावडी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावडी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावडी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिये. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावे ॥ इति अष्टापदपावडीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लड्डु देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंडित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंडितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गकी पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चोथे तेले) लड्डूसें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पार णा. पारणे प्रथम साधूकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय ऊगमेंमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभै, ग्यानपूजा करै ॥ इति दालिद्दहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, बेइंद्रिये छठ १, तेंद्रिये अठम १, चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, छकायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

छठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पूत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्त्तारसुखतपः ॥३४॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्रावकणयो कियाकरती है. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी है, ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवच्छल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोमें अपणा धन

खरच करै, धर्मका नद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रन्नावसें इस न्न वमें संसारसंबंधी दुःखदालिद दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परन्नवमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति गुट कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ न्नाद्रव महिनेमें मिति न्नाद्रवा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महिमा कहते हे) जैसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममे संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहि चूडामणी १०, ज्योतिषीमें चंद्रमा ११, ते जवंतमांहि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु रंगमें पंचवल्लनकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें न्नंन्ना २६, स्त्रीमांहे रंन्ना २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज नत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोमें नत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवछरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूषण पर्वकों न्नगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने नत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आणेसें प्रथ म श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें भगवंत की भावभक्तिं करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५, यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्युषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवत्सरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महोत्सव करै सो कल्पदत्ता शास्त्रोंमें लिखते है ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, समानसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार तत्काल करै, पीछै पुस्तकग्राहक पुरुष [illegible]सें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक संयुत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथोंमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते जावे, दान देते जावे, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते जावे, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु फिर खड़ा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करकै आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपडह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी भडभूंजा इत्यादिक सबका आरंभ रोकावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रभावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार भक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवत्सरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवत्सरी प्रतिक्रमण करै ११, निःशल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणेके दिन पोसह [illegible]क्रिकरणेवाले साधर्मीभाइ-

ओंकी भक्ति करै १३, गुरुभक्ति करै १४, संवत्सरी दान देवै, साहमी वच्छल करै १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करनेसें आठ भवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है (और) केइयक भव्यजीव अत्यंत शुभ भाव धरतेभये अठमादि तप कर के पुस्तक कल्पसूत्रजीकों वांचते हैं और सुणनेवाले प्रमाद निद्रा वि कथा छोडके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धभाव रखके इक वीस वेर सुणते है, सो भव्य केवलीकों प्राप्त होके तीसरे भव सि द्धिस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो भव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रभावीक है, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है और नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म्य कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरया कियाभया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन है. सर्व श्रीसंघके मंगलके वास्ते श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है, जैसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे भी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीभ करके कहे तोभी महात्मका एक अंस भी कह सकता नही. ऐसा इस पर्वका महात्म जाण जो भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरे सें ऋद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य को प्राप्त होवेंगे. और परभवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होवेंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसो ज सुदि १५ तक नवपदजी की ओली तथा अष्टापदजीकी ओली विधिसंयुक्त करे. सो सब विधि पहली लिखा है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्तिक वदि अमावस है सो दी०

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें भया सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, वहां आगामीकालकी सर्व बात भव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्लशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देखके निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं भेजा, पिछाडी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते भये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घडी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये. जिस समय भगवंतका निर्वाणकल्याणक भया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें बडा उद्योत भया, उर जो राजा पोषधमें बैठे भयेथे सो भावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रभात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न भया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे भाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व बडा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणैं । गोतमरास सुणैं. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उछव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन सर्व भव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ भी नही हे. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्कर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, बक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण भये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साथिया करै, फल फूल प्रमुख चढावै, पांच बत्ती का दीपक चढावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावै तथा पूठा विटांगणादि चढावै. (ज्ञानपूजा लिखते हे) नमंतिसाअंतनहीवनाहं, देवायपूयंसुविहेयपूर्वि ॥ भत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुप्फपसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सभाभायभवक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे भावपूजा करे सो लिखते हें) खमासमण दे के । इरियावही पडिक्कमें । लोगस्स कहे । बेठके । मुहपत्ती पडिलेहे । अणूजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिभास भानु

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें भया सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात भव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्लशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देखके निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं भेजा. पिछली पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते भये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घडी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये. जिस समय भगवंतका निर्वाणकल्याणक भया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें बडा उद्योत भया, उर जो राजा पोषधमें बैठे भयेथे सो भावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रभात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न भया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे भाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व बडा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणकका अधिकार सुणैं । गोतमरास सुणैं. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उच्छव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्व लिखा हे सो पढै ॥

दिगाथापढके) पीछै ॥ आभिणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवओहिनाणं च ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञानायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकप्रकाशकार श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणोंमें लिख्या है ॥ उस माफक करै ॥ पीछै (ॐ ह्रीं णमो णाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै, कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिज्झायों पढे वा सुणें, सो लिखते है॥

॥ प्रथम आचारांग सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हमीरानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिणंदे भाषियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनी रे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ जिनजे गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षर पण छे तेहने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिवलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्ता छे इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए भाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सांभलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे भव पार रे॥ सु०॥ विनयचंद्र कहे आदरे

निरमल सुखकारण, सम्यग्दृष्टि पुष्टहेतु भवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अज्ञान निवारण, भार त्रिकाल प्रकार ताप तापित जिन वारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पडिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व प्रणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, भेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश नाण सुख केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म कल्पतरो मूल शुभ त्रिपदी जिन भाषै, बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्री निर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपै, चूरणी टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोगद्वार शास्त्र मानो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजाय उपगारी, अनुभवो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देववंद आणा सहित नयभंग आराधे ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल लोक सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा०। कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थ० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपयाइंपरूवियाणि, नाणाणि केवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपंचमोए, पुव्वालवे सुयगणाहियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं) वंदणवत्ती० अन्नत्थ० कहके १ लोगस्सका काउस्सग्ग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

डिगाथापढके) पीछे ॥ आभिणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवउहिनाणं च ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञानायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, संमहत लोकालोकप्रकाशकए श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै ॥ पीछे (ॐ ह्रीं णमोणाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै, कस थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते हैं॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हरीयाली ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे भाखियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनी रे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षर पण छे जेहने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिजिंज अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए भाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारु श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सांभलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत लहिमानिलो रे, उतारे भव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे आदरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥सु० व० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥मोरालाजन॥ त्रिशसे तेसठ पाखंडीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरे, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय छे, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो०॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मीठो० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥मो०॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥मो०मी०५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिम पणत्ता रे भाव ॥ मो०॥ भापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी-ठी० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी॥ ए चाल॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो ॥ हारे देखी२ भाव, हांरे जीवाजीव स्वभाव ॥मो०॥ सकल जगत करी छाजतो रे जि०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो०॥

गुहिर भाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंम ॥ मो० ॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे जि०, जेहमैं अछे रे नदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ठ सिलोक निजुत्तसुं रे जि०, संगहणी पमिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु संख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय खंध इक राजतोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक वीस छै रे जि०, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशासन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद कहै ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे वीजली ॥ एचाल ॥

चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा उपांग करी सोभा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित भाव कुसुम परिमल व्यापो घणो, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासमी, हो लाल जी०, लहीयै एहथी भाव विरोध कांइ नथी, हो लाल वि० ॥ भांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकी छै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्रमाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत णो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छै एहना सही, हो लाल छै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके भला, हो लाल उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेभत्तरा, हो० स०, पदनें अग्रनदग्र सं-ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ भाष्य चूर्णी निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं मांहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे भृंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर शिर सुरगंग तभी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-ग्रंथतणो भुगते वस्यो, हो० त०, साकर सेलरूी डाख थकी पिण मीठस्यो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने भाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ढाल पंथोरूानी ॥ पंचम अंग भगवती जाणिये रे, जिहा जिन वरना वचन अथाह रे॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगरूी रे, जेहनी छै भद्दाम भवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हजार उद्देसा जेह ना रे, जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरथे भस्या रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परभावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र भगवती रागसूं रे, तो होय भवसागरनो त्याग रे॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे द्रव्य चढाइये रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, भगति युगति मन आणी

मेन रे ॥ दे० ३ ॥ इम सिद्धांत सूत्र आराधनां रे, बहु जन लहिये केवल ज्ञान रे ॥ एहवा जिनचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुनिसूरिनो ध्यान रे ॥ दे० ४ इति श्रीसूत्रकृतांगसूत्र सिज्झाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जिनवर आगे राजाजीरे माजिये ॥ ए देशी ॥

छठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना छै अरथ अनेक छई न हो ॥ म्हारा सुजन्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातडी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी. मधुरता तर्जित जिम मधुलंड हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्ती उपांग छै जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अनुभवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चक्खाण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाभ वलि तंत ते अंतक्रया कही जी, धर्मकथाना दोय छै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जी, बोजाना दस वर्ग महा अनुबंध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोडि तिहां सकल कथानक भाषिया जी, भाष्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार भला पद एहना जी, एह थकी जावै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन भदस विचार रे ॥ दस२ संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भापिया, पिण सूत्र भएयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड केवली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी तल्पिका जी, कल्पिका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद गाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, तुरत लहै अभिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगडदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुझने आई हो ॥ श्रावक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सूणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ आ० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोई उपांग प्रकामै हो ॥ आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम२ अंतरगति भीजै हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ आ० ॥ नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ आ० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ आ० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ आ० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहु को राचो हो ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रश्नव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानंद फल पामे ॥ आवो॰१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाउं ॥ पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो॰ २ ॥ अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा ॥ ते छै अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणिचूडा ॥ आ॰ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि भेद सुखकारा ॥ आ॰ ४ ॥ सुयखंध एक छै दसमे अंगे, पणयालीस अझयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आ॰ ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥ माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ॰ ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोयछै, निश्चय नय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो॰ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु॰ १ ॥ अशुभ्भ किंपाक सम दुकृतफल भोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल भोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु॰२॥ दोय श्रुत खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥ सु॰॥३॥ सरस चंपकलता सुरभ्भि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै ॥ सु॰ ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअछै, दुकृतने सुकृत जोवो विचारी ॥ दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारिये गुण संभारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंद्या निर्गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज सहज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरमधंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंदगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे मैं सुण्या, सहेली ए ॥ आज थया रंगरेल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥ भाष्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंकणी ॥ पसरी अंग इग्यारनी, स० ॥ मुझ मन मंडप वेल कि ॥ सींचू ते हरखे करी, स० ॥ अनुभव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी जे सांभलै, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फूटरा, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मझार कि ॥ भास करी ए अंगनी, स० ॥ वरत्या जयरकार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें, स० ॥ वरषारुतु नभमास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥ पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥ तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रत्नखनिधान जो, स० ॥ ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उपगारी सुगुरु बताई, पांचु भेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, बाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे०३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो ॥ आंकणो ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु जाख्यो, तडुजयग्री जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग जाव सकल जाणे, नय एकांत सुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग छै अति रूमा, छ छेद पयन्ना नहि कूमा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूमा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि जाप्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै, संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै, आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावै ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महानेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पमिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेको जावै. कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोछव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, (२१) वेर सेत्रुजरास सुणे (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसें २१ जेती देवै. (कदाच) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंम्या होय उहां महोछव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, छठ्ठभक्त कर के वा चउत्थभक्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, साहमीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्राविड वारखिल्ल प्रमुख दस कोडि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता है उसका निश्चे दशकोडि गुणा फल होता है ॥ इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. उहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोके दरसण करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठावनकी संख्या मिली, और बहुत जगे चरणोकी स्थापना है, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए है, इस वास्ते जो तुरत भव्यी जीव होंगे सो शुद्धभावसें इस तीर्थको सेवेंगे, जो सेवते है सो धन्य है. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी देवद्रव्यभक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक वृत्तिसें जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी भव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका भवभ्रमण समझके वर्जना, एसें दुरबुद्धियोकी पूजाव्रतपच्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगभी न करणा. शुद्धभावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आदिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ भोली भगत भली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर भरिय कचोलमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूमी रायणगांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० । अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभुत भलकाभोल, मो० ॥ सिद्धवम सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करियै नित रंगरोल ॥ मो० ६ । इण डुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजे परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर गांहमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तू करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथ जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसर

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-
हिज ठाम रे । काल अनंत वलि सीझस्यै रे, साधू अनंती कोडि
॥ नमो० ३ ॥ अनंत कल्याणक भूमिका रे, महिमावंत महंत
सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०
कोडि भवांतर जे किया रे, पातिक विविध उपाय रे ॥ से-
सनमुख चालतां रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥
दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ छहरी
विध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२
अतिघणा रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम भगत साहमीतणी
णोंद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-
मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयडे वधावस्युं रे, रजत सोवन भर
रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-
री काय रे, भगति जुगति जुहारस्युं रे, नाभिनंदन जिनराय
। नमो० ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥
भावना भावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥
भमती भली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ भवभव भ्रमण
रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन
माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो
उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-
रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-
मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीडानी ॥ अंग उमाहो मोने अतिघणो, भेटवा
मलगिरिंद रे पंथीडा ॥ नाभिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-
वानंद रे पंथीडा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेत्रुंजो है कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूमी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंवला रे वमला घणा, कुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वहि० ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, कीणी२ ऊमे खेह रे पंथीमा ॥ मैला थावे संघना कापमा, निरमल थायै देह रे पंथीमा ॥ वहि० ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥ जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि० ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥ फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीमा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीमा ॥ मोने भेटणरो जी कोम है, प्रेम घणो जिनचंद रे पंथीमा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोमिसहस भव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे मग भरिये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥ विम० जा० ॥ पूंमरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरियै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पमिक्कमणा दोय विधसुं कीजे, पापपमल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम ज्ञवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै ज्ञव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रज्ञाती ॥ ज्ञाव धर धन्य दिन आज सफलो गिण्यो, आज में सजन आनंद पायो ॥ ज्ञा० ॥ हर्ष धर निजर ज्ञर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण जिहां चलत आयो ॥ ज्ञा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह में सुजस गायो ॥ ज्ञा० २ ॥ दुर दुरगति टरी जात्र विधसुं करी, पुन्यज्ञंमार पोते ज्ञरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, ऋषज्ञ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ ज्ञा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन मेढसें कल्याणक ज्ञये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के ज्ञये, श्री अरथनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान ज्ञया. एसें इस ज्ञरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक ज्ञये. इस तरे पांच ज्ञरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पच्चास कल्याणक ज्ञये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कल्याणक ज्ञये. इस वास्ते यह दिन वमा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे, एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इछा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः

१ए श्रीवीपरीतनाथायनमः

१ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१० श्रीप्रसादनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत २४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौंदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४ जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअभिनंदननाथायनमः

६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४ जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१ए श्रीमरुदेवनाथायनमः

१ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१० श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जिनपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४ जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः
१० श्रीहरअर्हतेनमः
१० श्रीहरनाथायनमः
१० श्रीहरसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमएरवतेवर्त्त० २४जिनपंचक०ना०२९

२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१० श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१० श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१० श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीविवेकनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमएर०अना० २४जिनपं०क० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती है. जो भव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे भवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चख्काण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय तहां जात्रा करणेको जावे, जो कभी यात्रा करणेको नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करकै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधे, गीतगान नाटकादिकसैं अनेक तरेके उछव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढै वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसैं आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसैं ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमैं मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसैं पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगै चढावै, वीचमें १ बडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीछै श्रीऋषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करकै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमैं अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पागलापणेका रोग मिटा. तब त-पस्या पूर्ण भयां पीछै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्व र्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत ती-र्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान भक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्य-जीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व क-र्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त भया. जो भव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस भव भर पर भवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहीनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चो-मासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ॥ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वडे पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, २ भली, १ पर्यूषण. जिसमें भली २ का भर पर्यूषण का एवं ३ अठाईका महोच्छव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें भी जेसा बीकानेरमें खरतर गछवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उच्छ-व हाथीके होदे वडे आडंबरसें होता हे वा वरघोडा पुस्तकका मुंब-इमें भी होता हे. लेकिन् हस्त्यारूढ नही. भर कार्त्तिक महोच्छव अ-न्यत्र भी वहोत जगे होता हे लेकिन् कलकत्ते जेसा महोच्छव स्वमतमें त था परमतमें कहांइ भी भारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षणमें मल्ले-वार तक हम गयें, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटणा तक में नही देखा. भगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उच्छव कलकत्तेमें देखा था, भर फागुणमहोच्छव मकसूदाबादका वहोत अच्छा होता

हे. नगणीससें सुमतालीसमें देखा था. डुसरी जगे नही कहांइ न्नी देखा, लेकिन् किसीन्नी धर्ममहोच्छवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अच्छा नही. एक तो न्नगवंतके समवसरणके संग आजकलके न्नाग्यवानलोक धूपके मरसें रेतीके मरसें आप तो जाते नही फक-त बेसमक अदम्योंको न्नेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते न्नागते समवसरणकों उछालादेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवे-क विनय संयुक्त शुद्धन्नावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनुं न्नव सफल हे. वोही महोच्छव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेसका चोमासापर्व जाणके सर्व जगें न्नगवंतके धर्मका उद्योत करतेन्नये शुन्नध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-रूपी काष्टको जलाके होली करते हें, पीछे सुबोधजलसें स्नान क-रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हें. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हें. इव्यें उर न्नावे. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हें ॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल न्नयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त न्नये थके लकम गणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हें, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हें. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा करते हें, खोटे वचन बोलते हें, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों डुःख देते हें, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा गेमके न्नांम न्नरमोंकी कुलमर्याद करते हें, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हें, दूध गेम पेसाब पीते हें. एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके डुर्गतिकों उपार्जन करते हें, अनर्थदंमसें अनंत न्नव संसारकी स्थिती बांधते हें. इसवास्ते आत्मार्थी न्नव्यजीवोकों न्नावहोली करणा चाहिये. सो इस मुजब–प्रन्नुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतऋतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गुलालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहोत जगे वांचणेमें आया है, लेकिन् मलमूत्र राख धूमसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद गेमणा, वमेरोकी लज्या गेमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरुषोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ भई है. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हजार वर्ष करीव भया. पीछै स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तबसें धीरे२ अज्ञानी जीव एककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात है, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता है उस वखत तो जाणें को फुरसत नही मिलती है, उर होलीके दिनोंमें मातापिता भाई वहिन सबोंकी लज्या गेमके वहोत दिलमें खुसवखती मानताभया पागलके माफक भांमोंकी तरे वकते फिरता है. कोइ वैस्याउका नाच होता होय उहां तो हजारुं रुपे खरच कर देतेहै. मनमें फूलते हैं हमने वमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभगतीके पाये पूरे मजबूत बंध करणेमें आये. एसी लज्जया गेमके जिनमंदिरका महोछव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें झूठी ठहरावेंगें, ओर मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगें यह वात सच्च हे. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंड लगता हे, लेकिन् हम इकेला क्या करें, भाइबंधोंकों एसा करते देख हमभी करते हें, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अछा है. इस वास्ते हे भव्यजीवो इसमें समुदाणी कर्म बंधता हे. छोडे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत ओर वात तक नही करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख दुसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों भवमें लाभ होय. इस ड्यहोलीके खेलमें वडी२ लडाइयां होजाती हे. मेडता सहर हालीके ख्यालसें पुष्करणे ओर भोजकोंकी लडाइमें तमाम उजाड होगया. ओर परभवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा हे. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचनानुसार लिखा हे. हितोपदेस समझके छोडणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अडसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु हे. जिसमें भी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिछामिदुक्कडं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति भली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अथाणो अति भलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मादल भाव डफ रे, क्रोध मान दोय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए भेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥ तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी उरी—मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल भईहुं वरस विन देखे, रहि हे मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करे करजोरी-लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे नविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर जमावो फोली नर२कै ॥ हो० १॥ ग्यान ध्यान रूफ ताल बजावो, गुण गावो प्रनु हित धरके ॥ हो० २ ॥ अनुनव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूर उमावो, ज्यूं तेरा पाप सबल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रनू नज विलंब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संनारी नर पिचकारी, हांरे तूं तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल नर फोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घर२ रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग आनूषण अंगै, हांरे तूं तो नावना वामा पहिर रे ॥ हो० ४॥ नीरंजन प्रनुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुनव वर रे ॥ हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत मन मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो जगनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलान कहै प्रनु संगै, हांरे तूं तो अनुपम नव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलैंगे होरी॥ वा० ॥ जिनशासन व्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुता मिल, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

नर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुनव रंग रंगाई ॥आ० वा० २॥ नाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, नक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥ खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित्त न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित विन जीव जगत नटक्यो, स० ॥ चनरासी नव नमतां२, नरनव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरनावास नव मासे नीकौ, ओरुकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश नयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संनाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रनु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रनूजीको, वि० ॥ प्रनुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नानन कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन नुवन सिर है टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ बहुत हरगासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरुै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनधरनूषण कहै नविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भरयौ, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकु मार ॥ ग० १॥ फूल्या केवड़ा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजे पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आं व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजूं नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छां टे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जोरें य- दुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात मांनलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ, फूल चढावं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, भव२ दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फा- गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अं- गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल भराए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ वलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निबिड दुरित भर शिखर भि दुरकी, भवसागर तारण तरकी ॥ ब० १ ॥ तीन भुवन तीरथ तारागण, सोभा लहिय निशाकरकी ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिके, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ ब० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब तनकी, बंछित पूरण सुरतरुकी ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंडल मंडनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाभेय जिनेसरकी ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, दुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन भुवन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ लंछन सोभाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद भरकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, भव२ एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ०॥ त्रिगढमें विराजमान, दुंदुभि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, भामंडल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुशल चित्त वसिया॥ऐ०४॥

॥ रागवसंत ॥ संभवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन भुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं०१॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज सेवन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे दुरितारी, सावछी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जदुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसिया ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमोसर हाथे, संजम लेइ भवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरब निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाभनंदनकूं करुं जुहारा,
सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे भव हारो रे ॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चंद्राप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि तन कर हियरा हरख भरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरभव सफल जमारो ॥ भवि जन मन भमरा रंग भरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ भवदुख भंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज समता संग भेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोच्छव रचना रची हद, मुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, भवसायर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सूंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोरी, कोन चूक मोपै काढी भामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत वणी जेसी इंदु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै भई सुमति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो सुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १॥ पर मंदिर तज अविचल लीजें, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहै अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उडाय जगतमें, वैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावे, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, वंछित पावे दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत छांडी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर भरावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी में गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह भरावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही में तेरी माय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी वात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भर्यो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वावो रुपभ बेठे अलवेसर, मारो गुलाल मुठी भरकै ॥ वावो० ॥ मुठी भरकै पसली भरकै, वावो० ॥ चूआ२ चंदन भर अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ वावो० १ ॥ रतनजड़ित शिर छत्र विराजे, अंगी जड़ाव जड़ी जरकै ॥ वावो० २ ॥ बांहे वाजूबंध वहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ वा० ४॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीओ अपणो करकै ॥ वावो० ५॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःदुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं रुपभ जिणंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ बीस कोसथी दरसन दीसे, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके यीस गोमटजी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा—संघयात्रा करणसें पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ ऋषभ जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जवदुःका डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोदे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी में देखी, सो अब मुजकुं सजदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ जूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरूपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवारी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आजूषण पंचेंड्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजूत पंच माहाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रजुकी कृपासें, नी-

खे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, च्या० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटल है, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर भरावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग बीण रूफ बाजै, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, गेरू चले अभिमानी ॥ हां रे लाला गे० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी–श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें नेह लागी, राजुल गुलकी वाणी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजे, रंग विजय सुख दानी–आवा भर गमन ठिदानी ॥ सा० ३॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवाणी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुऊसुं अविहड रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी है सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी भाव अभंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी भांत भली हे, बुंटिया मन२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवडा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंडल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोभत है, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजै, महिरबान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ मुनिजर हे साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ भावना भावो जिनगुण गावो, अमर घणै नवरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल भविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर२ मुठियां भडावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिडकावो, भाव शुक्ल भल भावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य भंडार भरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद वधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत डारो पिचकारी रे, में तो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत भेरुं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीये ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कोजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाएयो, समता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इछा, यामें हे हुसियारी ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीव संसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव युंही गम्यो ॥ द० १ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेडो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ वहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊभी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवछ लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २॥ मंगलधन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम भाष प्रकाश करतां भव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गछ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन भगवंत के कल्याणकके हे सो सर्व भव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंभवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ९ ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंभवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंभवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्रप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्टिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१३ श्रीऋषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्रप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्टिने०
११ श्रीऋषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्रप्रभूजीपरमेष्टिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्ह०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्ह०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्टि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्टि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्ठि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्हं०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपारं०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्ठि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्हं०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्ठि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्हं०
९ श्रीकुंथुनाथजीपरमे०
भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारंग०
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०
आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २
१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०
३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०

६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०
८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०
भाद्रपदशुक्लपक्षे १
९ श्रीसुविधनाथजीपारं०
आश्विनशुक्लपक्षे १
१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घमी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै. उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चख्काण करै, तीन टंक देववंदन करै, पमिक्कमणा करै. जिस दिन जो महाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै. उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहां भगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां वमे महोछवसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावै. उहां विधी संयुक्त सर्व भगवंतोके पंच कल्याणकका उछव करै. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उछव करै ॥ अब २३ भगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लिख्यते॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उछव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उच्छव करै, घृत गुरु वस्त्रादिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याणककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें भगवंतकों विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उच्छव करै, वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण कल्याणकके भावगर्भित उच्छव करै, लडू चढावै ॥ ५ ॥ और छठा गर्भापहार कल्याणकका उच्छव करणा होय तो च्यवनकल्याणकके उच्छव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उच्छव करै. तपस्या पूर्ण होणेसैं पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति करै, साहमीवच्छल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो भव्यजीव करेंगें सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगें॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणभरत उदार ॥ राजग्रही नगरी भली, अलिकापुर अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-गुणें अभिराम ॥ श्री० ३॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४॥ जेठ पढम पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोछव सुर करै, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान॥ जिनवर लंबन काछवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणी नार प्रज्ञावती, ज्ञोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख ज्ञोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आवि जंपै जयकार ॥ प्रज्ञु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम ज्ञार ॥ श्री० ८ ॥ शुज्ञ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥ च्यार करम प्रज्ञु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ए॥ (ढाल २ ॥ सुख कारण ज्ञवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रज्ञुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १० ॥ तपने अधिकारै पखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी उदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप उजमणैं रजत पालणो सोवन पूतली चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥११॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनी जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लज्ञ ज्ञरतार, जस कीरत सोज्ञाग वडाई महियल महिमा जाण ॥ परज्ञव मुगति फल लहियै, ए तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघतणो अधिकार, ज्ञरुवछ प्रमुख नगरादिक करिया विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्त्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरष आउखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक सुणिया त्रिज्ञुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

४ तिम धूमप्रना ५, तमप्रना ६ तमतम ७ नाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन नेदन तामना, नूख तृषा वलि त्रास, रोस२ पीमा करै, परमाहम्मी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल नर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे नोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री०९॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै नाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवै जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ नावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जै नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥ करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां नावसुं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोमी परिमाण ॥ इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, भाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोडि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करै इक भावसुं, तो पामे मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ छठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडि लाखही, जीव लहै तिहां दुख रे ॥ ते दुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडाकोडि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोडाकोडि वरसनो पाप रे ॥ दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचनें काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै भव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनंत भवाना पापथी, छूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चखाणतणा दस भेद रे ॥ अवर भेद पिण छै घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चखाण दस विध फल परूप्या महावीर जिणदेवए, जे करै भविअण तप अखंडित तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद तप विधि

न्नणे ॥ २३ ॥ इति दस पच्चरकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चरकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चरकाणके न्नेद नुर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल न्नगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब नत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नुर किसीके दश पच्चरकाण तप करणेकी इञ्चा होय तो पहिले दिन नवकारसी, डुसरे दिन पोरसी, इस तरे स्तवन मुजब १० पच्चरकाण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक नद्यापन करै. इस तपस्याके प्रन्नावसें डुरगतिबंध दूर करके अञ्ची गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, न्नाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल न्नेटिये ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेविये, धर कर शुन्न परिणाम लाल रे ॥ तीजे न्नव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मझार लाल रे ॥ सुणजो न्नवि तुमे न्नावसुं, चित्तसें करिय नञ्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुन्न महुरते, नचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ नवझाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं नलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंन्न १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत न्नणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पडै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदे निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुभ मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धार्यो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नाहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे मांहिनें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, उजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनें, उछव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उहिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गछ खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुज्ञ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरे. एक उली दो महीनेसे लेकर ब महीने पूरी करै. कदास ब महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है. एक उलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधै. और उससें कम शक्ति होय तो बठसें आराधै. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधै. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधै, उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करके आराधै. उसमें जो शक्तिवान् होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेंती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधै. जो इतनी

भी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार रोकै, सो शक्ति भी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधै. अपणी हीणता भावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणे जावै, स्त्रियां भी ऋतुसमयका तप नही गिणे, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करै, तीन टंक देववंदन करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, भूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनभक्ति करके पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनभक्ति करै करावै, भावना भावै तथा तपके दिन तप पदके गुण भेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करै. इतनाही लक्षण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै. उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते हैं॥

(णमो अरिहंताणं) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवझायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्व साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ (णमो विणयसंपन्नाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअनाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करै ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्छव महोच्छव प्रभावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्छवादिक संयुक्त करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरूका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढै, वीस स्थानकजीकी पूजा करावै, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वच्छल करे, इत्यादिक द्रव्ये नर भावे विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै तीसरै भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगें. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप करणे विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियालेसजंतूगणाणं ॥ भवभोजविच्छयणेवारणाणं, णमोबोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणिदियाणं ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवाणदयागिहस्स, णमो२ संघचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणंमुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्मत्तसंयमपतितभविजन अतिदृथिरकरताभला ॥ अवगुणअदुषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ रुचिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सवोहिबीजंकुरुकारणाणं, णमो२वायगावारणाणं ॥ कुवोहिदंतीहरिणेसराणं ॥ विग्घोघसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२दोजतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ वदवपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणेधुरस्स ॥ मिछत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुध-म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-म्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चा-रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्वयाभूषणभूषणस्स, नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ब्रह्मचैर्यैनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसु पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो कुहड्डहवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यगतव-से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकर स्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोग णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सव्वातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-वंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सव्विंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणोवगारी ॥ महान-

साहमी वच्छल करै, इत्यादिक द्रव्यें तर जावे विधि संयुक्त शुद्ध जावसें जो जव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो जिन नाम कर्माकों उपार्जन करकै तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त होंगें. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप जली विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसहंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥ जव.जोजविच्चयणेवारणाणं, णमोबोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ न्हीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-दियाणं ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ न्हीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-णदयागिहस्स, णमो२ संघचजन्विहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणं-मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-त्तसंयमपतितजविजन अतिहथिरकरताजला ॥ अवगुणअदुषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहस्ससीलांगरथ रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सबोहिबीजंकुरुकार-णाणं, णमो२वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणेसराणं ॥ विग्घो-घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होनतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ दव्वपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिच्छत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनयपद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुधम्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्विनयेनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ कम्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुहकारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयाभूषणभूषणस्स, नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसुपोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुहदुद्दवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यगतवसे नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकरस्स, दुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोगणाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सस्वातिसयासयाणं, सुरा२धी सरवंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनेन्द्रेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सविंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणोवगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंगणस्स ॥ मुत्तीनपाद्ग नसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ नगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव ल्लीवनवारणस्स, सुबोहिवीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल- यस्स, नमोदयामंदिरसव्वयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतयै नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशं कराय, तुभ्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगल मंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंगनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री स म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावै (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ इशाणें द्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअ- च्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमेंरद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरेंणद्राय नमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः॥१९॥ ॐहरिस्स हेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण वेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषें द्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः ॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषेंद्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीतयशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानिकेंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रायनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यस्तेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्रेयेंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्यादेवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ ॐरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐप्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्राकुशीयैनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ ॐकाल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐगंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षोडश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावै ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐक्षयनमः ॥ १७ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितार्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः १७ ॥ ॐधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्पकायनमः १ ॥ ॐपांडुकायनमः २ ॥ ॐपिंगलायनमः ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ए कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्यैनमः ॥६॥ ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥९॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवैनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवैनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंमल पूजनकी विधि विशेष लिखी है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंमल प्रतिष्टा बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंमल पूजामें लिखआए हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधी कराणी होय तो विद्धजान गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंमल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुऊ सानिध कीजै, भुलो अक्षर भगति भणी समऊाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणरा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इण नामै, आठ पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी ॥ वाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवमी ए घर अंगण वैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन भुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंभा पदमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल सालवधै तिण चयन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेड़ाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखडी ए तिणसेती लागी ॥ भला देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जंपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोडी कहै लोक व खत कन्यारो जाडो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा भला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्रीडा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी इष्ट प्रडी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खडी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ (उल्लालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम भणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुझने तमासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीडा नवि लहै ॥ ए दुखणी रे पूत्र मुआे तडफड करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात दुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकनणी ॥ सातमा नूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र नीचे किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या नरी ॥ पम्तो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ रूपनो नूपतने अचंनो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवनव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो नव नूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो नवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासि पाछलै नव रोहणी तप आदस्यो, तपतणे सगते साधुनगते तुम्म नवसायर तस्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि नाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजानणी ॥ (उल्लालो) राजानणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजे लान लीजै नली नावना नावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजे तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, नला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखडी ए तिणसेती लागी ॥ कन्या देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोडी कहै लोक व खत कन्यारो जाडो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा भला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्रीडा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी इष्ट प्रडी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खडी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ (उल्लालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम भणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुझने तमासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीडा नवि लहै ॥ ए दुखणी रे पूत्र मुओ तडपड करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात दुखनी गरवगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो नेहना बालकभणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पुत्रतणै शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या भरी ॥ पड़तो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोड़ आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो भूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो भवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासि पाछलै भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणै सगते साधुभगते तुम्म भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजे लाभ लीजै भली भावना भावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥ सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजै साहमी, मनरंगे हो करश पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूंठना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल—धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पूत्रे आदरी, दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन युग मुनि चंद्र वरसे (१७२०) योग्य श्रावण सुदि भली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य प्रमने थया सुप्रशन चित्तनी चिंता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन करै, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढावै, देव वंदना-

दिक करके धर्मोपदेश सुणे (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः) इसका दो हजार गुणना करै. एसें सात वरस तप करणेंसें सुख शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधिकार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्माशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय ॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलिश वांडु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै, गातां नव निधि थाय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोडी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशण डुरित पुलाय ॥ व० ३॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो छम्माश ॥ पांचे ऊणा छ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जग जीपता, छ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा वारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जाणियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि डुक्कर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पर्मंत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति छम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसें उत्कृष्ट छ म्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणेसें इकसार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोनी छम्मा सीके १८० उपवास करणेसें जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रनूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रनूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेकों जावै, शुद्ध नावना नावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रनाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उलट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिनुवन नाय क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुऊ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिनु० १ ॥ प्रथम नूपाल प्रनु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुऊ सम अवर न को प्रनु, तूं प्रनु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थंकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हण्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादृशी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसैं साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण नवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पडिक्क मणादिक भावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स माधि शुभ भावथी, धरे ताहशे ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ए ॥ काल अनादि संसारमें, ज न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहै धर्म पाया विना, तप विना किम हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरभव पुन्यथी, वलि ल ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ है मुझै, हिव मिल्यो म नतणो भर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ भव२ एक जिनराजनो, सरण हो ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, मैं कियो हिवै परिहार रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे ॥ भव२ जे मुझ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे ॥ धन२ जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना भिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, मैं सुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकास निधि शशि नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौभाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि- मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारे माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवस्वामी उत्कृष्ट बारे मासी तप स्या करी. इस वास्ते भव्यजीव बारैमाशी तपस्याका भाव लायकै (३६०) तीनसे साठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन देववंदनादि क्रिया करै, बारे माशी तपका स्तवन सुणै ॥ (श्री ऋषभदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका २००० गुणना करै. तपस्या पूर्ण होनेसें सिद्धगिरी यात्रा करणेकों जावै. शक्ति माफक उद्यापन उत्सव करै. इस तपस्याके प्रशाद भव्यजीवोके कभी दुख

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढना रहै ॥ इति बारैमा शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥ लवधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणे प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लवधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजे, लवधां अठावीस ॥ एहिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल संसारनी ॥) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लवधिना नाम परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लवधि छै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उषध समा जाणियै, बीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म उषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसहो नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सब्बोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका नाम संभिसना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लवधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि तिहां जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते ऋजूमति नामे अठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्जाचारण लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेह थाय, ए लवधि

यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल है तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबये करी चवदै पूरब जाण ११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र र्तिपद रिद्ध॥बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अट्ठारमी आखा सुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह सवाद, एहवी ई वाणी जगगीशम परसाद ॥ जणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार॥१३॥ एके पद जणियां आ पद लख कोड़, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोड़ ॥ एके थे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस- रे, तेजोलेश्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ समने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥एआंकणी ५॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, ऊपजे ना संदेह॥ रूप नवो रचि कले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगनकी उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै ॥ सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप॥ च० १८ कण पात्रे आदमी रे, जीजाऊं केइ लाख ॥ तेह अखीणम सी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार गवतीसूत्रमें भाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ णा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीन२ इक२ मिली रे,

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति चौस
ठी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥
लवधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याक
रणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू
विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजे, लबधां अठावीस ॥
हिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ तप
संसारनी ॥) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लवधिना
परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां
प्रथम ते लवधि छै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र
समा जाणियै, बीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म
सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसही नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवै ॥
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते
॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका
संभिन्नना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरदेव
चाल ॥) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेइं
जे वसय विचित्र ॥ तसु मनना चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते
मति नामे अठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे
वंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥
जिण लवधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश ॥ ते जंघा
लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेह थाय, ए

ारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै
हालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल
ै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण
१॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र
पद रिद्ध॥बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अढारमी आखा
ुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरै मेल्या जेह सवाद, एहवी
वाणी उगणीशम परसाद ॥ जाणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा
ै कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥१३॥ एके पद जाणियां आ
ाद लख कोड़, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोड़ ॥ एके
थे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक
४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो
देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-
रे, तेजोलेश्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥
मने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी
॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, ऊपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि
ले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी
पशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले
सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै
॥ सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८
हण पात्रे आदमी रे, जीमाड़ै केइ लाख ॥ तेह अखीणम
ी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्कीसनी
घादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी
॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार
गवतीसूत्रमें भाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥
॥ णा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीन३ इक१ मिली रे,

६८

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति श्रीभा
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥
लबधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याक
रणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू वर्का
विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधां अठावीस ॥ ह
हिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल
संसारनी ॥) अनुक्रमें हिव अधिकार गाथातणो, लबधिना कर
परिणाम सरिषा भणो ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही,
प्रथम ते लबधि छै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र अं
समा जाणियै, वीय वप्पोसही लबधि वखाणियै ॥ श्लेषम अं
सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसही नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवै ॥
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते
॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका
संभिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरदह
चाल ॥) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि
जे वसय विचित्र ॥ तसु मनना चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते
मति नामे अठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्र
वंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥
जिण लबधि प्रभावें ऊमी जाय आकाश ॥ ते जंघा
लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेह थाय, ए

इग्यारमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदे पूरब जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अढारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरे मेळ्या जेह सवाद, एहवी लहे वाणी नगणीशम परसाद ॥ नणियो नवि नूलै सूत्र अरथ सुविचा र, ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥१३॥ एके पद नणियां आ वै पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एके अरथे करी ऊपजे अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो लह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस- मी रे, तेजोलेश्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ए आंकणी ॥१५॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, नपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी रे, नपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवे रे, विविध प्रकारे रूप ॥ सदगुरु कहे ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८ ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजाम्हे केइ लाख ॥ तेह अरकीणम हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरे सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार ॥ नगवतीसूत्रमें नाषियो रे, ए बिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीन३ इक२ मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी उ बधां वीश ॥ सान्नलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥ च० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे छवीसे मेरुतेरस दिन न्नलै, श्रीनगर सुखकर लूणाकरणसर आदिजिन सुपसान्नलै ॥ वाचनाचारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन न्नणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुन्न दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै. अनक्रमसैं २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उपवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसें शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूरव नाम, सूत्रे जूजूवा, वीरजिनंदे न्नापिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसाय, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्तिनास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ॥ ३ ॥ छठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रियाविशाल तेरम न्नणो ए १३ ॥ बिंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, सास्त्र थकी मैं संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ॥ षट ज्ञाव प्रगट बे ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो पूर्व अग्रायणी, बिन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी, संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञाषी तीजे तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाखनी, सप्तन्नंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोम ॥ मत्यादिक पण ज्ञेदसुं, पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद बहो कहुं, ज्ञाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोमनी, ज्ञाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य सुज्ञाव ॥ बवीस पद कोम जेहना, सूत्रै आण्या ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना, कोमी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै, नामे प्रत्याख्यान ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अतिशय गुण संयुत ज्ञणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम सातसै, कोमी वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, बवीस कोम प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, बप्पन्न लख इग कोमि, प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोम ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक जे क्रिया, बंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोमनी, तेरमी क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल ॥ पद संख्या इग कोमनी, लाख पचवीस संज्ञाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण ज्ञणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस अरु तीनसै, उपर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुणमालाथी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथे गणधरा, अरथेअरिहंत भाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ध्यान भगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै, प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥ वा० ४॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजे रे॥ नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै, चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजे रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लीजै रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नाम प्रमाणो रे ॥ नवकरवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदे रे ॥ ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोइ रे ॥ भवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं भवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥ (कलश) इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए, सौभाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए ॥ संवत अठारै बरस छिन्नूं नयर श्रीवालूचरै, ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां सफल मनवंछित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूरव तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम ओर विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरूसें समझके करै. यह तपस्याके करणेसें ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित भणी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै ॥ ए देशी) कमला जिम कुंरूणपुरे, भुजबल नरपति भीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरे माशे रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशे रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंभा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंभा रे ॥ प० ३॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवझायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलाडै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघाडै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिनमणी, जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूछियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ दूहा ॥ मणि तेजें मुनि तरुतये, रथ थकी स्त्री भरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहिये श्रीमुनिराय ॥ १० (ढाल—भरत नृप भावसुं ए ॥ ए देशी)॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकमी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण भव मागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जाणयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२॥ चोथ प्रमुख नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कंचण जड्या ए॥ १३॥ तिलकरसैं पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम सफलो गिणे ए ॥ भगवन तप विधि भाषियै ए, नल कहै बोध वरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, पट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए॥ चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आण गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, मूंधै मन साधियै ए॥ १६॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त क्षमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूल सुख शासतोए ॥१७॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भापै सुण थया, शुद्ध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीऋषज्ञदेवस्वामीके ७ उपवास करै, जब (श्री ऋषज्ञदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीकों आद लेकै (२२) बाईस ज्ञगवंतोका बाईस उपवास करे. जब उन२ ज्ञगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, ज्ञवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ ज्ञ० वी० १ ॥ कोम वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास ॥ ज्ञ० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ ज्ञ० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ ज्ञ० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आषाढज्ञूति गणिका साथ ॥ ज्ञ० वी० ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले ज्ञेद ॥ ज्ञ० ॥ इम ज्ञव२ ज्ञमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज्ञ० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज्ञ० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज्ञ० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज्ञ० ॥ उपवास करतां ज्ञावसुं रे लाल, पामे ज्ञवनो पार ॥ ज्ञ० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ ज्ञ० ॥ देव गुरु पूजा करे रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ ज्ञ० ॥ नर सुर रिद्धि पिण ज्ञोगवे रे लाल, निश्चे मुगति जाय ॥ ज्ञ० वी० ७॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोज्ञ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार४ भेद करणेसें १६ होते हे, इनोंकों दूर करणेकों प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसें १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथा शक्ति उद्यापन करे ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरूके पास शुभ दिन पैंतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसें उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढनेवालोंकों साहाय करै, अपणी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसें तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसें पैंतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढावै. इस तपस्याके करणेसें मुर्खपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

१ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः
२ श्रीसुयगडांगजीसूत्रायनमः
३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः
४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०
५ श्रीभगवतीजीसूत्रायनमः
६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०
७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०
८ श्रीअंतगडदशाजीसूत्रा०
९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा०
१० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा०
११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

१ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः
२ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन०

३ श्रीजीवाभिगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
५ श्रीजंबूद्वीपपन्नत्तीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रायनमः
७ श्रीसूरपन्नत्तीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
९ श्रीकप्पवडिंसियाजीसूत्रा० १० श्रीपुप्फियाजीसूत्रायनमः
११ श्रीपुप्फचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्हिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

१ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

१ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्झियासूत्रायनमः
५ श्रीगणविज्झियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्झियासूत्रायनमः
७ श्रीवीरथुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगछाचारजीसूत्रायनमः
९ श्रीज्योतिष्करंडजीसूत्राय० १० श्रीमहापच्चख्काणजीसूत्रा०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

१ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्रा०
१ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० २ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ प्रकाशे गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥ ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचागी सुत वि-स्तरै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें, भूले बा-रम अंग ॥ कंठ पाठसैं लिखत कर, रचना रची अभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसें अब मिलै, आगम पैंतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥ (ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी)॥ आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगडांग दूजोअछै जी, पाखंडी निरधार ॥ जगतगुरु भाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस छत्तीस भल प्रश्नो जी, भगवई अंग विख्यात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता भणी जी, दस श्रावक व्रतधार ॥ दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज० ३ ॥ अंतगड केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥ अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल भाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अढार सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी, ठाण दुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक अंबड रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांभल भविजन चूंप ॥ ज० ७ ॥ सूरियाभ पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो अभिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाभिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृत बहु विध भाव ॥ ज० ए ॥ पन्नवणामें जाणज्यो जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्ती बिहुं जाण ॥ कप्पिया कप्पवडिंसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिछाणज्यो जी, सांभलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी) ॥ छेदतणा प्रायश्चितना जी, भेद भए ए जाण ॥ बृहत्कल्प विवहारमें जी, भाष्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे भविक दिलदार, इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे भाषियो जी, जिनपूजा विहुं भेद ॥ श्रावक द्रव्ये भावसूं जी, मुनिवर भाव उमेद ॥ सुज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत छे जी, उर दशाश्रुतस्कंध ॥ दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरण संथार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंदुलवयाली चंदाविज्झया, गणविद्या अभिधान ॥ देवविज्झया वीरथुवो जी, गच्छाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरंड महा पच्चख्काण जी, च्यार सूत्र छै मूल ॥ आवश्यक दशमीकालिक जी, उत्तरध्ययन अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥ तेह न्याय निक्षेपथी जी, अनुयोगद्वार प्रधान ॥ सू० ६ ॥ द्रव्यानुजोग छए द्रव्यनी जी, चर्चा विधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सू० ७ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी गिरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलथी जी, जाणो चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पैंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ९॥ (ढाल तीसरी ॥ सांगानेर विराजे ॥ ए देशी) ॥ सुण२ गोतमवाणी, इम वीर वदे गुणखाणी रे, भवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन कल्पित वात म गावो रे ॥ भ० आ० १॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें पंचज्ञानने वंदो रे ॥ भ० आ० ॥ ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अठावीसे आण्या रे ॥ भ० आ० २॥ श्रुत चवदे वीसां भेदे, ए मिथ्यामतने छेदे रे ॥ भ० आ० ॥ अवधिछ असंख्य प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥ भ० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकासै, ए सब विधि नंदी भासे रे ॥ भ० आ० ॥ एतो सहु आगमनी नूंद, स्या-

द्वाद गंगनी वूंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरजीका रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय देव बलिहारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि कने सिर नामी रे ॥ज०आ०॥ सामान्य विशेषे जाखी, निश्चय वि वहार छै साखी रे ॥ ज० आ० ६॥ उत्सर्ग वचन छे केइ, अपवाद वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंछित स गला साधो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ (ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए ॥ ए देशी) ॥ पैंतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो हित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति छते उपवास ए, आंबिल निविथी उ छास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैंतालीस दिन आचरे ए ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्र मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३॥ उजमणो हित चित करे ए, गुरु जक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी ए, जे पढय पढावे ते जणी ए ॥४॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथी लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुज नंद सर निधि चंद्र बरषै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर वृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्त्ति सुरिंद पाठक रामगणि ऋद्धिसार ए, इ म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयश्कार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११ दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर माहारा जका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीईन्द्रजूतिगणधरायनमः २ श्रीअग्निजूतीगणधरायनमः

३ श्रीवायुभूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तभूतिगणधरायनमः
५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंडितस्वामीगणधराय०
७ श्रीमोर्यपुत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः
११ श्रीप्रभवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर भगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करणेवाले भये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी भक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी वच्छल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साथिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पडिक्कमे, एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठके मुंहपत्ती पडिलेहै, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (भगवान अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह) एसा कह चैत्यवंदन करै, णमोत्थुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थु० कह ४ थुई कहै, चोथी गाथा कहके नीचा बैठके णमोत्थुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं अन्नत्थू०) कहकै १ लोगस्सका काउसग्ग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ यह थुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थंकरेमिकाउसग्गं अन्नत्थु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग्ग करै, थुई पढै. (शांतिःशांतिकरःश्रीमान, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,

येषांशांतिर्गृहे २ ॥२॥) पीछे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी भुवनदेवता-
की स्तुति काउसग्ग एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहै. पीछे
शासनदेवताका काउसग्ग एक नवकारका करै (यापातिशासनंजैनं,
सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साभिप्रेतसमृध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥)
पीछे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु०
एक नवकारका काउसग्ग करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिन-
शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह
थुई कहके नीचा बैठके नमोत्थुणं कहै, जयवियराय पर्यंत चैत्यवंदन
करै. फेर खमासमण देके (भगवन् अमुक तप गहणत्थं करेमि
काउसग्गं) एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स
कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके
(इच्छकार भगवन् अमुक तप ग्रहण दंडक उच्चरावो जी) गुरु कहै
(उच्चरावेमो) पीछे (अहसंभंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउवसंपज्जा-
माणंविहरामि ॥ तंजहा दव्वउ कालउ भावउ दव्वउणं अमुकतवं
खित्तउणंइत्थवा अन्नत्थवा कालउणं जावपरिमाणं भावउणं जाव-
गहेणंनगहिज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि सन्निवाएणंनभविज्जामि
जावअसेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-
रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभि
योगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाभोगेणं
सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥)
जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ वेर यह
पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो थापनाचार्यजी समक्षै तीन वार यह
पाठ पढे, पीछे गुरु कहै (हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं सम्मं-
धारणीयं गुरुगुणेहिंवुड्ढाहि नित्थारगपारगाहोहि) एसो गुरु कहै.
पीछे खमासमण देके गुरुमुखे पच्चखाण करै अथवा गुरु नहि होय

त्तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करके इरियावही पमिक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पमिलेहै २ वांदणा देवै (इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तुम्हेअम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खमणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, स्तु-तिकी गाथा कहै, पीछे णमोत्थूणं कहै, बेठके भगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिछुक्करं. और ज्ञानभक्ति द्रव्यसें भावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे (नि-च्छारगपारगाहोह) पीछे पच्चख्काण करै, अमुक तप आलोयण नि-मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके ४ लोगस्सका काउसग्ग करै, प्रगट लोगस्स कहै, पीछे उपगरण पात्र भक्त पानादिकसें साधुभ-क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले तथा पढा-णेवाले विद्यागुरुको भक्ति करै, साहमी वच्छल करै, पहरावणी करै, पीछे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो२ रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुझै नवकार जी ॥ उत्त-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह भणयो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गछ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुछ अलप फल जाण जी, जे

उपधान वह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेवनी आण विराधै, भमस्ये भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघड्या घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरने खांड भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहे तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो तप पहिलो वीसम्ह जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीसम्ह आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चे नाण मंम्हाण, बारे उपवासे गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसम्ह त्रीजो णमोत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चोथो चोकम्ह एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्स तप अठावीसम्ह नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रिण ठाम ॥ पुक्खरवरदी तप छठो छक्कम्ह सार, साढात्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान माल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि गुरुमुख सरस रसाल, गच्छनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन बहु भंग ॥ अति उच्छव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवावै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान, विधिसौं जे वहै, ते सूधी किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद, जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय, हरू२ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥ नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचै स्वर बोलै नही ए॥

मन मांहे नावे एम, धन२ ए दिन, नरनव माहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे लाते नपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अतिघणी ए ॥ १६ ॥ परनव पामे ऋद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पर्फै ए ॥ लान्नै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर नुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, नपधानना फल कहै नत्तम नविय जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनीसरो, तसु लीस वाचक समयसुंदर नणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात नपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्यान्न समें सुहागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करकै ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसें सिर पर धरै, पीछै सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंहली करै, नर स्त्रियां गहुंली गावै, पीछै गुरु नर्ध्व साससें वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्टित करै. यथा ॥ नँह्रींणमोअरिहंताणं । नँह्रींणमोसिद्धाणं । नँह्रींणमोआयरियाणं । नँह्रींणमोनवज्ञायाणं । नँह्रींणमोलोएसवसाहूणं । नँह्रींणमोअरहन नगवन वद्धमाणसामिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वढसिद्धिए नँ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछै वाजित्र वाजते स्वस्थानकै आवै, बाजोट पर थाल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै, श्रीफलादिककी प्रन्नावना करै, पीछै मालाग्राहक प्रन्नात समें प्रतिक्रमण करके पमिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करै. पीछै

मुहुर्त्तकी वखत वाजित्रादि उत्सव संघ समेत गुरु पास आवैं, पाच श्रीफल रोक द्रव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी है- नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वली ठवणी पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साथिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे भेट करै. साथि- यों पर अच्छे विदामादि फल चढावे. पीछे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूके संग इरियावही पडिक्कमे. पीछै श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पडिलेहै, फेर खमासमण देके इच्छकारभगवन् तुह्मे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीछै फेर खमास मण देई तुह्मे अह्मं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, श्रावक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासण देके इच्छा० भगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह. पीछै गुरु चैत्यवंदन बोलै. श्रावक णमोत्थुणं कहै अरिहंत चेइयाणंक० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, नमोर्हत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहे. यथा ॥ अर्हंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्येंद्रीसकला त्रैहि । रहंसालहसोच्यते ॥ १ ॥ पीछै लोगस्सउज्जो० सवलोए० वंदणव० अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंह्हीच । आश्रियंतेश्रियांते । भवतोऽजिनापातु ॥ २ ॥ पीछै पुरकरवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतत्त्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्त्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ पीछै सिद्धाणंबुद्धाणं० त तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० कहके एक लोगस्सका काउसग्ग करै, नमोर्हत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा । सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं० एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो पांगासदास्फुरदुपांगा । भवतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥ ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । भगवतिकःश्रु तगमेत्थु । रंगतरंगमितिवर । तरणीस्तुभ्यंनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नत्थु० १ नवकारका० स्तुति॥ उपसर्गविलयविघन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हतमिहसमिही- तत्कृते । स्युशासनेंदेवताभवतु ॥ ७ ॥ पीछे समस्त वेयावच्चकरा- णं शंतिकराणं सम्मदिट्ठिसमाहिकराणं अन्नत्थू० १ नवकारका का- उसग्ग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणोघनिधेसुवैया । वत्यादिकृत्यकरणैक निवद्धकक्षा । तेशांतयेसहभवंतुसुरासुरीभिः । सद्दृष्टयोनिखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोत्थूणं जावंतिचे० नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहै ॥ ॐमितिनमो भगवउ । अरिहंत सिद्धाचारियउवझाए । वरसव्वसाहूमुणिसंघ । धम्मतित्थयपवयण स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहभगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया । वरुणोवायुकुवेरईसाणा । बंभोनागुत्तिदशम । मवियसुदिसाणपाला ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचएहं । तहलोगपा- लयाणं । सुराईगहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं । मज्झमिणंचेव- धम्मणुट्ठाणं । सिद्धिमविग्घंगच्छउ । जिणाणंनवकारउभणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीछै भगवान आगे पम्हा करके मालाग्राह क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनायें वांदे, पीछे खमा होके कहे इच्छकार भ० तुझे अह्मं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसूत्र

संजलावसी काउसग्ग करावो. गुरु कहे करेह. इछं. संघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमि काउसग्गं अन्नहु० कहके १ लोगस्सका का० प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्ग करै. पीछै मालाग्राहक खमासमण देइ इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संजलावो, तब गुरु खमा होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावै, नित्थारगपारगाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीछै श्रावक खमासमण देके इछा० संघपति माला उद्देसउ, गुरु कहे उद्देसउं. फेर श्रावक इछामि० इछाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्तापवेह. खमासमण देके इछं तुह्मे अह्मं संघपति मालाउद्दिउ इछामो अणुसहिं उदिहि२ खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुजयेणं जोगकरीजाहि गुरु गुणवुद्धीजाहि नित्थारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुह्माणं पवेइए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह. पीछै खमासमण देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप चढावै. गुरु १ प्रदक्षिणा देवे. पीछै मालाग्राहक मूहपत्ती पडिलेहै, खमासमण देकै इछाका० तुह्माणंपवेइयं संदिसहजगवन् काउसग्गं करेमी इछामी० इछाका० जगवन् तुह्मे अह्मं संघपति माला उद्देसामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्गं अन्नहु० कहके १ लोगस्सको काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहै पीछै खमासमण देकै वेसणो संदिसाउं, दूजे खमासणे वेसणो ठाउं, पीछै खमासमण देके जो विधि करतां अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायाथें करी मि० इति नांदकी क्रिया ॥ पीछै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव रुपिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्तकी वखत मंदरजीके बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आयके खमा रहे, पीछै मालाग्राहकगुरूके पास आके नव अंग पूजा करे, नव रुपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते जेट धरै. पीछै गुरु उर्ध्वश्वासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीछै जो माला पहिरावै जिसकों माला पहिरणेवाला यथाशक्ति पहरामणी करै. माला पहिराणेवाला ऊर्ध्व-श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सचित्त कुशीलादिकका गुरु पासे पञ्चखाण करै, पीछै मंदरजी पर चढाणे-की धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-दक्षणा देकर गुरु पास वासक्षेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावै, पीछै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधर्मी वात्स-ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोंके लिखतसें कुछएक दे-देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसें एक घीहीज लेता है उर विकृती नहीं लेता १, उप-धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का-रणयोगसें खांड वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कृट द्रव्यादिक नही लेणा ३, घी तेलका वघारया साग भी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापड सीरा वडे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, भोजन करणेकी जगा झाडू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित करै अखंडित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रक्खे हैं वो सब भोगाभोगकी दोनों वखत पडिलेहणा करणी १०, जीमणेके ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रक्खे है वो सब भोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पडिलेहणाकी वखतही पडिलेहणा दुसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंडलादिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपणे घरादिकमें रखा होय तब विना उपधानवाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै उर वोही स्त्री प्रभात समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र आप अथवा मालकणके हाथसें पडिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब क्रिया अनुष्टानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध होय १४, क्रिया अनुष्टानकी कराणेवाली मालकण भी दोनुं वखत पडिकमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात वेर देव वांदे तब शुद्ध होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७, प्रतिक्रमणमें प्रभात समें नवकारसीकाही पच्चख्काण करै पीछे क्रिया करती वखत गुरूके पास उपवास १ अथवा आंबिल २ नीवी ३ अथवा एकासणेका ४ करै १८, पच्चख्काण पारती वखत पहली नवकारसी पारै पीछे उपवासादिक पारै १९, पहले दो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आडंबरसें देरी हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस वास्ते तीसरे पहरकी पडिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पडिलेहके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रभातसमें उपधानवाही गुरुके पास आयके इरियावही पडिलेहके पोषध वपुन सामायक लेके वस्त्र पडिलेहणा उर अंग पडिलेहणा करै, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके (उहीपडिलेहणासंदिस्साउं उहीपडिलेहणाकरूं) एसे खमासण दोय देवे पीछे छव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका क्रम एसे हैं बहुवेलसंदिस्साउं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणोठाउं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपडिगहुं

कठासणोसं० कठासणोपमिगहूं) एवं १० ॥ २१, पीछै वंदन दिया बाद सुख तप पूछा २२, सांझकूं जी यही क्रिया करणी लेकिन इतना विशेष हे पट पमिलेहणा उर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु उपधि पमिलेहण नही करै, पीछै गुरुवंदन उव दिये बाद खमासमण दस देवै (उहीपमिलेहणसंदिस्सा० उहीपमिलेहणकरूं सिझायसं०, सिझायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरै २२, न्यारा पमिक्कमणा होणेसैं पाछीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया सब करदेना २३, माला पहरणेमें सांझकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करकै प्रजातसमैं आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निरारंजी होकर रहै २४. सजी उपधान उत्कृष्ट विधिसैं वहना, उसके अजावमैं श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास, आमल निवी एकासणा करकै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरोपाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत जाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमृतालीस एकासणा करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीछै पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणंसैं लेके नमो लोएसव्वसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमैं लेवे, तिसके वाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमोकारो १, सवपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसव्वेसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनोंकी एकड़ी वाचना एक दिनमैं लेवे तो छवतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंबिल करै, फेर तेला करै, फेर आंबिल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेला मिलाणेसे उपवास १२ भये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसरूतप २०॥ अब दूसरा इरियावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें भी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीछे इछाकारेणसंदिस्सहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें लेकर ठामिकाउसग्गं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेला करके लेवै ॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसरू नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा भावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पैठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेला करै पीछे नमोत्थुणंसे लेकर गंधहत्थीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणंसें लेकर धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीछे सोले आंबिल करके अप्पडिहयवरनाण सें लेकर सव्वेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह तीसरा उपधान नमोत्थुणका पैंत्रीसरू नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन. जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै, अरिहंतचेइयाणं इहांसें लेकर वंदणवत्तियाए अन्नत्थऊससीएणं अप्पाणंवोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह थापनारिहंतका

चोथा उपधान चउक्कर नामका जिसमें पोसा ४ उपवास ३॥ अढाई ॥ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थेका पहले तेला करै, पीछै लोगस्सउज्जोयगरे इहांसे लेके चउवीसंपिकेवली तक पहली वाचना लेवै, फेर बारे आंबिल करके उसभमजियंचवंदे इहांसे लेकर पासं-तहवद्धमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तेरे आंबिल करके एवम-एअभित्थुआसे लेकर सिद्धासिद्धिंममदिसंतु तक तीसरी वाचना लेवै. ए नामारिहंत चउवीसत्थेका अट्ठावीसमनाम तप विधिसुं व-हतां दिन २८ पोसा २८ उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-धि करता दिन अढाईस पोसा २८ उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥ सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीछै ५ आंबिल पीछै पुक्कर-वरदीवड्ढेसें लेकर सुयस्सभगवउकरेमिकाउसग्गं तक एक वाचना देणी. यह छठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम छक्कर पोसा ६ उपवास साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीछै सिद्धाणंबुद्धाणंसें ले-के तारेइनरंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अथ उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब बहोत श्रावक अथवा बहोत श्रावकणियां उपधान वहै तब तो संघके नामसे चंद्रमा अच्छा देखणा, संघकी कुंभरासी है. अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहै तो अपणे नामसें चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांझकूं वाचनाचार्य-के पास आयके इरियावही पडिक्कमके खमासमण देके कहै (अमुक उपधान तपे पवेसह) गुरु कहै (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग पडिलेहण संदिस्सावणा) तब उपधानवाही कहै (तहत्ति) इहां क्षमा श्रमण दिये बाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा भोजन

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी जी कारण करके सांऊकूं खमासण नही दिया होय तो तब पमिकमणेके वखतसे पहली पिठली रातकूं जी खमासण देणा काल वखत पमिक्कमणा करणा नवकारसीका पच्चरकाण मालकण पास करणा पीछै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंजमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप जी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नही है. तिसके बाद प्रजातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके वाद पोसा सामायक लेणा, पीछै दो वांदणा देके पच्चरकाण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृच्छा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पमिक्कमके मूहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयरकंध तवं उक्खिवह) गुरु कहै (उक्खिवामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं काउसग्गं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उरकेवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकाउसग्गं अन्नडससिएणं इत्यादि काउसग्गमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवै, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीछै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उरकेवावणियं चेश्याइंवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपंकरावेह, गुरु कहे करेमो. पीछै वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. एसैं सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानो का उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही थापे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन् जो जो उपधान वहे उस२ का नामोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांझकूं पहिले चोविहारका पच्चक्खाण कर इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवे पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके काउसग्ग सागरवरगंभीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह पहिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीछे गुरु वासक्षेप करै, पीछे चैत्यवंदन करै, पीछे खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धावनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिदुक्कडं एसें सब जगे वाचनाभिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांझकूं चोविहार करके अथवा प्रभातसमें इरियावही पडिक्कमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहै—इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं अमुक तवंनिक्खिवह, गुरु कहे निक्खिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खिवणढं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निक्खिवणढं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करकै खमासण देवै, अमुक तप निक्खिवणढं चेइयाइं वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहै. पीछे संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रभातसमें गुरूके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इस

वास्ते मुहपत्ती पडिलेहके वंदन छव देवे (दो वांदणा देवै इर्स कूं छव वंदन कहते हे) गुरूके साथ पडिकमणा कीया होय तो वांदिणा दोयही देवै. पीछै गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे पडुपुण्णोविगयपारणयंकरेइत्ति, पीछै अपणी इच्छानुसार पच्चक्खाण करे पीछै गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातना करी होय तस्स मिच्छामिडुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रभातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पडिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासणपूर्वक पडिलेहणा उर अंगपडिलेहणा करे, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके पहिले खमासणासें उहीपडिलेहणसंदिस्साएमि, दूसरी खमासण देके उहीपडिलेहणाकरूं, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके गुरूकूं छव वंदन देवे पीछै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहे. इच्छा० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धंबातवंकरावेह. गुरु कहे उपवासे आंबले निरुद्धेति एकाशणे, एसा कहे. पीछै दश खमासणासें अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, बइसणं संदिसावेमि ३, बइसणं गएमि ४, सज्झायंसंदिस्साएमि ५, सज्झायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपडिग्गहूं ८, कठासणोसंदिस्साउं ९, कठासणोपडिग्गहूं १०. पीछै मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रभात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पडिलेहणा उये बाद स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पडिकमके पहले खमासणासें पडिलेहण करूं १, दूसरी खमासणसें पोसहसाला प्रमार्ज्जु २, एसा कहके मुहपत्ती पडिलेहे, एसें दो खमासण देणेपूर्वक अंग पडिलेहणा उर मुहपत्ती पडिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन जोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकजी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीछे गुरु पास आयके इरियावही पमिक्कमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरूके सामने करे. पीछे सिज्झायसंदिस्साएमि सिज्झायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके छव वांदणा देवै. पीछे त्रिविहार अथवा चोविहारका पच्चक्काण कर दस खमासण अनुक्रमसैं इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्साउं १, उही पमिलेहणकरुं २, सिज्झायसंदिस्साउं ३, सिज्झायकरुं ४, बइसणो संदिस्साउं ५, वैसणोठाउं ६, कठासणोसंदिस्साउं ७, कठासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ए, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछै, पीछै सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पमिलेहे, तथा जिस दिन जोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपजोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिकमणामैं असिज्झाइका काउसग्ग नही करे तो आवती पक्खी तक सर्व सिद्धांतकी असिज्झाई होय, इरियावहीका पाठ जी गुणणा नही सूझै. इस वास्ते असिज्झाईमैं जी असिज्झाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिकूं पूछा तब एसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडुधुवचरक्षिपेः । वारेजोमं शनिंविना ॥ आद्यादनंतपोनंद्या । लोचनादिसुजं२ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपडिलेहा ॥ दंडे पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु कंबलतइयचेवसंथारे ॥ कठासणेअठारस। जपेदंडेअपंचेव ॥२॥ इति॥ प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठयंकुणाहअठमंअंते ॥ नवकारनवहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कत्थयंमितहएगं । अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयत्थए । चउत्थमायामतियगं च ॥ २ ॥ चउवीसत्थएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण त्थयंमिचउत्थं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । ए गासीअंबिलाणसव्वंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥ ४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअढाइपाणपन्नरस ॥ अठयउववासा । सव्वंगंसठचउसठी ॥५॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमढअवढएगठु त्तंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । बिलेहिंअढ़ंबलेणंच ॥ ६ ॥ पणया लाचउवीसं । सोलसचउश्हिअठहिकमेणं ॥ चउइठुहियएगेणय । आयरणादोइउववासे ॥७॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ ऋषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मंडलमें २४ कोठेमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रीँनमः १ क्रोंनमः बबबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबबब २, बबबब-बबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबबब ४, ॐ ह्रीँ अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्योनमः ॐह्रीँआचार्येभ्योनमः ॐह्रूँउपाध्यायेभ्योनमः ॐह्रँसर्वसाधुभ्योनमः ॐह्रैँज्ञानेभ्योनमः ॐह्रौँदर्शनेभ्योनमः ॐह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १॥ दूसरी वलयमें दश दिगपालोंके नामकी दस चिठी दश कोठेमें धरे॥ इति द्वितिय वलय २॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां॥ इति तृतिय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर उकारादिक तेतीस वर्ण इंद्रनूति आदि इग्यारे गणधरोके नाम ॐह्रीं युक्त लिखे. पीछे अमृताखीश लब्धिपद ॐह्रींअर्हं एसा आदिमें देकर लिखे ॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंमलपूजामें लिखे हे उस मुजब लिखे. पीछे चोवीस तीर्थंकरोके पिता ॐनाज्ञयेनमः १ इत्यादि लिखे. पीछे ॐमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थंकरोके माताका नाम लिखे ॥ पीछे ॐह्रियैनमः १, ॐश्रियैनमः २, ॐधृत्यैनमः ३, ॐलक्ष्म्यैनमः ४, ॐगोर्यैनमः ५, ॐचंमयैनमः ६, ॐसरस्वत्यैनमः ७, ॐजयायैनमः ८, ॐअंबायैनमः ९, ॐविजयायैनमः १०, ॐक्लिन्नायैनमः ११, ॐअजितायैनमः १२, ॐनित्यायैनमः १३, ॐमदद्रवायैनमः १४, ॐकामांगायनमः १५, ॐकामबाणायैनमः १६, ॐसानंदायनमः १७, ॐनंदमालियेनमः १८, ॐमायात्यैनमः १९, ॐमायावित्यैनमः २०, ॐरौद्र्यैनमः २१, ॐकालायैनमः २२, ॐकाल्यैनमः २३, ॐकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवीसोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष उर २४ यक्षणीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीछे नव निधानोके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली वीशस्थानक मंमलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके अष्ट सिद्धिका नाम लिखे ॐअणिमसिद्धयेनमः १, ॐगरिमसिद्धयेनमः २, ॐलघिमसिद्धियैनमः ३, ॐप्राकाम्यसिद्धयेनमः ४, ॐमहिमसिद्धियैनमः ५, ॐईसित्वसिद्धयेनमः ६, ॐविसित्वसिद्धयेनमः ७, ॐप्राप्तसिद्धयैनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ ॐश्रीधरणेंद्रोरक्षतुः १, श्रीपद्मावतीरक्षतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवैरोट्यारक्षतु ४. इति श्रीऋषभमंमल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंमल वीस स्थानक मंमलपूजा मुजब चढावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुन्न दिन शुन्न मुहुर्त्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावैं, आगे पंचपरमेष्टीपट्ट स्थापन करै तथा न्नगवन्नाके दक्षिण पासे दश दिग्पालपट्ट नर वांये पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै. पीछै एक वमा एक ढोटा मट्टीआदिकका हंमा ऊपर खमी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साथिया करै. पीछै ऊंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंमा धरै, ऊंची पर ढोटा हंमा धरै, ढोटे हंमेके तले एक छिद्र करै, दोनुं मटकाके अंदर साथिया करै, वमे मटकेकी टिवची नीचे चावलका साथिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इक्कीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको दमो नीचला मोटा हंमामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली ढोटा हंमाके छिद्रमें पोकर ऊपर जो चौखूणी तणी बांधीहे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसें शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै नर एक जणेकी तरफसें होय तो शांति कराणेवालेके घरसेती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अञ्चा वस्त्र आन्नूषण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साथिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खमा धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तरफ च्यार साथिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उत्सव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

न्मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीछै पाच दश जणा इव्ये भर न्नावे अपणा अंग शुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अग्गरे स्तुतिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वे लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीछै सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपूत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मढकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोमें जल न्नरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर ढु लता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसैं सात धारा दे चूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीछै न्नक्तामर बमीशांति बोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण बृहच्छांती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमें गुणता रहै, नंर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले बोटे कलशों धारा देता रहै, बींक कोई नही करै, आपसमें डुसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीछै तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीछे नीचेके हंमेमेसे जिनप्रतिमाकूं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करकै केशर पुष्पादिकसें पूजा करै, न्नगवानकी अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती ऊतारै, मंगलदीपक करै. पीछे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपणे घरों२में बाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखभी बांधे. इससें संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछे आधा बलबाकुल परातमें रक्का था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसें दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उस मंत्रोंसें विसर्जन करे॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण ऋषभ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ डुसरी आरती मरुदेवीनंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करजोमी सेवक इम बोलें, नहि कोइ माहरा प्रभुजीने तोले ॥ इति॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय२ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौ-ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गछनी शासनदेवी, सकल संघने सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजै, काने कुंमल दोय रवि शसि गाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे, नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूमी खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुम चढ्या बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनमी जमामां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित२ मानी आरती ऊतारे, रोग सोग भय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु घर पूत्र पुत्रादिक गाजै, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १०॥ देवचंद मुनि आरति गावे, जय२ मंगल नित्य वधावै॥ज०११॥इति।

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपम इण विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग रे, वमीय विछायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे॥ अरे० १ ॥ दान शील तप भावना च०, चोपम एह पसार रे ॥ आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं भला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, उज्जल लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र भला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात हिरदे धरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पम्या अगारे रहण दे च०, पोबारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, हित

कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकमी पमी च०, हिरदे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजमी पमी च०, पंच महाव्रत धार रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुं विसन निवार रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या नरपूर रे ॥ करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ०८॥इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेत्रुंजकी घात, लख दोउं दल अपणे परायेकी जात ॥ कान विध कर मोह बादस्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आठुं कर्म पियादे आगे ऊकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंनत नहीं थंनै ॥ लोन ऊंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर वाके ढंग गामो, वाके मारवैकों दल अपणो संन्नार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गामो, आगों अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलके अगामी, पर दल कर मारो ओनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाकै चलनेकी काइ रहे नही ठोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोम, गामे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगें चवर, तेरो नजन नजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-ष्ट नवनकी प्रीत हमारी, नवमे नव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२ ॥ रूपचंद नगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-का वासा हे ॥ लो० ॥ पेंतालीस लाख जोजनकी शिल्ला, फिटक रतन नजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब, ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी धजा फरूके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, नरनकी क्या आसा हे ॥ लो०२ ॥ चोसठ इंड ख-मे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ सखि सब बनठन, सखी० ठाढे नान्नि नृपतजूके द्वारे आगे॥ स०॥ रिषन्नकुमरको जनम नयो हे, मंगल मुख्क नच्चारे री ॥ स० १॥ ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हाव नाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर खत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः हो जिन तेंमे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन नव२में नटकंदा, अब मेंमी नर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंमे लार लगे है, ननकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु साढे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ म्हारा रिषन्न जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गुलाब लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा० १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पुण्य पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ नाव नावुं रे ॥

कर हिये विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया छकमी पमी च०, हिरदे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजमी पमी च०, पंच महाव्रत धार रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुंइ विसन निवार रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या जरपूर रे ॥ करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ०८॥इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेत्रुंजकी घात, लख दोउं दल अपणे परायैकी जात ॥ काउ विध कर मोह बादस्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आठुं कर्म पियादे आगे ऊकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंजत नहीं थंजै ॥ लोज ऊंट चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर वाके ढंग गाढो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गाढो, आगें अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलके अगाडी, पर दल कर मारो छिनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाकै चलनेकी काइ रहे नही गेर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरे शिर वंधेगो मोम, गमे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगे चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-ष्ट ज्ञवनकी प्रीत हमारी, नवमे ज्ञव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२ ॥ रूपचंद ज्ञगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिल्ला, फिटक रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब, ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ ॥ पंच वरणकी धजा फरूके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, उरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ इंद्र ख-म्हे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ सखि सब बनठन, सखी० गाहे नाजि नृपतजूके द्वारे आगे॥ स० ॥ रिषज्ञकुमरको जनम ज्ञयो हे, मंगल मुख उच्चारे री ॥ स० १ ॥ ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हाव ज्ञाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निरखत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः हो जिन तेंम्हे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन ज्ञव२में ज्ञटकंदा, अब मेंम्ही उर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंम्हे लार लगे है, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तुसादे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ म्हारा रिषज्ञ जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गुलाब लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा० १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पुण्य पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ ज्ञाव ज्ञावुं रे ॥

ऋषभदास पूरो आस गुण गाउं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि भवतरणा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता, नंद ऋषभ सुखकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग हग शशि वदन मनोहर, अंग कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग फिंफोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्यान, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जग तारन टारन अघको रे, वारुं तन धन ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृत्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ मैं नांहि जाएं सहियां, य० ॥ मैं तारण तरण सुणयो है, मैं यातें शरणो गहियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश हुयकै, मैं भटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकैं दाश निहारे, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमीराय अरज सुणीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिलभर दरशण दीजे ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवमी दरसण दीजै, सकल करम दल छीजे ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पभणे, प्रहऊगी प्रणमीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंमा प्रभु इण दिल

वसणावे, तेंभा तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त त्वज्ञानके दाता, ज्ञविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि नचंद एसे प्रज्ञु मेरे, चरणकमल चित्त ध्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ ना-ज्ञिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी उर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि जिनेसर अंतरजामी, स्वामी कबु न विचारोगे ॥ हम० २॥ जगजीवन जगतारक तुमहो, एही विरुद संज्ञारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौज्ञा ग्य सूरिंदके साहिब, ज्ञवजल पार उतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं॥

पुनः ॥ पंथीभा पंथ चलेगो, प्रज्ञु ज्ञजले दिन चार ॥ पं० ॥ जूठी काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो, जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीछै करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पु एय दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पासएवंती, अब तेरोही आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज, जोभे थांरे कोण जुभेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विभारण नागकूं तारण, सं ज्ञलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोभीने वीनवै, ज्ञव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंज्ञायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, केसें० ॥ ज्रमत२ लख चौरासीमें, सुख ङःखसें जीया रुलत फिरै ॥ म० केसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी ज्ञटकावत, जाहीसें मेरो प्राण भरै ॥ म० केसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांग चाहै, प्रज्ञु सेव्यांसें काज सरै ॥ म० केसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः राजरी वधाई वाजे छै, महा० ॥ सरणाई सिरै नोवत वाजे, घन ज्यूं अंबर गाजे

है ॥ म्हा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावैं, मोतियन चोक पुरावै है ॥ म्हा० २ ॥ सेवग प्रभुजीसैं अरज करे है, चरणारी सेवा प्यारी लागे है ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अम्हाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंम्हल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहरके, नहिय भजै सो काला, माणक पर प्रभु महिर करो तो, अपणा विरुद संभाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घूंघट पट उघारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ भव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकम्ही करमगति जाय ना कही, चिंतत और वनत कछु औरे, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय वां० १ ॥ सकल साज सझियौ व्याहनकूं, राजुलकों तब चाह भई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥ हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिव्रगता, जानत सकल मही ॥ झूठो दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंम्हमैं धीज दही ॥ हे माय वां० ३ ॥ क्षायक सुद्दष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाए कही ॥ उलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरवमें व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो लागे है जी थांरो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण उगुण

मेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर दुख दूर करणकूं, जगत बढावत हेत ॥ चंद फते नित एही चाहै, समकित सुखको खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मेरो पिया पर संग रमत है, मैं केसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति दुसह पिया विन, कोन वुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ- नुभव आयो, सव परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोहं हिल- मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन झरी, हो सुगुरु मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतें झमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु० १॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति डरी ॥ हो सुगु० ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सु- गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुभाव धरी ॥ सु- भरभरयो सुमतारससागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप- इया भविजन, बोलत भक्तिभरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, भविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी, सहज स्वभाव फली ॥ हो सुगु० ५॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या घरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध भेटे, हरख भयो अंग अंग ॥ व० या० २॥ एसी विध भवर मांहे मिलियो, धर्मप्रसाद अभंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं ओर दरिया वरसै, अब घरर घरर घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाङुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञए घन जरसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुंढ सकल वन२में, कबहुं पिया ना दर सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी विजुरी झरावै, दूजी विरह व्याकुल ज्ञई तनमें ॥ मो० १॥ झिरमिर वरषित गरजत दाङुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम वेखण चाहे, राजुल ज्ञई विरागण छिनमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥राग विहाग॥ समझ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जेसें उरो ॥स० १॥ या तनको कहो कोन ज्ञरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करै सो अवही करलै, पुनपरहो जिम झोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बांध्यो, जानवूझ ज्ञयो ज्ञोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी ज्ञीत उसको मोती, कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटमी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुझ सरिखा तुझ लाख है, मेरे तूंही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठे टलै, मेरे मनका झोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला॥ आणंदघन प्रभु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे भाग, वीरप्रभु आए हें ॥ आ० ॥ चंदना खमी डुवार, चित्तसें करै विचार ॥ देखत ही दार हीया, हरख भराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, भली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो॥ सुकृत बहु तेरो, भगवान दिल भाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥आ० ४॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ० १ ॥ आप न आवे वारी न लिख भेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निज घर आवे, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषभ विहारी, थांरी तो छवि न्यारी हो ॥ रु०॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ रु० १ ॥ धनुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ रु० २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ रु० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु ळे पर उपगारी हो॥ रु० ४॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो ॥ रु० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाउं बलि हारी हो ॥ रु० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरे रे, सु० ॥ चित कछु उर विचारत है नर, उरही उर बने रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचे, चिमिया केसें बचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया, क्यूं जग चाह धरे रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न भजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सखियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक भूप चेलणाराणी, भक्ति करत है आज ॥ स० २॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमंग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतैं, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद् गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ भव २में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विभाव त्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपभे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम है अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल मांझ याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं लार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसें विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल, प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थांरे मुखमारी हो वारी राज, प्यारी छवी वरणी न जाय ॥ था० ॥ शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ था० १ ॥ मोहनगारी सूरत थांरी, देख्या म्हारो मनमो लोभाय ॥ थां० २ ॥ छरकत नेण भए दोउं निरखत, थांसु प्रभु प्रीतमी लगाय ॥ था० ३ ॥ भव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरभव जैनधर्म रुचि, सुग्रुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक फरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ फूठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, भवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी मो० ॥ मैं मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ग्रनो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म पमयो मुझ केमे, किस बिध छूटै पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूझ्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं भववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संभारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता, संभवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागभैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी

मेहरवान भई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पगावै, तेरी सूरत कुरवान भई रे ॥ वी० १ ॥ साशणनायक एही अरज है, दीजै दरस वमो वैर भई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासकी पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विन्नास॥ भोर भयो अव जाग बावरे, भो०॥ कोन पुन्य तें नरभव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दाव रे॥ भो० १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों, मोह मगन ए विकल भाव है ॥ भो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुभाव रे ॥ भो० ३॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रभाव रे ॥ भो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं डूबै अब पाय नाव रे ॥ भो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा०॥ उदयो उदयाचल रविमंडल, पुन्यकाल क्यूं सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंड वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जड संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पइयें, नींद सुपन ए जड नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संभार आपणो, कब तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा० ५ ॥ सुध बुध भूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलावल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल चाकी प्रीत कपटकी, भयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २इति

राग ललित ॥ आज ऋषभ घर आवे, देखो माई आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन भावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांसकुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिल्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरास मिल्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग टल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिब, ज्युं पारेवो पल्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कृपासें, हुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगोने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण छै अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवभव एहवो, जुम्रवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघट छै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें भरियो हे जिनवर, पूरब पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लाभकहै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ भज मन नाभिनंदन देव, भ० ॥ ध्यान मुनिजन अमग धारे, सुरनर करत हे सेव ॥ भ० १ ॥ चक्री भू-

पति वन्दे सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ भ० २ ॥ असरण शरण है विरुद जाको, भक्ति-वच्छल भेव ॥ राजसिंह प्रभु रूपचन्द्र सिर पर, नाथ हे नितमेव ॥ भ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमकों न सं-तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सझके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज छांडी वतन, तकसीर वतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंद्रवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी नव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब झूठे पडेंगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहै प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेनें दोऊ नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद झरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-व कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ वीच भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा छाजै ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद झरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकूं आवै, निरख२ प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जमी मन प्रे-म धरै, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान, है ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नही देखा समोसरणा, किया भवदधिमें कदर भरणा ॥ दोऊ जो लेते प्रभु सरणा, दूर

दुख होते जनम मरणा ॥ बेठ नववरमें लगाया नही ध्यान, राज शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना नि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठुं मद तुमसें दूर रेते ॥ यार जो तिनके चरण सेते, शषी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो सूर, वरे वो नव नव सुख नरपूर॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां जिन नूर हुवै दुखदूर, करो नवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रनु तेरी सूरतिया लागे नली, नेवां हमारी प्रनु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुनव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रनु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंनर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुफकूं आश दीनपति तेरी, उर न चाहूं देव वली॥ ने० प्र० ४॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जरी रूहसार फली ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नही कोई, ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रनुजी अब, आन नई तुमसें नट नेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांबाज ॥ घमी२ पल२ दिन२ निशदिन, प्रनुकों समरण करलै रे ॥ घ० ॥ प्रनु समरण सब पाप कटत है, अशुन करम सब हरलै रे ॥ घ० १॥ मन वच काय लगी चरणन नित, ज्ञान हियेमें धरलै रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रनु गुण गावैं, मन

वंछित फल वरसै रे ॥ ध० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ सुमतानें क्या कर म्हारा रे, जिन मोह्या स्याम हमारा ॥ जि० सु०॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण भई हे हमारी, बस किया प्राण पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, छोम्ह चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो नेम तजे हो हमकूं, मैं न तजू पद थांरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लगन हमारी तोरी नही तूटै, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५॥ सब जग जो तुमसे हो जश्यै, तो क्यूं चलत संसारा रे ॥ जि० सु० ६ ॥ रूपसार राजुल प्रभुजीसैं, पोहची मुगति मझारा रे ॥ जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो भले विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर पर भले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक जाण न पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकम्ह ले जावै ॥ तु० १ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहे, तलै भीलनका वासा ॥ पेंम्ह२ पर सींह दमूकै, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर धजा विराजै, झालररे झणकारै ॥ झालररे झणकार सेती, वाजा अविचल वाजै ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण रचावै ॥ अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक, हरख२ गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर निवारो रे ॥ भवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, मैं देखा सहु

भग जोई रे॥भ०१॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख पाया रे॥ भ०॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद लीधा रे॥ भ० २॥ वीश चरण जिन सोहे, भविजन चात्रक मन मोहे रे॥ भ०॥ ध्रुवमठ मंदिर बाजै, जिहां पाशप्रभु महाराजै रे॥ भ० ३॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो रे॥ भ०॥ तीर्थे आसातन टालो, भविजन बहरी व्रत पालो रे॥ भ० ४॥ नरभव लाहो लीजे, इण तीरथ महिमा कीजे रे॥ भ० सय उगणीस तेतीसे, अगहन सुदि पंचमी दीसे रे॥ भ० ५॥ दूगम गोत्र सुहावै, भवि चंदगोविंद गुण गावे रे॥ भ०॥ जात्रा करी मन रंगे, चंद शिखर भणै अति चंगे रे॥ भ० ६ इति पदं॥ पुनः॥ (सांवरियां जेसें वणे जेसे तारो, सां०॥ इस चालमें) सांवरियामें दीठो दरस तिहारो, मेरी भव भय वाधा टारो॥ सां०॥ अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो॥ नीलवरण द्युति श्री जिनवरकी, वामा उदर अवतारो॥सां० १॥ कमठ विमारण शिव सुख कारण, तारण तरण निहारो॥ अलख अगोचर अगम अरूपी, निर्यामक सत्थवारो॥ सां० २॥ शिखर गिरी मंमण जिनवरजी, अदभुत महिमावारो॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह अरजी धारो॥ सां० ३॥ इति पदं॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं॥

(श्रीचिंतामणि पासजी॥ ए चाल)॥ त्रिभुवन नायक वीरजी, दरशण अतहि सुरंग॥ वधाई प्रभुजी॥ थारी मोंहनी मूरती म्हारो मन लागो राज॥ मुख बवि चंदनें निरखवा, लगन चकोर अभंग॥ वधा० १॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज झलामल भाण॥ व०॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण॥व० था० २॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीभुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर बगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० था० ३ ॥ धन२ वेला जी आजनी, सैंमुख मिलिया हो आप ॥ व० ॥ हूं स घणी कहिवा तणी, वीतक डुक्ख संताप ॥ व० था० ४ ॥ जो नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ भगतवछल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० था० ५ ॥ किरिया जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो वलिहारी श्री नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६ ॥ गुनही तारथा जी बहु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो, किम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७ ॥ अतिशय ज्ञानी जी इण अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुद्रासुं मन रमें, के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुझ तन मन मंजूसमें, जतन करूं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुण रतननी मूंथडी, प्रेम जडी निज हाथ ॥ व० था० ९ ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवास ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, भुवन रमण केलास ॥ व० था० १० ॥ पावापुर जगदीशमें, अडतालीश उदार ॥ व० ॥ कार्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि ऋद्धिसार ॥ व० था० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

(नैणा सफल भयें, प्रभु दरसण पायो आज ॥ ए चालमें)

निरख हिया हरख भरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अभिलाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, समरथ को नहि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, भक्त सुधारण काज ॥ नि० २ ॥ डुखभंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत ॥ अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ भगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष पुन्ये लह्यो रे, वंछित पूरण नाथ ॥ भाग्योदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु भव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज ॥ नि० ५ ॥ उगणिसे अमृतालमें रे, कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥ चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥ कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन ॥ रूद्धसार जिन ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो ज नम सफल भयो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तो य न सर्योजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १ ॥ भव२ भटकत शरणे हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आज रे मैं० २ ॥ कमठ हरा वण नागकूं तारण, संभलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूप चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोडी पाश जिनेसर, तुम स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ उंचे२ गढ पर पाश विराजै, चारो तरफ ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जाउं वलिहारी ॥ कि० २ ॥ बांहे वाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी छवि है न्यारी ॥ कि० ३ ॥ ढूंढत२ मैं प्रभु पायो, पूरण पदवी अब पाई ॥ कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥ मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥ मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै घननननन, इंद्रलोक हरखनयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर, वीतराग तननननन ॥ घं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, झलरी नाद झननननन ॥ घं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांइआं रे, सांइ मेरा टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा घोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥ तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमझुम२ मेहला वरसे, ठमर२ नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी, प्रभुगुण आंबा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी सोर ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण झंफा जोर ॥ रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न जेर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ एसे सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजे मंफान है ॥ एसे० १ ॥ पांचइंद्रीके तेवीस तस्कर, नगरकूंकरत हेरान हे ॥ एसे० २॥ प्रजा पुकार सुणी जव जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एसे० ३ ॥ ज्ञान को बाण वचनरस भेदे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एसे० ४ ॥ रूपचंद कहे तेने वारो, दुस्मन मान गुमान हे ॥ एसे० ५ ॥ इति पदं ॥ आय रहो दिल वागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ०॥ चुन२ कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥ मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा वागमें ॥ सु० २ ॥ रूपचंद कहैं नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥ सु० ३ ॥ इति पदं॥ रहो२ रे यादव दोय घड़ियां, दोय घड़ियां रे अब च्यार घड़ियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला वहोत मसाला, पीवत मधुरी सेलड़ियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो सांइ, फुलडा विछाउं सेजड़ियां ॥ र० २ ॥ राजुल गोड़ि चले

गिरनारी, दीपत मोहन वेलड़ियां ॥ र० ३॥ रूपचंद कहै नाथ नि-
रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलड़ियां ॥ र० ४॥ इति पदं ॥ विराजो
बंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रनु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥
चुवा२ चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाब ॥ वी० १ ॥ शिर
सोनेको उत्र विराजै, मोतियड़े तपे रे निलाड़ ॥ वी० २ ॥ नव
सागरमें आण पड़ाहुं, बांह पकड़ मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद
कहै नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥
आठ नवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥
सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥
आप चलै गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥
कहे नथू प्रनु नेमनगीनो, कहुंवू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आसाउरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका
करे रे निवेड़ा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन गाया, विन फूलै
फल लागा ॥ शाखा पत्र नही कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥
अ० १ ॥ तरुवर एक पंबी दोउं बैठे, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने
जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंडलमें
अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो नर२
पीयै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंडलमें गउआ वि
आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, गाछ
जगत नरमाया ॥ अ० ४॥ थड़ विन पत्र पत्र विन तूंबा, विन जी
न्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया
॥ अ० ५ ॥ आतम अनुनव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगा
वै ॥ घट अंतर परखै सोही मूरत, आनंघन पद पावै ॥ अ० ६ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्राह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ२ भई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥ अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोभोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी हमारो पोढे पालणे, मेंहुं झुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहि हुं परणी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारी ॥ कालोदाढीको में कोइ नही छोड्यो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खुटली, गगन ऊसीकूं तलाई ॥ धरतीको छेडो आभकी पिछोडी, तोय न सोड भराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंडलमे गाय वियाणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो भाई विलोवणा विलोवै, कोइयक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहिं जाउं सासरीये नहि जाउं पीहरियै, पीयुजीकी सेज बिछाई ॥ आनंदघन कहै सुणो भाई साधो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६॥ इति पदं॥ पुनः॥ हंसा तूं मानसरोवर वासी, वामे झूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥ नीर अगाध भर्यो श्रो करदम, पसरो वेल जरासी ॥ आंकी वांकी कबहू न सीधी, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चंडाल भूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पछतावै पर आंगणमें, भटके गया डर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी झूठो फैल मचावै, भागो माहावत जासी, ऊनियां चढ२ नीचै गिरती, पडतें ही झालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै इक दासी ॥ रूद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी२ रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर२ नहीं आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम२ सुख पावै ॥ अ० १ ॥ तन धन जोवन सबही झूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ० २ ॥ तन छूटे धन कोण कामकों, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं झूठ न भावै ॥ अ० ॥ ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥ इति पदं॥ पुनः॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो ॥ ये० ॥ आठोंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे॥ तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ भवका फेरा वारी करो जि- नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो ॥ थोमासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं छल परपंच करो ॥ एती० १ ॥ कूम कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परभव- थी न मरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरणके छुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अबधू निर पक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥अ०॥ समरस भाव भला चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वा तां, जाणेगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें भेद न जाणे, कन क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढते गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त भारंम परे नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४॥ पंकज नाम धराय पं कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रभाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥ च० ॥ भया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत, सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरभीके बंध छुटे, घूघरू भये अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं जी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समऊ परी, मोहे समऊ परी, जगमाया अब जुठी ॥ मोहे समऊ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही जरोसा पल एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल छिनजर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें तेरे काल अरी ॥ ज०स० २॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ राजुल कऊी अरज करे है, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥ इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलांजी वांतो पशुवनकी सुणी है पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, जलांजी वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रजु राजुल विनवे, जलांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः रसना सफल जई, मैंतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम आनंद प्रगट जयो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ नाक नमन करतां प्रजुजीकूं, सास्या आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपंकज प्रजुके फरसतही, दूर गई छुख दाऊ ॥ कहत क्षमाकढ्याण सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी ॥ मुऊे गेरुके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई आशकी निराश, उदाशीनता घरी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीरमें परी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम विना घरी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ निशदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन किसीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात ज्रर जात सजनसें, कांइ रहत निचिंत ॥ ज० १ ॥ सबही अपणे स्वारथके है, परमारथ नहि प्रीत ॥ स्वारथ विणासे सगो न होसी, मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० २ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ज०॥ को नहीं तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक ज्ञगवान ज्ञजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदीसर जिनराज, त्रिज्ञुवनके महाराज, आज हो आयो रे, मैं शरणें प्रज्ञुजी तुम तणे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥ आज हो जागी रे, मुऊ मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लगी ज्ञरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो गेरूं रे, नहीं तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नाज्ञिराय कुलचंद, मरुदेवीके नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रज्ञु मुऊकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश क्षमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे, प्रज्ञु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोरुी गाइयै मन रंग, गो० ॥एक ध्याने एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजै अमृत पीजै, नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो० २ ॥ पोढतां प्रज्ञु नाम लीजै, आणी मन उछरंग ॥ अज्ञय तेहने बंध मांहै, कदिय न होवे चित्त ज्ञंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ हांरे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमानें मटकै ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तकुं लीधुं चटके ॥ प्रज्ञुजी केरी ज्ञक्ति करंता, करमतणी कस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुऊ मन

लोभी भ्रमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि मूं की राचै, कहो कुण काचतणे कटके ॥ हांरे हूं० २ ॥ ए जिन गुण तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुख दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हांरे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे, ते तो भूला भटके ॥ भाव भक्तिसुं लगन करतां वंछित सुखरूं सटके ॥ हांरे हूं० ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केरी, जोतां हियरुं हटकै, नित्यलाभ कहे प्रभु ए मोटो, गुण गाउं हूं लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसे कर छूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें बाको जीयो, अपणा प्रभुजीसें रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सुख लहस्ये री ॥ प्र० २॥ सेवाराम प्रभु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा दुर करना, दु० ॥ एक ध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥ खत० २ ॥ संवर भाव सदा मन धरना, आतम दुरगति हरना ॥ ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मरणा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इक्षुरस दान वहराविओ, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघाडिया, चालणी काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा जस थयो, शीले सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजिनंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य ज्ञावना ज्ञावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ ज्ञरत आरीसा ज्ञुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेहनी शीतल गंह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन निद्रा तूं कहांसें आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मैंतो बाली रे ज्ञोली, वमे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मैंतो जनमकी दासी, एक हाथमें मूंकी डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २॥ समयसुंदर कहे सुनो ज्ञाइ वनिया, आप मूबै सारी मूब गई डुनिया ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रज्ञुजीसें ध्यान रे, मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागी लगनवा गेमी नहि बूटै, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना ज्ञावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोमके अरज करत है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ते शिवपुर गये रहे रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि० ॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमातम शिवधाम रे ॥ समाधान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रज्ञुके आगे गौतम, अमृत पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे ज्ञले रे ऊगो ढेयामो आजनो रे, मैंतो मुखमो दीठो जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज्ञ० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ महाराजनो रे ॥ जिन लंबन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥ म्हाने पागी मिल्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिल्यो शुज्ञ काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फल्यो काजनो रे, म्हारो

महीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो भवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी रे, मांहे बूटी दीसे भांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगटमा जम्या बहु रे, काने कुंमलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुझ सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रळियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सोहामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आजथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्यूं रे ॥ ध० ३ ॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधामणा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आथमता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेवमें रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरू रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा मनमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घमी, स० ॥ ए संसार जेसा सांभला, घमपण आया घोमे चढी ॥ मांगी तूंगीनें छत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साथो भाई

जिनने संन्नारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लींबो नज तूं नगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवोश्नी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम नगत वछल नगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रन्नु केहवी थइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो ढबीलो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सखी आंबातणी जे रुहाम्, आंबलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुऊ दीदार नहीं तुऊ जोम्हे रे, इण जगमें जोतां कंत कहूं हूं थोम्हे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ढीलरिया मिंत ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न नावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६ ॥ इम करतां बांधीप्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे ढेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम रुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रन्नु नेम राजुल सी प्रीत मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ ऊन्नो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमोहन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल ढिन घम्री रे, मत मन प्रन्नुकूं नूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोन्नता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अन्नंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दास पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजै हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंद शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंदु शित सप्तमी रे, ऋद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन भाव नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहुं, लागी लगन गुण गावणकी ॥ छ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक पर, वरसे घटा जेसें सावणकी ॥ छ० २ ॥ बालपणे प्रभु हम संग खेले, अब तो भइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जिन पूरब प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे भरो सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ सहजानंदी एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ छ० ६ ॥ पारस भेट रहे जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास आश प्रभुजीसें, ऋद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसें आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत भइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख चंद चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ दुर न कीजै निज चरणनसें, सुरतरुकी छांह गही रे ॥ सा० ॥ दिलभर प्रभुसें अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २ ॥ विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३ ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, ऋद्धसार लय लाग रही रे ॥ सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सावरिया पास जी सुख दीजे, प्रभु अरजी दिलभर लीजै ॥ सां० ॥ मनमोहन मूरति थांरी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी ॥ सां० १ ॥ करुणारस अमृत कूंपी, लयलीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जब पारस नाम उचास्यो, रघुपति को कारज सास्यो, प्रभु धरणीधर निसतास्यो ॥ सां० ३ ॥ शिव-

शंकर रमणविहारी, प्रनु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता वारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनन्नुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववाम्नी सुंदर ग जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुन्न पूजन युगति रचावै, प्रनुजीसें प्रे म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अन्निनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रनु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उग णपचासे, सुदि पांचम यतन विलासै, प्रनु माधव माश हुलासै ॥ सां० ए ॥ हितवल्लन्न प्रनु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववाम्नी सुमं तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषन्नदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे गोरु चला विणऊरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋष न्न प्रनु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकन्नर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रनू मोहन सूरतिधारी, कंद्र्पदर्प विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुरअसुर नमत नरनारी, प्रनु न्नए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी यूष सहज सुखन्नीने ॥ माया गया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, न्नया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विन्नूष त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रनु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरै अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम धर नयर जिणंदा, प्रनु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रनु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रनु कीजै आप समाना ॥ अब जिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यंते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमड्डु२ वाजै चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ गननं२ अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजै चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोन्ने, जैसा सरद पूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओछव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावैं, जिनका गुण हे सबसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे२ झोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रन्नुकी, ठोटेपनमें वहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे लकमेमें, बमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता, तोबी जोगी नाहिं सुणाता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया बे जोगी तुमने, बमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंन्नीर प्रन्नूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नन्नमंमल वादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कर्ष२ कर हुआ कर्षाका, चमक बी जका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षी ऊर्मीमें, प्रजु खर्मा हे मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वर्मा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रजुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण मोला, हुवा घंटका आबाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाउ२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोम ऊपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नही चलता ॥ तर णेवाला साहिब उनकूं, ढलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोम खर्मा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी क रता खर्मा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुज्ञ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वमे देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वमी जुगतसें सिंहा सण कर, कोट वनाया देवलका ॥ जगो२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुज्ञ केवलका ॥ ज्ञामंमलके आगे शोज्ञता, मूल गुंज्ञा- रा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोज्ञित, सिरे काम सिंघा- सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहसफणा प्रजु पार सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥ अढारसे पैंसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मास ज्ञला ॥ सुदी तीजकूं तखते वैठै, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वमी

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुंश वाजै चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठननं२ अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजै चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोभे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओठव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावैं, जिनका गुण हे सबसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे२ झोके खाता, बारे बरसकी उमर प्रज्जुकी, गेटेपनमें वहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे लकमेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता, तोबी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया बे जोगी तुमने, वमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज गेमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंज्जीर प्रज्जूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नज्जमंमल वादल चमा ॥ ७

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ (दुहा—साखी) हस्तिनागपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभुकुं वहिराया, देव करत जयकार ॥ अक्षयतृतिया भई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम हन केवल चिद्‌रासी, नाथ भये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु भासी ॥ (दुहा—साखी)॥ कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जगी घगी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृष्ण घनस्याम मूरति नीकी, सजल घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद भमरकीकी, भक्तिरस कुंगल पुर सीखी ॥ (दुहा—साखी) ॥ गणीशय अगतालमें, ज्ञानपंचमी रंग ॥ कूग कपट तज भेट भई जिन, सुंदर कमला संग ॥ कुशलकुक्षसार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल भान प्रकाश तत्व दरसाये, प्रभू चउद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण छवि गाये, भामंगल धजवर दुंदुभि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका वीच सिंहासण भारी ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगे, प्रभु शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके भाव प्रगट गत रागे ॥ भाषै सिद्धारथनंद सुणत भ्रमभागे ॥ तिहां नरपति सुरपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागै ॥ गौतमकूं भेजा प्रतिबोधन उपगारी॥ प्रभुपा०२॥ अम्मावश पिछली रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोछव कीने ॥ गौ

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोरुता सवाईने, वम्रा साहमी वात्सल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वम्रा शिखर निशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥ पारसनाथकूं तखत बैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिविजय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वम्रा ॥ गुलाबचंद साहेब के आगे, जिनसासनका काम वम्रा ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग में, ग्यान ध्यानसें खम्राश, हाथ जोम्कै अरजी करता, पारसनाथ जी तूंही बम्रा ॥ वम्रा काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, नविजनकुं सुखके दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

ऋषन्न तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥ वंश इक्ष्वाकू नन्नचंदा, नूमिपति नान्नीके नंदा ॥ मात मरुदेवा सुखकंदा, प्रगट नये जगजन आनंदा ॥ (दुहा–साखी) रेणु पूंज पर थापकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप नयो सचिपतिको, आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ नये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥ मौलि पर कनक मुगट राजै, मालगल मोतियनकी ठाजै ॥ श्रवण युग कुंम्ल अति साजै, निरख ठवि कोटि न्नान लाजै ॥ (दुहा–साखी) हीर वीर सोन्नावणी, आप ताप ऊलकंत ॥ युगल अलंकृत देख प्रन्नूकूं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥ सुनंदा सुमंगला राणी, नोगसें योग प्रीत ठानी ॥ नये शत पूत्र सुगुण खाणी, प्रन्नूने दिया राजधानी ॥ (दुहा–साखी) चौसठ विद्या नारकी, पुरुष वहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रन्नूनें, प्रजापती अन्निधान ॥ मुनि हुय तजे जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लान्न अंतराय ऊदै आया ॥ बरसदिन नोजन नहि पाया, नेट मणिकंचन

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर उर नार सुण-त धुन साजै ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आउं जिन तुम पाश देख दुख भाजै ॥ ये सुण जिन मेरा ख्याल कुटिलता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचनं मालती फूल भमर मन रींझै ॥ प्रभु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अभंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन भक्ति जमी रुद्रसार नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया महाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजै, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै, प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद भाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज भोग अचलपद साजै ॥ पारसके संगत लोह फनक भयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वरणूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअभयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सैं गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उच्छव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामबाग विच भुवन वण्यो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंदकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु दुरजन

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तब जगत प्रकाशन ग्यान सुधा रस पीने ॥ मेरी धन्य घमी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हियरा हरष न माय फरकता सीने ॥ नई दीवाली जग वीच तन्नीसे जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज रुग लिया नरानरी ॥ तहां नया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधनने किया नुवन विस्तारी ॥ प्रनु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रनु दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल नवि नविकूं लागत प्यारी ॥ प्रनु० ४ ॥ प्रनु धरमचंद हो आप आप जस राजा ॥ क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव अंगिया साजा, प्रनु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन नगणीसे अमताल रुष्ण पख गाजा, नये कार्तिक दिन निर्वाण नेट माहाराजा ॥ प्रनु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुहसारी ॥ प्रनु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रनु रहम नजर कर दिलनर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ तुम दूर वसे वमनागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी ॥ नहि इस डुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक ध्यान नया अनुरागी ॥ जो पल नर पाउं संग अमृतरस पीजे ॥ प्रनु रह० १ ॥ मैं नररयणीके वीच सुपन पनु पाया, पनु अरस परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोम२ आनंद हरख नर आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख देखूं नाथ चरणकी गया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दिल चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजे ॥ पनु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजे, धन२ वो नर उर नार सुण-त धुन साजे ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजे ॥ तो आउं जिन तुम पाश देख डुख न्नाजे ॥ ये सुण जिन मेरा ख्याल कुटि लता लाजे, प्रन्नु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजे ॥ तुम वचनं मालती फूल न्नमर मन रीझे ॥ प्रन्नु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पद्म उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रन्नु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रन्नु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजे कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अन्नंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन न्नक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजे ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजे, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजे॥ वामोदर कंदर प्रन्नु पंचानन गाजे, प्रन्नु नरहरि दीनदयाल मदन मद न्नाजे ॥ प्रन्नु कमठ दीन उप देश दयाके काजे, प्रन्नु धरे जोग तज न्नोग अचलपद साजे ॥ पा रसके संगत लोह कनक न्नयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उछव होत धर्म उजियासी ॥ प्रन्नु रामबाग विच न्नुवन वण्यो केलासी, क्या अदन्नुत महिमा चंद्रकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रन्नु डुरजन

फंदा तोम्ह मोहकी फासी ॥ जिनचंद सूरीश्वर विजयराजके सर सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवल्लभ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री संघ सदा कल्याण भक्ति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय अम्ताल माघ सुद लीनी, सुभ वसतपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रूद्दसार कहे सुखकार भक्ति रस पीनी ॥ भइ कंचन काया प्रभु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण आये फेर मत जाउ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ बप्पन्न कोम्ह जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-वरकुं सिधाए, हमकुं गंम्ही नव भवकी ॥ मेरे सामेर स्याम सलू णे, मैं इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी मैं तो-कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब छंम्ही॥ जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल, बात सुणो पियु मुझ घरकी, हमकुं गेम्ह चले निरधारी, अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-ण हो राजुल, विषयारस हे विष सरषी ॥ यह संसार असार निरं-तर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह भव पार ऊतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पो-हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोभा हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल मांहे, फिर फेरा नहिं फिरनेकी ॥ ने० ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० घनं तथा लावणीओं ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे ज्ञव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण डुख की ए हे संसार ॥ करो प्रनु निहाल अनी जिनदास, रखो प्रनु मुऊ चरणोंके पास॥ १ ॥सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली॥सोबत समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली॥अनंत ज्ञव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी ऊाली॥अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रनुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नान्निनंदन, चरण पर चढे केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे, शीश चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ बोलत हे हियां मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्मोमें धसकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर, हटाया कर्मोंका लसकर॥श्रीजिनराज जिहाज खासा,शरण जिनदास लिया वासा ॥४॥ समऊ मन मेरा मतवाला, तुऊें नहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो ज्ञगवंत पर ज्ञाला ॥ दयासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती, मुऊे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ध्रमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती॥मुऊे बलवंत ज्ञई शोल सती, मिटी मेरी डुर्गतिकी सब गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल पद ज्ञक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट डुरगतिका ज्ञारी, नीर ज्यां ज्ञरती कुमति नारी ॥ वरछी ज्ञन नेणोंकी मारी, रुब्या केइ कामी संसारी ॥ इनोंकी हो रहिये खुआरी, जीता कोइ सदय

धरमधारी ॥ प्रनु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ या ॥ ७ ॥ चेत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥ कुमतिकी पमी गले फांसी, सुमतिसुं रखी दे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासो ॥ हियो खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन रं गया पानी, गती तेरी उरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥ कीसीकी न्रूंमी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी का न्रेटो रे च०, न्नव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो ॥ सुकृत कीजै–महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण न्नज लीजै, सम कित अमृतरस पीजै ॥ लान्न जिनन्नक्तीका लहिये रे–लान्न० ॥ चल०१॥ करो मत मुखसे बमाई, करो०, तज तामस तन मनका सुमति कर घर रहणा न्नाई ॥ रीतसे बोलो–मेरी जान री० ॥ आतम समतामें तोलो, मत न्नरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन मनसें रहियेरे–मो० ॥ च० २ ॥ जोवन दिन च्यारतणा संगी रे, जो०॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पमी नंगी ॥ प्रीत सब तूटी–मेरी प्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी ॥ सुख उःख आप किया सहियैरे–सुख उः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या मैं जिनराज कटी मेरी डुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥ अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ मैं रुल्यो चोरासी मांहि जूल्यो मैं जरम, जूल्यो०॥ महारे उदय अनंता डुख बांध्या जब कर्म ॥ मैं कदियक हूउ रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु कदियक राजा जयो गरथको गरम ॥ जब गरब आणकर बोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत धर्मी शुज आई रे, ध० ॥ अब० १ ॥ मैं सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ मैं कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला० ॥ मैं उलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ मैं पम्या लोजके फंद जोमतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब डुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥ बे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन जायो सदा गुण गाउं, सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण चित ध्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा मैं चाउं ॥ स० ॥ ए

चोरासी के मांहि फेर नहीं आवं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत गाई रे ॥ की० अव० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हांरे तूं कुमति कलेसण नार, लगी क्यूं केडे, ल० ॥ चल सरक खडी रह दूर तुझे कुण छेडे ॥ हांरे तुं सुमतीको भरमायो, मुझे क्युं छोडी, मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत छिन कमें तोडी ॥ तुझ विन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोडी, क० ॥ अव चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ युं झुर२ कुमति आंसु आंखसे रेडे, आं० च०१॥ हां रे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति में रुवो, सेति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज, संग तेरो छूटो ॥ तेरो मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ मैं सहज हुवो हुं दूर तार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेडे, आ० च० २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती के लागो संग मुझे क्यों टाली ॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुणावे गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरो अर काली ॥ तूं हम कूं छेले दूर सुमतिकुं तेडे, सु० च० ॥ ३ ॥ अव कुमतीको लल धायो, रती नहिं झिगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं भगियो, दू० ॥ जिनराज वचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं वात खोटी मन खेडे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस० तेरी अलप उमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तैं दिना चार जुग बीच लिया है वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बैठा काल, करे है हासा ॥ मैं बोलूं साची वात, झूठ नहीं मासा, झू० ॥ तूं सूता है कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अव सेव देव जिनराज खलक में खासा, खल० ॥ तेरे जोबन पतंगका रंग, झूठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी ठा संसार भेद नहीं दीजे ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर ली जै, हिये०॥ पण नीच नारका संग मांहे मत भीजै ॥ अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे दुरगति दे पोहचाय तेरो तन छीजै ॥ तुं सुख दुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं०२ ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु टंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि या नहीं तें लाभ, वखत पर करका, व०॥तेरी वीती वात सब जा थ जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया, आ० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास सुधारस पाया ॥ मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ मैं चाहुं चर णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसणकी, मेरे ए हि माया, मे०॥ यूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४॥इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार, सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गाजै ॥ ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्यान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम नवल इक वींद, अनोखो बाजै, अ०॥ सुरनर सब गावै गीत, गगन में गाजै ॥ अब दोड़२ सब दुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे० १ ॥ अब चढा नेम तोरणकूं, आनंद दिल भरकर, आ० ॥ सज आये सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ मैं पायो परमानंद, हरख

हिया नरकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥ सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, स्या० ॥ पशुअनकी सुणी पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्यागी, शिवरमणीके शिर वींद, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढी राजुलकूं, खमी भिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके नही पाणी, टि०॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥ अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो नव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक वीच मगसी पारसका बाज रह्या मंका, मुगति गढ जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं क्षय कीया रे, क० ॥मुगतिमहलमें केलि करै, अनुनव अमृत पीया ॥ शाशता जीया, माहाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पदवी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥मुल० १ ॥ प्रनु पारस नजले नाई रे, प्रनु पा०॥नाव नमरका मेट जोत तेरी जगमें सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥चंचल चितसे मत चालो, गुमान गरबकूं गालो, गरवसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे शुन्न नाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रनु मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ नवि जीव ध्यान दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डुख मिटया मेरे अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे, म० ॥ नहि कुमती मेरी आंख विलोया परव विना पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही रे, पुदगलमें मान्यो सुख कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वेगो, विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥ मुगतीको मारग मेट, जवटमें जावै ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहि, विकल बुध भई रे ॥ पु० १ ॥ आरे धन दोलत भंमार जरया हे मोती, ज०रया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत छिन मांहि सरब क्षय भई रे, स० ॥ पुद० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सुखभर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सझिया शोले सणगार, नारिसें मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक निगोदकी वाट, पकम़ कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ मैं सुख संपतको नाथ, मेरे कुण तोले । डुर्बल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥ चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आयो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाम़ वनाइ चंगी, व० ॥ पलभर परवास्यो पुन्यतणो तिहां भंगी ॥ पकमी परभवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंस गयो आकाश काया पमी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो० ॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥ मैं नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर पछे लागी, तुम त्याग चलै वनखंम़ भये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सखवंती जावसैं त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमैं ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण जर२ रे, नेण॥ मैं० १ ॥ मैं अरज करुं करजोड़, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार, देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवैं नयणमैं नीर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ मैं० २ ॥ मैं नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठै, च० ॥ मेरे घरमैं कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे; जो० ॥ मैं चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं ज़र, जगतमें वर रे, ज० ॥ मैं० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥ पीछै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परभात, नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नाहिं ज़र जगतमें बेली ॥ युं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ मैं० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समझावे ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवे ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रीका परवसमें पड़ियो, ग्यानकला कहो केसैं जगे ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो है, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करे चूंथणी, चरचासैं चित नहीं लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नहो देखै, दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसैं नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखै ॥ तीनूंही प्रणमैं राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फासीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकूं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममे रुख अंबको, एरंम अंब सरिखो सूझै ॥ पारख नहीं है हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझै, गाफर देख कहै मुज घरमें, कामधेनु इतनी दूझै ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें भातो, लोभ मांहे लपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीम पारकी नहिं सहतो ॥ भगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन वचन मुखसें कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पूछ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वे जिन मुद्राधारी है ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी है ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी है॥ कनक कामनीके नही भोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी है ॥ न० २ ॥ छ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी है ॥ करम काटकर केवल पावै, ज्ञानगरथ गुण भारी है ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रध्धासें सुमती सेवो, निज आतमकूं तारी है ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै, उनके चरण बलिहारी है ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी है ॥ सरधा शुध्ध सदा उपदेशी, भविजनके उपगारी है ॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सप्त भंग नय, देश काल आचारी है ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी है ॥ करूं२ में० २॥ सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी है ॥ निन्हव अरु पाखंम खंमते, जैनधर्म जयकारी है ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी है ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधे, कहे पाठक रुद्धसारी है॥ करूं२ में० ४॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुंश्‌ में उन कुगुरुकुं, कनक कामनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अष्ट करमसें ज्ञारी हे ॥ तजूं० १ ॥ करी कपाल वभूत लपेटी, शिर पर जटा वधारी हे ॥ कान फाड़कर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजूं० २ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासे, वे मद मांस आहारी हे ॥ कूड़ा पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजूं० ३ ॥ कहूं उगुण कुगुरूका कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप डुबै उरनकूं डूबावै, डुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजूं० ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीनवै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजूं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास झूठो रे झूठो, येने लेइ लाकड़ी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं ज्ञरतो, ग्यान हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही घड़तां, जैसो लकड़को ठुंठो ॥ यो० १ ॥ ज्ञणवा गुणवाका गुण नाहिं आया, कोरोही पकड़्यो पूठो ॥ गपोड़ा सुणकर लोक पूजता, ए अलग डालको ठुंठो ॥ यो० २ ॥ पंडित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो, साचा नरको संग न करतो, कूड़ कपट नहीं छूटो ॥ यो० ३ ॥ झूठोही बोले झूठोही चाले, कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके, जिनदास सबसुं रूठो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आउ घटे तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो करले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंडल रवी चंद्रमा, सब्बी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां ज्ञलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागै, दुनिया जाय खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी है मंगलकी ॥ हंसा छांड चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥ मनमावत तन चंचलहस्ती, मस्ती है बलकी ॥ सदगुरु अंकुश दीया आनके, वातां भई थलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ झूठ कपट कर माया जोडी, कर वातां छलकी ॥ बोझकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ए वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊपजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन भांत तिरणा॥ हम दुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति को० ह० १ ॥ घोराघोर नरकके भीतर, नानादुख भरना ॥ मारन ताडन छेदन भेदन, डर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर, देख२ झूरना ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरणा॥ दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके भक्यो, कहुं नांही थिरना ॥ साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून प्ररूप्या है दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या सुगति मझार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया भवजल पार ॥३॥ (चाल—हीर

रंझेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनशासन नायक, मुगती जाणेकी डिगरी दीलियै ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुदई बनाहे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रखता मुगति मारगका, धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १॥ तप कागद इष्टांम लिया, तखवाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी ग्रान गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने आ घेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूंट लिया सब मेरा जी ॥ जि० ३ ॥ वहोत खराब किया करमोंने, चौरासीके मांही ॥ दुख अनंता पाया मेने, अंत पार कछु नांही जी ॥ जि० ४॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब में अरजी डारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वडा चौधरी, उसकूं पूछ मंगावो जी॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी॥ हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥ जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आये, मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये जी ॥ जि० ८ ॥ (टेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन नायक, कूडा दावा हे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयभोगमें रमिया चेतन, घाट न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ता जि० १० ॥ हाजर खडे गवाह हमारे, पूछियै हाल बिना लियां करजा चेतनसें, केसें करे किनारा जी ॥ (टेर मुद्दीकी) ॥ चेतन कहे सतावी मांही, म सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारे, जाणे सब

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी, करम फरेबी भारी जीव अनंते राह चलतकूं, लूंट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० १३ ॥ वर्म२ पंडित इन लूंटे, एसा दम वतलाया ॥ धरम व उर पाप कराया, एसा करज चढाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ सल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म ए हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ अर्थसें वेद पढाया, हिंसक यज्ञ वताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग खाकर, एसा मुझे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे वताया, तपस्या सेती डिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनै, जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभू अपील होण न पावे ॥ हक्करसी चेतनकी होवे, जन्म मरण जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दो कों समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी, करमूंका करज व या जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चे सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन डि पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर वैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम लाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारू वारण सत्त श्रावगण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको ग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिख है ॥ रोसकी रसूम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद सत्यार लटकाये हैं ॥ १ ॥ वैठके लिखेगा जब जीवकी जुवान थी, तबके कुछ स्वाल जबाब सतगुरुने वताए हैं ॥ ओमकार

जी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी फिगरी कराय लाये हे ॥ अबतो दरकास मेंने करी हे तुमारे पास, साहब जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयें ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत हे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥ मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा बकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीये ॥ हारुं तो हाजर हजूरीमें रह्या करुं, जीतूं तो लगाय जुगल चरणनेंमे लीजीये ॥ अब तो फरियाद नाथ करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीये तो रावरी बडाई हे ॥ मुनसबकी वात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अफील मान अरजी लगाई हे ॥ झूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो मत जैन जाकी ऐन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों झूठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोडकार साजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी फिगरी कराय लाए हे ॥ ४ ॥ इति फिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी भारी, देखनकूं आवे नर नारी ॥ अनंता घोडा भर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ ठंठ पर धजा जो फररातीं, धमकसें धरती थररातीं (दुहा—साखी) समुद्रविजयजीका लाडला, नेम भनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा, उग्रसेन घर गाम ॥ प्रसन भई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥ कसुंबल वागा अति भारी, काने कुंडल छवि है न्यारी ॥ किलंगी तुररा सुखकारी, माल गल मोतियनकी भारी ॥ (दुहा—साखी) कानें कुंडल झगमगे, शीश मुगट झलकार ॥ कोडि भानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम० २ ॥ छूट रही भनकी छरराई, व्याहमें आये वडे भाई ॥ झरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (दुहा–साखी) उग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ वहोत जीव करि एकठा, वाम्ो न-रयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (दुहा–साखी) याको भोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४॥ पीछेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकड्यो छिन मांही ॥ कहां तूं जावे मेरी जाई, और वर देहूं मुकताई ॥ (दुहा–साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम ० ५ ॥ सहेल्यां सबही समझावे, हियै राजुलके न-हि आवे ॥ जगत सब झूठो दरसावे, मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ (दुहा–साखी) तोड्या कांकण दोरडा, तोड्या नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्यां सबही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आभूषण रत्न-जडित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, छोडकर चाली निर धारा ॥ (दुहा–साखी) मात पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ झूरति छोडि मा प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो छिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन छुडवाई (दुहा–साखि) नेम राजुल गिरनारपें, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

गई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह दुख भारि

॥ गा० ॥ चोमासा लग्या रस जिना, अलि अषाढ रंग महिना ॥ च्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा किना ॥ दिल होत धरुकता सिना, मैं अबला सखी पति हीना ॥ (जमाना) सरररर चलत समीर, थरररर करत सरीर ॥ मरररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर, बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें श्याम घनघोर, अरजोर बोलते मोर ॥ दादुर मिल करते दोर, पिउ२ पपइया सोर ॥ रुम लग्यो वूंद रुमरुोर, बिच चमके दामनी कोर ॥ (जमावनी) खरररर रवघनमाला, तररररर जल परनाला, अररररर नाला खाला, मैं दुखी हुई बेहाल, हीयेमें साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना, बादलमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर रुीणा, ज्युं बाजे मनोहर बीणा ॥ अब एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुफें दुख दीना ॥ (जमाना) युं विलपत मुख मुररुाई, सखियन मिल दौरु जगाई, यूं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्रीत, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर, यादुचंद जये वे पीर ॥ उठ चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (जमाना) शिव राजुल नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, नविजन मिल शीश नमाए ॥ मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे छंद, जाऊं वलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ रुगरुा दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोउं नारीका० ॥ चि० ॥ कहंति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत जुर कषाय इस्कमें जूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनमरकी

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होता न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत छंदगारीका ॥ झगडा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर हे, इंद्री पांच सवादीका ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मैंहुं मोहरायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा वालम वो हे फूल हजारीका ॥ झ० २ ॥ सुण रे वैरन वात हमारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीछे पछतावेगा, आखिर छेह देवेगी वैरण केसें प्रीत निभावेगा ॥ में समझावुंगी प्रीतम मेरा जो मानें दिलदारीका ॥ झ० ३ ॥ कुमता बोली वात सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख दुख दोउं खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही सोणा हे, नही उजाला नही अंधेरा शिल्ला सहज विछोना हे ॥ एसा मेरा भोग छोडके सहे न दुख अणगारीका ॥ झ० ४ ॥ कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, टुक इक सोच करो दिल भीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद इसकी बोत कठिन हे समझके बूझकै नहिं पडना, पहली सुखसें फिर दुख उपजै वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं हे भोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ झ० ५ ॥ एसें बोल सुणे सुमताके चिदानंद उठके चल्ला, नेणोमें आंसु भर रोती प्रीतमका पकड्या पल्ला ॥ मत ना छेह दिखावो साजन सोकणकी सुणकें सल्ला, में अबलासें दगा करोगे केसें होय तुमरा भल्ला ॥ मेंहुं दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ झ० ६ ॥ तजके संग कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय मुगतिमंहल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो जविजन अपणां दिल सम झाया है ॥ कहे रामऋद्धिसार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥ झ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले सिणगार हुई हुसीयार सहेल्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥ कर केसरिया वेस छिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वणी तो दिलदार हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ (उमावणी) नेणनेमे कजरा हद नीका, सिर सोहे रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण वालम दिल वाले, गुने विन क्युं छिटकाते रे ॥ मैं चरणनकी दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोरू कर शीश नमाते रे ॥ (उमावणी) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया मैं प्रीतम प्यारी ॥ साजन प्रीत निजा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद नहीं रैन, सजी तो लगे खारी ॥ च० २ ॥ सजके खुब वरात साथ लिये राम कृष्णसे आई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरझाई, कहो मुझकूं सम झाई रे ॥ (उमावणी) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें अरज हमरी लाणा, सुखसें रंगजर चैन उमाणा ॥ नेणा वरसे मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रजु दे ज्ञान एक धर ध्यान सदा निज जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥ विजली जेसी चमक दमक जेसें उस बूंदका पाणी, अंत मोती खिर जावे रे ॥ (उमावणी) ज्योतिरूपका जज ले सरणा, नित२ प्रेम उसीसे करणा, उर किसीके फंद नहीं पमणा, मेरा वचन ले

मान, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संग रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोडी जिंदगानी रे ॥ चली जाय सब खलक पलकका नहीं भरोसा जाणी, करो सुकृतकी निसाण रे ॥ (झडावणी) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहे राम शुद्धसार, करो तो एसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, राजुल भनी अरज करत हे प्रीतम कब घर आवोगे ॥ दुष भर गाती मनमें चिंता नेणामें आसुं झरते, हाथ जोडके राजुल भनी वार वार विनती करते ॥ ज्यान वणाई व्याहन आए घर२में आनंद वरते, किस विध गांठ चले गिरनारी मेरी दया नहिं दिल धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते, ज्यूं सागरमें जल विन मछली प्राण घडी पलमें हरते ॥ (झडावणी) हे तुं महिर निजर कर आव फेर रथला रे, तूं चंदवदन दीदार मुझे दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी घूंडी खोल चूक वतला रे, हे तुं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निभावोगे ॥ रा० १ ॥ दुखसुं भरी वातां मत वोलो राजुल मन धीरज धारो, एकर थांसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ डर नार नही दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सिधावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन थांसुंमें कीनो राखो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं विसारो ॥ (झडावणी) हे तुं चंपकली सी नार जोवन मतवाली, हे तुं मिरगानेणी मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी उग्रशेनकी लाली, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न भुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी गुंढी

नहिं खोले, या दुनिया मुतलबकी गरजी विन मुतलव मुख नहिं बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभ्भणी मुसकल होले, धन मानव जो प्रीत निभावै तरर अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती करकै राजुल वचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमझोलै ॥ (भुरावणी) देवा चंदकपूर अपूरव ख्याल वणावै, देवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ देवा झांझ ताल मफ ढोल मृदंग वजावै, देवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन वंछितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वसेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे॥ हांरे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हर्यो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे॥ हां० नाग० को० २॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल हद भारी रे, कर श्रीफल भुजबंध झलक छिव न्यारी रे, गल मोतियनको हार वण्यो गुलझारी रे ॥ हांरे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वडाई रे, पारस२ नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हांरे प्रे० को० ४॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥ जदुपति उनका वडा अभंगा, मत छेडो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥ सकतावत चंडावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ डींडुपति वाकूं हाथ जोडे, तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सबेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवै, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ वांझ खिलावे सुंदर लडका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवै ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवरका ॥ भूप भुजंग महरि करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धोंसा वाजै, दशो दिशामें हे झंका ॥ भाज तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूंछ मरोम चढा अभिमाने, जहर भरा हें निजरूंमें ॥ रुषभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूंमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद, वम्हे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर२ घोमा, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ए ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्हवरायो ॥ इसो रुषभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खम्गदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता हे ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, बा-

नहि खोले, या दुनिया मुतलबकी गरजी विन मुतलब मुख नहिं बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभणी मुसकल होले, धन मानव जो प्रीत निभावै तरर अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती करके राजुल वचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमझोलै ॥ (भरावणी) हेवा चंदकपूर अपूरव ख्याल वणावै, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा झांझ ताल डफ ढोल मृदंग वजावै, हेवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन वंछितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वसेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हांरे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हर्यो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल हद भारी रे, कर श्रीफल भुजबंध झलक छिव न्यारी रे, गल मोतियनको हार बण्यो गुलझारी रे ॥ हांरे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वडाई रे, पारसर नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हांरे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥ गढपति उनका बडा अडंगा, मत छेडो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥ सकतावत चंडावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ हींदुपति वाकूं हाथ जोडे, तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सबेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवै, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ वांझ खिलावै सुंदर लडका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवरका ॥ भूप भुजंग महरि करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धोंसा वाजे, दशो दिशामें हे झंका ॥ भाग तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूंब मरोम चढा अभिमाने, जहर भरा हें निजरूंमें ॥ रुषभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूंमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद, वमे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर२ घोमा, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्हवरायो ॥ इसो रुषभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खमगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

भकरम अरु आपकरमकी, भई लराई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-रमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई, करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरें मनकंदरपें ॥ ९ ॥ (मोतीदाम छंद) तूंहि अरिहंत तूंहि भगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तुंहि भवभंजन भाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन भूप, तुंही अविनासी तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वडभाग ॥ २ ॥ तूंही गुण-धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वड नाम ॥ तूंही अघ-नाश तंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही गुण केवल रूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय तूंही जग ध्यान, तूंही चिदरूप तूंही भगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम तात तूंही मम मात, तूंही मम भ्रात तूंही मम गात ॥ तूंही सरणागत राखणहार, तूंही डुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसें नही डरते ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुझ शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो डुख मोसें सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष प्रसन्न हुय फल बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास भई मन, चिंते सब कारज लीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवड, नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देश२में प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रभु करुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल भूतल ऋद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान भयो तब, पातस्याह लश्करवा आयो ॥ बूत भूत पत्थरकी मूरत, जममुल्लासें भखरायो ॥ ॥ ८ ॥ वहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर२ मोले ॥ ९ ॥ सुनो वात काजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निजरे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब भये महाबल, शस्त्र झमोझम विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करणे लगे, घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गामली, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥ (चाल लावणी ॥) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हें प्रभु धरती ॥ गाय एक कोमी वनियनकी, आइ वाहां चरती२ ॥ स्त्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांझ समें फिर नही दूजे ॥ रीस करी तब गोपालन पर, गौपाल थरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो, लख्यो भेद कह्यो वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित भये हे तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, ऋषभनाथकी मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, भीतर मूरत पूरत हे ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ब दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं दुक्कर बाधा, कब प्रभुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ२ महाराजकी मूरत, संघ सबे लीनो आमो ॥ ७ ॥ जवरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंतर भर व्रण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥
॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥
मध्य विराजै रुषभ तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ए ॥
(दूहा) संवत अढारे तेसठे, भाउ सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो
दुष्टने, भाखूं वरण वनाय ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद ॥) सदा-
शिव राय चिंते मन एह, लूंटे बहु धाम जमीं पर जेह ॥ भिल्लां
पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग द्रव्य भंमार सुणाय ॥ १ ॥
जावां अब लूंटण गाम धुलेव, ग्रहुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो
निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २॥
कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, छंगा भर साथ लिया कोकवाण ॥
तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥
॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति
हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव भूप, ग्रहां सब माल
अबां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत दुष्ट करूर, कीयो नज
राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, भयो मन
चक्कितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत भंमारी बुलाय, मीठे
वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मझार, कियो
तव कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तव गाम पुकार२, भंमारी सबे
इ पुकार२ ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज
गरीब निवाज ॥ चढो अब वाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ (दुहा)
अण समें कोन सेठको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्ठायक
नाथजी, भेरुं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी
सहेर धुलेव मझार ॥ कियो अकारज दुष्टने, शीघ्र चलो जन तार
॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संभाल ॥ दो घोमे
दोनुं चढे, भेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ भिल्ल कोप आपे कियो, द-

छा दिशि फौज हजार ॥ मार२ चौ तरफतें, भई लराई त्यार ॥ ४ ॥ (भुजंग प्रयात छंद) कूकू कुकू कुकू वहे कोकवाणं, सणसं सणसं तीर तरकस्स वाणं ॥ धुबाके धमाके वहे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्ररा घाव लागे, किते मारतें कंपते दूर भागे ॥ किते दंतपें तिरण लेवे वराका, कितें थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुल्लाह्-लल्ला पुकारै, किते दीन होके खुदापें संभारे ॥ किते नाथपें केसरा खून मायै, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशिवनें घाव लागे अटारो, पुनी भाग जसवंत दोनुं संहारो ॥ वम्रो कोप जाणी सबे फौज भाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी॥४॥ सदाशिवने आखमी अटक लीनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो॥ इसो नाथ धूलेवरो मईगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥५॥ (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, तारच्या केई जिनराज ॥ दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंछित बंछित रुद्ध॥ तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥ तूंही कामकुंभ तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥ तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वम सेव ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इछित दायक नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम रुद्ध भंडार अगाह ॥ ४ ॥ तूंहि मम मंत्र तूंहि मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम तंत्र ॥ तूंही गछनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्य तूंही जगपूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश२ नृप आवत हे, केशरमें गरकाब रहते, केशरनाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे दुहाई नाथनकी ॥ दिं

मूसल वरू राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट अलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरै, इक चित्त ध्यानें जे नित समरे, अखय खजाना अन्नर न्नरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरूगरू दौ गम्दगम्द दौ गरूगरू, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, न्नीमसिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो ज्जलसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, न्नरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म न्नीती हरन, सब करम बंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद चंद पदजुगल सेवन, जगत विरुद तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज बहादुर, रुषन्ननाथ असरनशरन ॥ १ ॥ रुषन्ननाथ महाराज, सबे दुख दालिद न्नंजन ॥ ऋषन्ननाथ महाराज, सबे न्नूप मनरंजन ॥ ऋषन्ननाथ पृथ्वीनाथ, समरथो वाहर धाये, ऋषन्ननाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज वहादुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रन्नूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, घनन घनन वाजे घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा विजुरी चमका ॥ गिरुआ गाज जल मूसलधारा, धरू धरू काजन शंका ॥ आ० २ ॥ अररर आशन कंपे सुरको, तव धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तब, ऊमक जाय प्रन्नु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत बाजे, धौं धौंकट ठुंठुंन्नि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब, झफ झौं झौं करते झंका, न्नेरण फेरणके झनकारे, झागझदी झालरके झंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद सब जै जैकरते, जीवत सफल न्नया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर न्नयो सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥ घमा एकसो आठ शेलमी, रस न्नरिया है नीका ॥ उलटन्नाव श्रेयांश वहिरावै, मांम दिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव ठुंठुन्नी वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो, गई न्नूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ ठुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटो कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी नानु कहता, रुषन्नदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता न्नवमें ॥ अ० ॥ आव्यो बुं तारा शरण, बली ठुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, ठेक ठंठेमे

मूसल वर्म राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे नित समरे, अखय खजाना अम्मर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गम्गम् दौ गम्गम् दौ गम्गम्, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर, भीमसिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब बणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, भरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म नीती हरन, सब करम बंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद चंद पदजुगल सेवन, जगत विरुद्द तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज बहादुर, ऋषभनाथ असरनशरन ॥ १ ॥ ऋषभनाथ महाराज, सबे दुख दालिद भंजन ॥ ऋषभनाथ महाराज, सवे भूप मनरंजन ॥ ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, समरथो वाहर धाये, ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज वहादुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सव कीरत कहे ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, घननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जव कमठासुर कोप कियो तव, स्यामघटा विजुरी चमका ॥ गिरुआ गाज जल मूसलधारा, धरम धरम काजन शंका ॥ आ० २ ॥ थररर आशन कंपे सुरको, तव धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तव, झमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकर धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत बाजे, धौं धौंकट डुंडुभि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब, झफ झौं झौं करते झंका, झेरण फेरणके झनकारे, झागझदी झालरके झंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद सब जै जै करते, जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ घडा एकसो आठ शेलडी, रस भरिया छै नीका ॥ उलटभाव श्रेयांश वहिरावै, मांझ दिवीआहूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुभी वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो, गई भूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटा कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोडी नानु कहता, रुषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो छुं तारा शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुझ केडे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, छेक छेडे

मूसल वर्ष राणा हाजर, पूरै इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलव
थलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरे, इक चित्त ध्याने
नित समरे, अखय खजाना अम्मर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिम
धपमप धपमप, ताल पखावत राजत है ॥ गम्गम् दौ गम्गम् दौ गम्
गम्, धों धों नोवत वाजत है ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर, भीम
सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागन
॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषे, फागुण सुदि तेरश दिवसे
मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (क
लश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल
हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, भरण पोष पावन करन ॥ जुगलध
नीती हरन, सब करम छंघ घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु
कनु वरन शुद्ध चरन, इंद्र चंद्र पदजुगल सेवन, जगत विरुद तार
नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, रुषभनाथ असरनशर
॥ १ ॥ रुषभनाथ महाराज, सबे दुख दालिद भंजन ॥ रुषभना
महाराज, सबे भूप मनरंजन ॥ रुषभनाथ पृथ्वीनाथ, समरथ
बाहर धाये, रुषभनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविज
कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव
सुरनर सब कीरत कहे ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारशी है जिनका, घ
ननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १
जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गि
आ गाज जल मूसलधारा, धरूम धरूम काजन शंका ॥ आ० २
थररर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फ
विस्तार हजार किया तब, झमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ३

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत बाजे, धौं धौंकट डुंडुंभि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब, ऊफ भौं भौं करते झंका, भेरण फेरणके झनकारे, झागभदी झालरके झंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद सब जै जैकरते, जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ घडा एकसो आठ शेलडी, रस भरिया है नीका ॥ उलटभाव श्रेयांश वहिरावै, मांड दिवीआहूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुभी वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो, गई भूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र है, मोटो कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोडी नानु कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुझ केडे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, छेक छेडे

॥ आ मुजरो मुझ भगवान, करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी ॥ धा० ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या छे पाप, सुणजो आप, कहुं करजोमी॥ क० ॥ मुझ भूंमामां भगवान, भूल नही ओमी ॥ जो वहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ कूंठूं बहु बोली, सावने सुं हरवुं ॥ तुझ खोलामां मुझ शीश, जाण जगदीश, गमें ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म, धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो थइ थारी आण में ज उत्थापी॥ में मुरख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हरखायो ॥ क० ॥ परदारा देखी लवारू, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केशव लाल, आपीनें व्हाल, छुःख तुं हरजी ॥ छु० सेवक० ३ इति पदं ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे ॥ समुद्रविजे सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक तीनों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ बहोत हर्गासुं ब्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ पट्पंचाश कुल कोटि प्रमाणे, जादव उनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब वरात बणायके रे, उग्रशेन दरबार ॥ आए प्रभुजी हरखसूं रे, चढगये गिरनार ॥ मो० ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अव गुण बोमो मती रे, कोइ नही छे दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद षष्टी दिने रे, इंद्र चंद्र परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने रे, करम दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदकू रे, चैत्र शुकल शुभ वार ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो० ६ ॥ राजुल पहली नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निभाई जुगतसुं रे, रुद्रसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक पोथी अरु पदमनी, नहि दीजे पर हत्थ, जा

विगमै पंमित विना, वा विगमे पर सब ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजो प्रन्नाते चाली रे ॥ आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुनें, मोतीमें थाल पूरावो ॥ चार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ २॥ धन धूत धनतेरस दिवसे, काले चव दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजे, कर्म मेलो सब टाली रे ॥ आ० ३ ॥ अमावसकी परव दिवाली, फरती फाकफमाली, घर२ तो दीवलिया फलके, रात दीसै अजुवाली रे ॥ आ० ४ ॥ अम्मा वशकी पिछली राते, आठ करम सब टाली, श्रीमहावीर निरबाणे पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ५ ॥ पमिवाने दिन जुहा रपटोला, ए रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीफ पामी रढियाली रे ॥ आ० ६ ॥ बीजे तो वली न्नावमबीजम, बे नमली अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होया रे पनोता, एबेरं ह रखे गाई रे ॥ आ० ७ ॥ हरख विजय पंमित इम बोलें, करो स हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंमित गुण गावै, जय२ बाजें ताली रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे थई आज, प्रन्नुमुख जोवाने, सर्या२ रे सेवकना काज, न्नवडुःख खो वाने १ ॥ महावीरस्वामी मुगतें पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रन्नु निरवाण ॥ जिन मु० २ ॥ चारित्र पाल्या निर्मलानें, टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एह वा प्रन्नुने वांदियेतो, उतारे न्नव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला वंदोरया वीरजीनें, तारी चंदनबाल रे ॥ केवल लइ प्रन्नु मुक्ते पो हता, पाम्या न्नवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांदिये जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रन्नु ता

स्या नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम नणे, मारो नवनो फेरो टाल ॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी ऋषन्न विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रन्नु आलस अंग हुलसाई, पूछे मरूदेवा माई ॥ पो० १॥ प्रन्नु नंदा सुमंगला राणी, नन रुच२ सेज बिछाणी ॥ पो० २ ॥ प्रन्नु नवलसु नेह सनेहा, प्रन्नु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अजर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥ पहिले मंगल प्रन्नुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥ बीजुं मंगल अगर नखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे मंगल आरती ऊतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मंगल प्रन्नुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि नेटो रे, नविजन सुखकारा ॥ सि० ॥ प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, नाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ न० सि० १ ॥ ऋषन्न जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल पगला प्रन्नु नेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ न० सि० २ ॥ चोमुख बिंब मनोहर अदन्नुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलनायक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत पुख सहु वारा रे ॥ न० सि० ३ ॥

मात चक्केसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ दुष्ट निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥ ४ ॥ खरतर गच्छ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गुण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज०सि०६॥धर्मशील पदपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना गुण, पभणे मुनि रूद्धसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी ॥ प्रथम पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज छाजै, जगत प्रभु गुण बारै साजै ॥ (दोहा–साखी) अष्ट करम-दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनंता भजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रगट भयो निज स्वरूप भारी ॥ ज० १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद सूरज जेशी ॥ उमारयो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा–साखी) चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद भारी ॥ ज० २ ॥ द्रव्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ (दुहा–साखी) ज्ञान पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें, निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोडी सब राणी ॥ यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ (दुहा–साखी) करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ क्षमा युत नव-

भा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र भजो भाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा- साखी) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुफ आश ॥ बाल कहै नवपद भवि प्यारो ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल ईडरआंबाकी॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जेसा जगसें तारण, मिलणा नही असान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ट भगंदर राजरोग सब, भूत प्रेत बल नाश ॥ नवपद जैसा निरभय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्हं पद अरिहंत॥ सिद्ध सूरि उवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगे, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग बरणूं, मैंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत नउमाल ॥ सुरनर भूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि- मलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्केसरि मात ॥ उठव विविध करे मन शुद्धसें, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जयश्र श्रीऋद्धसार ॥ ९॥ इति पदं ॥ पुनः॥ (रथ चढ जडुनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तन्दित्कांति प्रभ, मदन चंद छवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासें, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर ठाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, भीति अरुज सब भाजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी वालूचर, अंतरंग अरि दाऊत हे ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरणा माजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति नुपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम अमी नामकी, लखमी लोल पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान भक्तिभर, रुद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि भक्तकूं तारो ॥ सां० १॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥ धन२ आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसे अमतालीश शुभ दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्टा सारो, कुशल निधी कहै रुद्धसारो ॥ सां० ५॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं छांड चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

भा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र भजो भाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा-साखी) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आश ॥ बाल कहे नवपद छवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंद्रसभाकी॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जेसा जगसें तारण, मिलणा नही असान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ट भगंदर राजरोग सब, भूत प्रेत छल नाश ॥ नवपद जैसा निरभय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्हं पद अरिहंत ॥ सिद्ध सूरि उवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगे, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग बरणूं, मैंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥ सुरनर भूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष सहाई, वरचकेसरि मात ॥ उछव विविध करे मन शुद्धसें, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जयश्रीऋद्धसार ॥ ९॥ इति पदं ॥ पुनः॥ (रथ चढ जदुनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तरुित्कांति प्रभ, मदन चंद छवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरफसें, च-

सुधा पीठ विराजत है, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर छाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिद्घन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, भ्रोति अरुज सब भ्राजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी वालूचर, अंतरंग अरि दाऊत हे ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरणा माजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति भुपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम जपी नामकी, लखमी लोल पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजे कुशल निधान भक्तिभर, ऋद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि भक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद्र वदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥ धन२ आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसे अमताळीश शुभ दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै ऋद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं छांरू चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी भास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, झरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुषनकी, हिलमिल भ्रमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत भरी पिचकारी, षेलूं प्रभूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो छतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें भई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा ॥ (दूहा–साखी) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ भरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी झिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ भरतादिक जी सौ पूत्रनके झरसें, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा–साखी) नगर अयोध्या युं झुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंभा भरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ भादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ भरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ (दूहा–साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै भोगविलाश ॥ सब माया या ऋषभकी, छोड गया वन-वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आसू महीने जी सूरतकी छिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके सब लोभी जो पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो वडभागी ॥ (दूहा-साखी) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद्र पद सेवे जी नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो ऋषभ घर आवें, मोहे नेणा आण वतावे ॥ नही कागद जी मुझकूं पूत्र पठावे, मेरा जीव बहोत दुख पावे ॥ (दूहा-साखी) झुरती निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती ऋषभसें, जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥ मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे लडाइ ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढकर आई ॥ (दूहा-साखी) बारा वरस लडते भये, इंद्र दिये समझाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, भये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा जी ऋषभ जगत प्रतिपाला, मैं रटुं ऋषभकी माला ॥ (दूहा-साखी) कोइ परवतकी छदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै वहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥ मे० ७॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे ऋषभका वेरा ॥ (दूहा-साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥ राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भरतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यूं करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा–साखी) भरत विविध तर भांतसों, कहता वात बनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ आय ॥ प्रभू पधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए॥ चैतका महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ (दोहा–साखी) इंद्रध्वज आगे चले, भामंमल हे लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, डुंडुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा मन हरखै, जब ऋषभप्रभू मुख निरखै॥ नैणपट उघम्या जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा–साखी) गज ऊपर मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी हुई, एसें ऋ-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में ऋषभ चरण लई लाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ (दूहा–साखी) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित दुख धंद ॥ हे जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूवरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी–मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन वीच पीया इंद्रर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

मरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकूं टि-टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी झारी गले फासी—मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खवर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग भीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या भासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग भोगी सो काम-ण, लगी तुमें प्यारी॥ पीया मैं चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश पीया उलंभा देती हिये नहीं धारो, नहीं छोडूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर झारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी--मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी ठंड वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मु-झकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण भांजै, नहीं वझन कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजै ॥ पिया विन करूं मैं गति काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, मैं अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग मैं खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं बाला जोरी ॥ कंत मैं दरशनकी प्यासी--मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करै, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद परै ॥ प्रीत जिन नव भवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोरी ॥ नेम विन हो रही उदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूं उलकै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुलारी गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद्र चंद्र शेवित पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी—मो० १० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजे कंत बुरी, नही रैण सुख चैन शखीरी चल रही प्रेमछुरी ॥ पाप कोइ पूरब उदै आया, ठोम्ह चलै घनस्याम आज मैं दरशण सुख पाया ॥ तजो मैं सब घरकी फासी—मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम चरण भेट्या, धर करणी भव तिरणी होकर धंद सभी मेट्या ॥ प्रीत तुम अजर अमर राखी, ऋद्धसार आधार तुमारो प्रेम शिवा शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी—मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अभिनतोत्तम भक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज सुंदर सद्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकश्वरं ॥ अति सुवर्ण सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय भक्तिभरेविनां भवेभवे, भवेदभीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदात्म समुद्भवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्माभितप्तान् भवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो भवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धये जिनराज शीतलः ॥ ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्त्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्त्तिः, जयतु मम भवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य भृंगीव पद्मा ॥ अवि कृतमति कायोत्सर्ग मुद्रान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि बिभ्रत् सत्फणानां सहस्रं, बहुल विमल भास्वद्भूषणोभासि गात्रः ॥ गुरुतर वर भक्त्या सक्त चित्ताङ्गभाजां, भवतु शिव समृद्ध्यै चाश्वसे निर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका पहर्त्ता ॥ विकशित्त मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु भुजग लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेंद्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या श्वं तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै, रघाधस्या नघा गुणाः ॥ स्मर्यंते येन सस्मार्यो, भवेत् प्राचीन बर्हि षां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता मक्रयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन, येन कल्पद्रुमा अपि ॥ भवेदभ्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृतायच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाभ प्रदायकः ॥ कल्याण कारको भूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥ यक्षेश पार्श्वं शित पाद पार्श्वं ॥ नुवामी पार्श्वं भवभेद पार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसी सून सम प्रभावा, सम प्रभावा भवदीय मूर्त्तिः ॥ बि- भाति वामां प्रभव त्रिलोके, भव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥ तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता भवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष नूतर्षितं दान वारि, यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गण्युत्तम दानवारी, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव, सुज्ञान सुज्ञानभिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णभूयः, कल्याण कल्याण करं गभाजां ॥ ५ ॥ येरच्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोभिरा मैः सुमनोभिरामै ॥ कर्माभिधे रुज्झित भूघनास्ते, विसारि लोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम धामा न्वितं, पादाब्जं परभाग भूत् त्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्म विपक्ष पक्ष दलने भव्या भवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्ति माप्तु मखिलंतीर्त्वा भवाम्भोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंदः ॥ गौम्भोग्रामे स्तंभने चारु तीर्थे, जीराव- ल्या पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्तिं, श्रीपा- र्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे भूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥ २ ॥ भित्वा भेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधी शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्नाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तोत्र ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनवना घननाद विभाजि- तं ॥ भजत भक्ति भरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं ॥१॥ विविध वर्ण विभूषित विग्रहाः, विदित उद्दम दर्प्पक निग्रहाः ॥

वसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रन्नवंतु शिवंकरा ॥ २॥ रुचरचर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रन्निवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल न्नव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-वरानन पद्म गतोन्मुदा, न्नवतु वाग्जिनलान्न शुन्नार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांन्नोनिधेः, सद्भा-वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भुत प्रतिबिंब तस्तु-सुतरां गोरुीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो न्नव्याव्रजंतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि दुष्टजंतुनिवहै र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविन्नुर्ध्यचिन्त्यमहिमा हृश्यो-नकेषांन्नवेत् ॥ २ ॥ छित्वान्तःकरणान्नुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-वितां, धृत्वानिर्मलन्नावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लन्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुषन्नस्ततोजितजिनः, श्रीशंन्नवस्तीर्थकृत् ॥ सुश्रीमानन्निनंदनश्वसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रन्नः ॥ पृथ्वीकुक्षिन्नवसुपा-र्श्वे, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रन्नः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री शीतलसौम्यदृक् ॥ १॥ श्रेयांशप्रन्नुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांतिःकुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हंतोनमिनेमिशुद्ध मुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रन्नुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, र्निःशेषो-त्तमन्नव्यजंतुहृदयांन्नोजप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवंद्यविशदश्रीं

कब्रजानिर्ऩय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेंदव-प्रवचनांभोधौऽव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्म्मःसूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्रयालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिना धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोयेच क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशै लेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्ज्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा विनयःप्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनाम रगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता, जंबुशाल्मलिचैत्यशाखिपुतथावक्काररूप्पा दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंडलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भावतरोजयत्यर्हतांजन्माभि-षेकोत्सवे, योजातः परिनिष्क्रमेवचभवो यःकेवलज्ञानभाक् ॥ यःकै-वल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिंगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका-श्चजनकायक्षाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपा निधिसुरा दिक्कन्यका श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमंगलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिसततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृएवंतिपठंतितैश्वमनुजे र्द्धमार्थकामान्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति मंगलाष्टकं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥ न अंगं नसंगं नइच्छा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नेशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नेकर्णौ नवक्त्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिंता, नक्षुद्रं नजोतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विद्धंस कर्म्मारिजालं ॥ नपुण्यं नपापं नअक्षानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्धि नमूढा, नछेद्यं नभेद्यं नमूर्तिर्नमीहा॥नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्रव्यं नक्षेत्र नदृष्टो नभव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो न्निन्निसं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेभूतगतागते सुख दुख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवंश हर्ष हृदयं श्रीमानभूदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्टति चिरंपापं, छिद्र हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि- नाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति२, जिनेभक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु२, सदामेस्तु भवे२ ॥ ५ ॥ नहित्राता२, नहित्रा ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नभूतो नभविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभं ॥ नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि- त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो कोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हं तः, शिद्धा शरण मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्म शरण मर्हं तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगछ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स द्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रि सलातणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान महावीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछे गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा रग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयैं, व्रत धरीये गु रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदिये, भा
व भलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु
जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधनतणा, ए छे दश अधिकार ॥ चि
त्त आणीने आदरो, जिम पामो भव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥
ए छिंडी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशण चारित्र तप
वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह भव पर भवना, आलोइये
अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी
रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु उलविये नही गुरु विनयें, काले धरी बहु
मान ॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधा, भणिये वही उपधान रे ॥
प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह
तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥
३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ भव प
र भव वलिय भवोभव, मिछाडुक्कड तेहरे ॥ प्रा० समकित
ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत
अभिलाष ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥
प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंडो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा
हमीने धर्मे करि थिरता, भगति प्रभावना करिये रे ॥ प्रा० स०
६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे
वको जे विणसाड्यो, विणसंतो उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-
त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आ भव प०,
मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण
गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध
वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ श्रावकने धर्मे सामायक, पो
सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली
रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डहोळ्युं

जेह ॥ आन्नव०, मिछा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे न्नेदे तप नवि कीधो, बते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविनं न्नगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्या जेह ॥ आन्नव०, मिछामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर वचन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२) पृथ्वी पाणी तेन, वान वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करी करसण आरंन्न, खेत्र जे खेम्मीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥ घर आरंन्न अनेक, टांका न्नोयरां, मेम्मी माल चिणाविया ए ॥ लींपण गूंपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, ऊीलण अप्पकाय, बोती धोती कर दूहव्या ए ॥ न्नाठीगर कुंन्नार, लोह सोवनगरा, न्नाम्नूंजा लिहालागरा ए ॥३॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए॥ इणि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेन वान विराधियाए॥४॥ वाम्मी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंहक पापमि शाक, सेक्या सूकव्या, बेद्या छूंद्या आथिया ए ॥५॥ अलशीने एरंम, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए॥ घाली कोलू मांहि, पीली सेलम्मी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकेंडी जीव, हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आन्नव परन्नव जेह, वलिय न्नवोन्नव, ते मुऊ मिछामिडुक्कमं ए ॥ ७ ॥ क्रमी सरमिया कीमा, गाम्मर गंम्मोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥ वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ नद्देही जूं लीख, मांकम मंकोमा, चांचम कीमी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहिया घीमेल, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे मैं दूहव्या, ते मुझ मिछा० ॥ १० ॥ माखी मछर मांस, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढीकण विछु तीड, नमरा नमरीय, कौंता बग खडमांकडी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे मैं दूहव्या, ते मुझ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या, वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे मैं दू०, ते मुझ० ॥ १३ ॥ (ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल) क्रोध लोन नय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिछामि डुक्कड आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, नव२ मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवै साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी नोजन जे कर्या जी, कीधा नक्ष अनक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्या परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई वीसारीया जी, वलि नांग्या पञ्चखाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलडीनी देशी ॥) पंच महाव्रत आदरो, साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया संनारीयै, सा० ॥ हीयडै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सबे खमावियै सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥ कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमाविये, सा० ॥ जे नप नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशासन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज धर्म नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीये, सा० ॥ कूडा न दीजे आल तो ॥ रती अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध२ वोसराविये, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वसे ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घड्या घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भव२ मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जनमांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

परन्नव जे करथा ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसि राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम करी ए, पाप करथा परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ७ठी ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाळ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थ नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु र्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पमिक्कमणा सुपेरे करथा, अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवज्झायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ न्नाव न्नलो मन आणीये, चित्त आ णी ठाम ॥ समता न्नावे न्नाविये, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचरथा, न्नोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणुं, ऊाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ न्नाव न्नली परे न्नाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरे ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चखी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूंकी ठांमी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आ हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीन रंक ॥ डुलहो ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिन्नद्र खंधो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या न्नवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यै करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारें महा मंत्र नवकार, मनथी नवि मूंको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरबनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जुउ जील जीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहु पाम्या छे सुर जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली जवजय दूरे नांख्यो, जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ (ढाल ८ मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतर्या ए, करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कर्या घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूफण आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं छुं एहथी उजग्यो ए, छोडव देवदयाल ॥ ज० ४ ॥ आज मनोरथ मुफ फल्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूठो जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव जव विनय तुम्हारडो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ (कलश) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिणवर चरण थुणतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्रभसूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय विजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे, रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४॥ नरभव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील विलास ए ॥ निर्जरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥५॥ इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिझाय लिख्यते ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिभद्दो, वरय रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिभद्दोअ ॥ भद्दोअ दसन्नभद्दो, पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबूपहू वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी

॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चजामा, रुप्पिणी कन्हट्ठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जरकाय जरकदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाई महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासिं, जस पन्हदो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिच्छंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ छविहआवस्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसुपोसहवयं, दाणंशीलं तवोअभावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणिणं, गुरुथुअसाहम्मिआणवच्छलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईछज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोचरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणंपभावणा तित्थे ॥ सड्ढाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड़, जिनवर नामे मंगल कोड़ ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अड़ लख धार, पांचमें वांदूं लाखज च्यार ॥ २ ॥ छठ्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्राशाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरभुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास ऊंचा बहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकसो असी बिंब परिमाण, सन्ना सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम्ड बावन कोम्ड संनाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर साठ विसाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोम्डने बहो-त्तर लाख, नुवनपतीमां देवल नाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोम्डि निव्याशी कोम्डि, साठ लाख वंदू करजोम्ड ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर वंदू तेह ॥ रुषन्ना चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-काणो पाश, जीरावलो ने थंन्नणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अन्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे न्नव-सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ न्नुर्नुवःस्वस्त्रयी-शान, मार्हत्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यन्नावैः, पुनतस्त्रिज-गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषन्नस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लान-
केवलादर्शे, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्या-
तुल्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवान
भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥
भगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह,
भासःपुष्णंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
भोगभास्वते ॥ ए ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
मुर्त्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेस्तुवः॥११॥
सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातुवोजिन ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-
श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत,
तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः॥१४॥
विमलस्वामिनोवाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मातमःशांत्यै,
शांतिनाथजिनोस्तुवः॥१८॥श्रीकुंथुनाथोभगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-
भिः॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥१ए॥ अरनाथस्तुभ
गवां, श्चतुर्थारनभोरविः॥ श्चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः॥ २०॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं॥कर्म्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमभि
ष्टुमः॥२१॥जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुठंतोनमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणं ॥ वारिप्लवाइवनमेः, पांतुपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, जूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ ॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वकर्मनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वीरस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रंदिशः ॥ ॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्यवैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानांभावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्तपालग, निवाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं, संतिसामि पायाणं ॥ ज्रौंस्वाहा मंतेणं, सवाशिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सोंह्रींनमो सवोसहि, पत्ताणंचदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवीजस्करायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्कंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ वज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगंधारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अछुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआन देवीन ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके- सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन, बंम्नोमाणुन्नसुरकुमारो ॥७॥ छम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधव्वतहयजरिकंदो ॥ कुबेरवरुणोभ्निन्नमी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीनचक्केसरी, अजिआडुरिआरि कालीमहाकाली ॥ अच्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवच्चा ॥९॥ चंमाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअच्चुआधरणी ॥ वइरुट्टहु- त्तगंधारी, अंबपनमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्कणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहाविं ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कसयाअ म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मज्ञविकरेनरस्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना हसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्दवरहिओ, सलहइसुह संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्ञासिद्धिंन्नणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुरकलवई विज यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, न्नवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रन्नु जनमिया, वली योवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ न्नोगवी सुख संसारना, संजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्रन्नु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नांण ॥ वृषन्न लंछने शोन्नता, सर्व न्नावना जाण॥६॥चौराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण न्नुवनमां जोअतां, नहि कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रन्नुजीनो

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं ताहरो, नहीं मेलूं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमे अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे, नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योतिनेंपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीनें जे चढे, तेने भव पार

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें मैं दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रणय भुवन ना नायक छै, जस चोसठ इंदर पायक छै, नाण दरशण जेहना क्षायक छै॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छै, जश धोरी लंछन पाया छै, पुंडरीगणी नगरीनो राया छै ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि विराजे छै, जश चोत्रीश अतिशय छाजै छै, गुण पंत्रीस वाणीयैं गाजै छै॥ सुणो०॥३॥ भविजनने ते पडिबोहे छै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छै, रूप देखी भविजन मोहे छै॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो छूं, पण भरतमां दूरे वसिओ छूं, महा मोहराय कर फसियो छूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छै, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छै, तव कांइक मुझथी डरियो छै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहै पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखडियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाडो रे, लागे मुनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा हो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो, वाला० देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इड सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां, वा० मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्रीआदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंडली, तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कस्या, जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाभिराजांगजं, वंदेरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेअजितंजिनं भृगु पुरे श्रीसुव्रतंस्थंभने, श्रीपार्श्वप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवनेग्रैवेयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा ऽिवसतो स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे कुंमले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्मह्रदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रवि-भवे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहृति त्रिपथगा ज्ञानां-वुधावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्व विकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्र श्चंद्ररवियद्दाश्वधरण ब्रह्मेंद्रशांत्यंविका, दिग्पालाः सकपर्द्दिगो मुख गण श्चक्रेश्वरीभारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा दिषु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुभद्रंकराः ॥ इति श्रीपंच तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

(नदी यमुनाके तीर उमे दोय पंखीया ॥ ए देशी) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चल्या परदेश तपे मो री गातियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कब मिले, नीर विगो ह्या मीन के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारूं मन भमें ॥ जो होव सज्जन दूर तोही पासे वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन उ ल्लसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावे देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें, साले रे साल समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड जोवनवय अति दहे, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहे ॥

फुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मिली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाढ्यो ते नवि टलै, चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते छीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वांद्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनें ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती मनरली, रूपविजय प्रभु नेम भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिझाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा छोड़ने दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे छूरी झूरसे रे, सहीसे इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊंचा चिणाव्या मंदिर मालिया रे, दे दे धरतीमें ऊंडी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्रवर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥ कणीरने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करता मुनि नवला तेह विहार रे ॥ भारंडपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे ममता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पालै रूडी रीतसुं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जश लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि भणगानुं अभिमान रे, ऋषी चोथमल सूत्र

देखीने रे, जोम करी जालोर मझार रे ॥ आज० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू रूपचन्द जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वरूं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारकगिरि ऊपरे, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रूपचन्द कहे जिन समरतां, पोहचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजिये ॥ मुझ परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहियै ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें, हुआ बहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुशम नपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा लगै, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे नगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी, जावजीव नत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच माशनी, पंचमी करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, कानसग्ग लोगस्स केरो, ऊजमणूं करो नावशुं ए, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति पंचमी चैत्यवंदन सपूणर्म् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण वदि आठमें, संन्नव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या ऋषनजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कस्या दूर ॥ अन्निनंदन चोथा प्रन्नू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगनाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्यांथी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज यज्ञ ॥ इंद्रभुति आदे मिल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चतु गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ॥ ऋषभ अजित सुमती नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव वास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सगली जोडी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देहसें कल्याण ॥ वरश इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखावियें, एकादश पाठा ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी ॥ मसी कागल काठा ॥८॥ अग्यार अव्रत छांडवा ए, वहो पडिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिब देव, अरिहंत सकलनी भाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर भाषित वाणी, जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार वखते पण कहवाय छे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जासे शिववहु पासे जी ॥ १ ॥ बत्रीस चउसठि

चनसहि सलिया, इगसय सहि चक्किा जी॥ चन अम अम मिली मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चन च्यार जघन्य दश जंबू, धायई पुस्कर मझारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे, प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत्त रचिया, गणधर लब्धि विकसिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्कर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चनविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश रुद्धी जी ॥ श्रीशुभ वीर कहे शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्रणमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंद विमानें शाश्वत जिनवर जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजे द्विविध धर्म भगवंत, जेम विमला कमला विउल नयण विकसंत ॥ आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजे पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्केसरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमी बीजे हुं प्रणमुं तस पाय, इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामवं-

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखो ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरियै परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-भदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंता जिनवर, फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य २ वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवभव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी, कोड कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुजसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति- घणा, एकशो ने पचास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये भव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपा- लोकनविस्मया, हृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रभा धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्ध- मानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसांपयोधरभर, प्रस्पर्धिभिःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषेकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥ चित्रंबव्हर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतंव्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुभूति र्दिशतुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतितओ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींदु गोखीर तुसारवन्ना, सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहाय सा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम चंद्र वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंश, कुलमांहे जिम ऋषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमा वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांती, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथे बोलै, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिनलुं वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भर तराय, छहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै,, भवबीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे आण्यो, सुणता सुख भर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख नें चकेसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, ऋषभदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीसा विराजे रत्नना दीवा दीपे जी ॥ कुंकुमवर्णी गहुंली विराजै मोतीना अक्षत सार जी, त्यां बेठा सीमंधरस्वामी बोले मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन भरी रे कचोली कस्तूरी बराश जी, पहलो रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचेंदिय संबरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहिं गुरूमज्झ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइअ सुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिनकए, समणो इवसावऊहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधें पारिंडं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना दश वचनना बारे कायाना एवं बत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ पोसह पारवानो गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवडिंसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइभयवं, दढव्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधें पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुड होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरस्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगभाव वियस्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मभू-मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लब्भई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, भरुअच्छहि मुणिसुव्वय ॥ महुरिपास

दुइ दुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का उपन्न अठ कोमीउ, बत्तीसय बासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लस्क अमवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमा- मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निवि त्ति गिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायव्वो ॥४॥ बारसविहंम्मिवि तवे, अ भिंतर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वा सो त वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ काय किलेसो संली णया य, बझो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायछित्तं वि णउ, वेयावच्चं तहेव सझाउ ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अभिंतर उ त वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त मा उत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाषितं, दिनागमे नौमिबुधैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं० सुअ देवया नगवई, नाणावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे नत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक अमुखली थापना मूकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहेरी जग्या पूंजी कटासण ऊपर बेशी मुंहपत्ती मावा हाथमां मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नत्थऊससिएणं कहै, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह नगवन् सामायक मुंहपत्ती पमिलेहुं इच्छं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पमिलेहणना पचास बोल कही मुंहपत्ती पमिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह नगवन् सामायक संदिस्साउं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं इच्छं । एम कही बे हाथ जोमी एक नवकार गणी इच्छाकार नगवन् पसाय करी सामायकदंमक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व मेल करेमिनंते कहे, पठी खमासमण देई इच्छा० बेसणो संदिसाउं । खमा० इच्छा० बेसणेठाउं, खमा० इच्छा० सिज्झाय, संदिस्साउं खमा० इच्छा० सिज्झाय करुं इच्छं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पठी बे घमी सज्झाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पमिकम्याथी (यावत्) लौगस्स सूधी कहो खमा० इछा० मुंहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पमिलेही खमासमण देई इछा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इछा० सामायकपार्युं तहत्ती कही पछी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पारवानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पछी पाणी वावर्युं होय तो मुंहपत्ती पमिलेहवी अने आहार वावर्यो होय तो वांदणा बे देवा, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पछी यथाशक्ति पच्चक्काण करवुं, पछी खमासमण देई इछा० कही वमेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन कहवुं, पछी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही ऊन्ना थईने अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० कहीनें प्रथम थुई कहवी, पछी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पछी पुक्करवरदी० कही सुअस्सन्नगवउ करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थू० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पछी वेसीनें नमोत्थुणं कहै, पछी चार खमासमण देवापूर्वक न्नगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुन्यः प्रते थोन्नवंदन करीयें. पछी इछाकारेण० देवसिक प्रतिक्रमणठाउं एम कही जमणोहाथ चवला अथवा कटा-

च्यार खमासमणपूर्वक ज्ञगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधू प्रत्येके वांदवा, पछी खमासमण बे देई सद्मायनो आदेश मांगी एक नवकार ज्ञणीने ज्ञरहेसरनी सद्माय कहीने फरी १ नवकार गणवो, पछी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहवो, पछी इच्छाका० राईपडिक्कमणेठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर थापीने पछी इच्छं सवस्सविराईय डुच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिज्ञंते कही इच्छामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सबलोएअरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, पछी पुरकरवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गाथानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सिद्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा तिहांथी लेने अब्नुठिओमिखामी वांदणा बे दीजे तिहां सूधी देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे राईयं कहेवुं, पछी आयरियउवज्झाए० करेमिज्ञंते० इच्छामिठामि० तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवडे तो च्यार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कही छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा, पछी सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं, पछी इच्छाकारेण संदिस्सह ज्ञगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमण काउसग्ग पच्चरकाण करयुं छेजी, एम छ आवश्यक संज्ञारवा, पछी पच्चरकाण करवुं होयतो करवुं छेजी अने धारवुं होयतो धारयुं छेजी, एम कहवुं, पछी इच्छामोअणुसधिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्० कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पछी लोगस्स० पुरकरवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही भगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवीराय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमासणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउसग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधियें सामायक पारवुं इति ॥

॥ अथ पख्की प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हत्नुं कहेवुं अने थोयो स्नातस्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह भगवान् देवसियं आलोइयंपडिक्कंता इच्छा० पख्कियमुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेहीये, पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाकारेण० संबुद्धाखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अब्भिंतर पख्कियंखामेउं इच्छं खामेमिपख्कियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पख्किअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपख्किउअइयारोकउ कही इच्छा० पख्की अतीचार आलोउं. एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितमूलबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिदुक्कडं ॥ सवस्सविपख्किअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ इच्छाकारिभगवन् पसाउ करी पख्की तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पचाश वेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठवेआसणा वेहजार सज्झाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश कर्यो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीये पछी वांदणा वे दीजे, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अप्भुठिओहं अप्भिंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पछी वांदणा वे दीजे पछी देव-सियआलोइयपडिक्कंता इच्छाका० जगवन् पक्खियंपडिक्कमुं सम्मपडि क्कमामि इच्छं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपडिक्क मिउं जोमेपक्खिओ० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० प क्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा वैसी जमणोढींचण ऊन्नो राखी एक नवकार गणी क रेमिजंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिजंते इ च्छामिठामिकाउसग्ग जोमेपक्खिओ० तस्सउत्तरी० अन्नहू० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल यरा सूधी कहवा अथवा अडतालीस नवकारनो काउसग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणा वे दीजे, पछी इच्छाका० सम्मत्तिखामणेणं अप्भुठिओहं अप्भिंतर० पक्खिअंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमा समण देई इच्छाका० कही पक्खीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पछी देवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कह्या पछी वे वां दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्झायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोटी

शांति कहेवी ॥ इति पक्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पक्खीना आगारने ठिकाणे चउमासीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छठ्ठणं बे उपवास च्यार आंबिल छनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहजारसज्झाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पक्खीना बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एकशो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआसणा अने छहजार सिझाय ए रीते कहवुं अने पक्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिक्कमवी. थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सनउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे बेसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढी जीव कलेवर सच्चित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पच्चख्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमिये, पछी जगचिंतामणीनुं चैत्य वंदन जयवीयराय सूधी करवुं पछी मन्हजिणाणंनी सिझाय कह वी, मुहपत्ती पडिलेही इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारूं यथाश क्ति० इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारयुं तहत्ति एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी प च्चख्काण कर्युं होय ते केहेवुं, ते लखिये छिये॥ उग्गए सूरे नमोक्का रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चख्काणकर्युं चउविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं कर्युं तिविहार पच्च ख्काण फासियं पालियं सोहियं तीरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन आराहियं तस्समिच्छामिदुक्कडं॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुख्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंडरीगणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह ॥ (आंकणी)। मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा सियो रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो माहाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करो रे, बांह्य ग्रह्यांनी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे रे, भयभंजण भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनुं स्तवन ॥

(॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देशी ॥) ॥ प्रणमी शारदमाय, शासन वीर सुहकरूं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, श्रादरो भवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदनतणो जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभ ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वरया मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नोर, समकित छोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चरकाण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभवरूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी सुख लोजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववंदन त्रिण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुभ चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ भूपनो रे, सिद्धारथ भगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, भाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ भवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतमत-णारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ भ० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्झाय रे ॥ भ० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ भ० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासोरे ॥ भ० ५ ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ भ० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ भ० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, भणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ भ० ८ ॥ भणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लभ चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ भ० ९ ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे ॥ भ० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्दपना ज्नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें ज्नणवा मूंकिउ रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, ब्रात्र ज्नणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढे व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोज्नित अंग ॥ गुण मंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ ज्जुन्नग पण परणे नही रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक ज्नूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-देशना सांज्नले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ए ॥ ज्ञान विराधन परज्नवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे ड्ुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख देत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्ठी पूढे मुणिंदने रे, ज्नाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंग-जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां)

धातकीखंमना ज्नरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव छै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥२॥ बालस्वन्नावें रामतें, करतां दहाका जाय ॥ पंमित मारे जाहरे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, न्नणवानुं नही काम ॥ पांम्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पाका परे मोहोटा थया, कन्यां न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुऊ करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी न्नाखे न्नामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छै सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुऊ बेटी ऊपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ए ॥ मुर्छागत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ ऊज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार ऊपवास ॥ १२ ॥ पूरब ऊत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि ऊदार ॥१३॥ दीवो पंच दीवटतणो, साथियो मंगल गेह ॥ पोसहमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौन्नाग्यपंचमी, ऊजवल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये, ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाग विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे, पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खमिया लेखणी॥

कवली झाबली रे, चंदुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रासाद प्रतिमा तास ज्रूषण, केसर चंदन झाबली ॥ वासकूंपी वाला कूंची, अंगलूहणा गावमी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वछल, नोकरवाली थापना ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग ऊपनो रे, कवण करमना ज्ञंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मुनिराज ज्रासै जंबुद्वीपें, ज्ररत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मल्या ॥ वैराग्य पामी ज्रोग वामी, धर्म धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे, अशुज्र उदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी ज्रणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥ ऊंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या ज्रूतमो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, ज्रस्यो पापतणो घमो ॥६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुऊ लागुं पाप रे ॥ श्रुत अज्यासे रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, ज्रोयण खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ (त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज्र ध्याने आयु पूरी, नृप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जमपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ ज्रव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुज्र मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवमो ॥ गुण अवगुण रे, ज्रासन जे जग परवमो ॥ ए ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कह्यो किम आवम्हे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावम्हे ॥ नृप पभणे पूत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवम्हो ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवम्ही ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसरयो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ भूपें कीधो पाट वी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भीम कांत गुणें करी रे, वर दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें२ ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदरयुं रे, लोक सहित भूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ९ ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शुभापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सु
ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥
त० ॥ लाख पूरब समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥
पंचमी तप महिमा विषे रे, नाषे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे
जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

(ढाल छठ्ठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंडक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंडकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांम्हणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषभदत्त वली विप्ररे, हुं० ॥ व्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरी, हुं० ॥ मुज ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्ये, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इय वीर लायक विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोडर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साढापचवीश देश जो, दीपे रे त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्या रसन्नर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतुर्विध आवै कोमाकोम जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंड्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्नें जड्या रे लो ॥ हां० सुणतां डुंडुन्नि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम लूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवै जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे न्नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे न्नायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिन्नूवननायक लायक तव न्नगवंत जो, आणी रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां कां पमो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणिउ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूबे गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पमिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

भांखियो वीरे आगमतणो, नविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें नचरी प्राणिया, पामसे नवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग नासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे नण्यो रंगे स्तवन ए आगमतणो, जे नविक नावे सुणे गावै कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसर्या ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवर्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, नक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम नद्धार, कारण तुम विन कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय नपाय वताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति नज्जल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिथि नल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेऊ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें नपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रवती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति

(ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ विनयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाधे जिम वमबीज, शुन्न अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि नाषे महान्नाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, नजवी तप शुनगे री ॥ ४ ॥ सांन्नलि सकुः वैण, आनंद अति नल्लस्यो री ॥ तप सेवी नजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांन्नल केशवराय, आगलि जेह थसे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धदत्त वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुन्न स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, नत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नाल निक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्न्न दोहद अनुन्नाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि नद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥ ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगियार कंचन कोम, नायक पुण्य नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सांन्नलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, नक्ते तप नच्चरे री ॥ एक

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छै, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंगें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें भोजाइयो कही देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ए ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूडा मैंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नवरावित्रा, निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला भणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-रा बेउं पक्ष उजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेउला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम उजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरया रे, के-हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे तें थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-जो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

लद पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छै, तेहथी निश्चय जाण्यां जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, हसलें भोजाइयो कहो देवर माहरा लाड्का, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्यु आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूडा मैंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नवरावित्रा, निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला न्हावा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाम्ही बेसाम्ही मोहोटे साज ॥ पसली ज्ञरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखम्ली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोम्ही लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-रा बेउं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगम्हां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संज्ञालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोम्हे घणे अवगुणे सहु ज्ञरया रे, के-हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-जो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पाम्शो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमवाथी मांमीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अर्ध्धुं जयवीराय आभवमखंमा सूधी हाथ जोमी कहे, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्थुणं कही यावत् चार थोयो कहीये ठीये तिहां सूधी बधू कहेवुं, पछी नमोत्थुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं कहेवुं, पछी नमोत्थुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अर्ध्धुं जयवीअराय आभवमखंमा सूधी कही पछी चैत्यवंदन कही नमोत्थुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजे देववांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पमिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० कही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीरुषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करे ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर रुषभदेव, सवठथी चविया ॥ वदि चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दिवसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्थुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये छीये ॥ (॥ अथ थोय जोमो प्रारंज ॥) रुषभजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषभ लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु गाया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ २ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसर्या निरधार ॥ गिरि कडणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगड सूत्र मझार, सिद्धाचले सीधा बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार, जिन ज्ञेटे थावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी शासननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संज्ञाल ॥ गिरुओ जस महिमा संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उलगडी अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ० ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत ज्ञगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहै, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रंग सुविशेष ललना ॥ ज्ञरतादिक थया केवली, अनुज्ञव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाज्ञिराय कुलमंडणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ ऋषज्ञदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषज्ञजिन स्तवनं ॥ पढो जयवीअराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इछा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें मुनि थया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ ३ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्ग करके थुईनी गाथा कहै. इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ भविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुझ पद लीनो, जेम जल मांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति अजित थोय ॥ ॥ अथ श्री शंभवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री शंभव ॥ फागुण सुदि आठम दिनें, शुदि चवदशी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया, तणी पूनम संजम ॥ कार्त्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरूपम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीझै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथथोयप्रारभ्यते ॥ जिन शंभव वारू, लंछने अश्व धारू ॥ भवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर तरुपरी वारू, दुसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अभिनंदनराया ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे ग्रहिय दिख, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ॥ अभिनंदन वंदो, साम्यमाकंद कंदो ॥ नृप संवरनंदो, घर्षिताशेष कंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंछने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें, नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापै ॥ अविचलपद आपे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रभुध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठदिवसें ॥ काती वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू मनावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥१॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ छठा ग्रैवेयकथ्री चवी, जिनराज सुपास॥ भादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसे जण्या, तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

दिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासें ॥ सुरनर जस दास, संप दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण वदनी सातमें, केवल निराबाध ॥ जाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अष्ट महासिद्धि संपजे, नय कहै जिनअजिधान ॥ २

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॥ शुज नरगति पामी, उद्यमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ मुफ अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति [illegible], [illegible] पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्फदंत ॥ फागुण वदि नवमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शुदि नवमी जाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ सुविधि जिन जदंत, नाम वलि पुष्फदंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म दुरंत, लच्छि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजें वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीझे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारभ्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम है नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठे, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह अमावशि, देशन चंदभरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसुख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सवि जिन अवतंस, जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतभय विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥ माह शुदि बीजे केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीजयादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणे निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शुदि मह्य त्रीजें जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोय प्रारम्यते ॥ विमल१ न्नावे, वंदतां डुख जावै ॥ नव निधि घर आवै, विश्वमां मान पावै ॥ सुघर लंछन कावै, न्नोमि न्नरस्वेद आवै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति॥

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसैं व्रत ॥ वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चनदमाए, कीधा डुष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि छीजै ॥ शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दाजै, एटलुं काज कीजै ॥ मुऊ मन अति रीऊै, स्वामिनुं कार्य सीऊै ॥ ॥ १॥

॥ अथ धर्मनाथ जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहसाशनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमन्नार ॥ पोषिपूनमैं केवली, गुणना न्नंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांश न्नीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिन्नुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ न्नाद्रवा वदि सातम दिने, सवठथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जणया, डुःखदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥ केवल उजलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवमा ए शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सप्त भय ईति वारी ॥ सहस चउसठि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे कपूर चोखी ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीम्हानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, छंड्यो पण तुम्हें नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न लावो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे, पण छैरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चालै, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति खांची मनमांहे आण्यो, सहज स्वभावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥ सा० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अक्षयभाव निधी तुम पाश, आपी दासनें पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

काई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्य-
वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें, सव्वथी चविया ॥ वदि
चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,
लीये संजमन्नार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प
म्डिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ छठा चक्री जय
करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥
जिन कुंथु दयाला, ठाग लंछन सुहाला ॥ जश गुण शुन्नमाला,
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति न्नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला
॥ त्रिन्नुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया,
फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमी
जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल
बारसें, केवलगुण वरियो ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद
लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीनें नमूं, नय कहे जोमी हाथ ॥१७
॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारुं, क
र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संन्नारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज
यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥
चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्या
रसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥
फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर
नीलमा ए, नगणीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणन्नूपपद, न्नव
जल तरण जिहाज ॥ १ए ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥
जिन मल्ली महिला, वान छे जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री
पणें नाम पीला ॥ डुस्मन सवि पीड्या, स्वामि जो छे वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १ए ॥ इति मल्लि स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा जितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण न-जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरना-यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्र तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुज अंतरजामी कामदाता अका-मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रा वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अक्खय अनंता सुक्ख ॥ नय कहे श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःक्ख ॥१॥ ॥ अथ थोय प्रा रभ्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्व गानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंन्न गे जे कृपानो ॥ स वि नुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीनें मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्राव सुदि बठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए, रा[illegible] मतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ इ[illegible] ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शं[illegible] निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ [illegible]

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अड धातकीखंडे, सुरनर सारे सेव ॥ अड पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, नवजलनिधिने तारे ॥कोहादिक मोटा, मछतणा नय वारे ॥ जिहां जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ नवि नाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥३॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विडारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो नव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंन ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घडीयां, दो घडीयां दो चार घडीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अडवडियां ॥ रहो० १ ॥ नाह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चडियां ॥ रहो० २॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गेड दीए पशु पंखी चिडियां ॥ रहो० ३ ॥ गोद विगाउं में बली जाउं, करुं वीनती चरणे पडियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवड, न गमे स्वपनमें सेजडियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन, वाडी वन घर सेरडियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट नवांतर नेह निनावत, नवमें नव ते वीछडीयां ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी सुणीने, राजुल रेवतगिर चडियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलडियां ॥ रहो० ९ ॥ जादव वंश विनुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलडियां ॥ रहो० १० ज्ञान विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखडीयां ॥ रहो० ११ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदि दशमी ज-

नम, त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसें, लहै मुनिवर पंथ ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाल्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिनें ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख भरपूर ॥२३॥इति ॥ ॥अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विफारे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोफि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अनुभव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर भाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशविधि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्त प्रकार, पच्चक्खाणादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे भया जिहा उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयविमल विशाला, ज्ञान लच्छी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छेगलो मारूजी ॥ प्रभु पास जिनेसर भुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरमसंदिर भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण भोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ षट् दर्शन भासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद्वाद विशालें सहज समाजे भावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञाननें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी भेद अभेद नही त-

आ ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखियें, सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरामी गो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञानमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्यासी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितकाशी कवि ज्ञणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनक्षायक गुणमणी लायक नाथ है, सा० ॥ डुर्गति डुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ है ॥ सा० ॥ जित मनमथ साधक त्रिज्ञुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अनेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें पुदगल ज्ञोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सहु कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा० ७ ॥ इम तुम गुण थुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥ पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिज्ञुवन इंदा संथुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय वंदा गुण ज्ञणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ ७८ दिवसें, प्राणतथी चवियां ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर केवल साधे ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करे उद्योत ॥ ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ लह्यो ज्ञवजल तीर, धर्म कोटीर हीर ॥ डुरति रज समीर, मोह मूलार सीर ॥ डुरित दहन नीर, माण ॥ कप्पें सग्ग कर पणसय धणु माणुं. सासय असासयं

मेरुथी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कल्पद्रु कीर ॥ ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला, धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला बिशाला ॥ सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ नवम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ दुह पीलण घाणी, सांभलो भाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला, टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ थी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता जाया जी ॥ हरि लंछन कंचन सम काया, मुझ मनमंदिर आया जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समयें शासन जेहना, शीतल चंदन गाया जी ॥ जे सेवंता भविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन भेदन बलवत्तर, वीर विरुद जिन पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, दुसमन दुर गमाया जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिता तूं सदा था जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥ वंदो० ५ ॥ गुण अनंत भगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीयराय कहेवो ॥

॥अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय ठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणाणं) २ (ए आंकणी) विहुंतेर लक्ख सग्गकोडि ञवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोडी, सग्गस ६ विंबह परिमाणं ॥ सही० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन, यमक कुंड इह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, ज्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अड शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंड नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोडि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोकें, जिन पडिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ए ॥ त्रिञुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लक्ख वसें व्यासी ॥ आठ कोडि अथ प्रतिमा संख्या, सुणजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोडी बैंतालीश कोडी, सेम अठावन्न लक्खा ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रतिमा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सन्ना तिहां साठ वधारो, एकशत अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषञ्च चंद्रानन नें वर्द्धमान, वारिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पडिमा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ञावना ञावै, समकितगुण दीपावे ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन ञावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रनु नाम जपंता, लहिये कोमि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सगला सीजै, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ नयहर नगवंताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउसग्ग पारी पठी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ रुषनदेवे नमुं गुण निर्मला, उधमांहे जिम नेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठे, नवर मुऊने चित्ते रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पमिमा प्रणमुं नित ऊगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ नविक देह सदा पावन करे, उरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन नासनकारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रनुतायेदीपता, उरित उष्टतणा नय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहा एक जण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांनलै ॥ पठी सर्व जणा काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहै ॥ पठी बैसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पठी सर्वें जण मुखथकी आवी रीते कहे-श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीकायनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेंद्रायनमः ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३ श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः १६ श्रीसूरज्नइगिरयेनमः १७ श्रीकैलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनमः १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पढे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ढिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलमियां ॥ पीलमा प्रनुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइयें, सा० ॥ एहीज मुग ति नपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी गयाये वैसीये, सा० ॥ रातमो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे नवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अनंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ नव२ तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थम ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाढे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने नहाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु नाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाण कामें० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव० ॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख लंछन गुणखाण के अंजन वान छे हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परण्या विगुअ छे हो० प० ॥ १ ॥ तूंहीज जीवन-प्राण के आतमराम छे हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम छे हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो० नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरे हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह नदास एसी धरे हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्मे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धीर महाव्रत नच्चरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमभार पहोचाड्यो पारनें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुण्या हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥ तुह्मे तो दीधा छेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिउ मुझ शिर हाथ होवे जस संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नही हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोडो दोडे सही हो० घो० ॥६॥ सबला साथे प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी जे थोडी किहां जाओ वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते भीड न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर सलीनें कीजीये होला० स० ॥

विमल गुरु नाखियो रे, आवश्यकन्नाष्यनी वाण रे ॥ न० से० ॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरन्नेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोछव कीजै जी ॥ ढोल दमामा न्नेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल न्नावना न्नावी, मानवन्नव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण पूरव पुन्यें, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय करीनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वमाकल्पनो छठ करीनें, वीरवखाण सुणीजै जी ॥ पमवानें दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहियें, जो शुन्न न्नावे रहियें जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कल्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, ऋषन्न चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ बारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पमिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवाफी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन सामीवछल, कीजै अधिक वमाई जी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू न्नली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोरणथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पदमणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो पीउ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख देण ॥

नो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पडै हो लाल, प्रीत संग पोढै नारी ॥ प्रीतम त्रिण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो लाल, पाश नही भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चांदणी रे लाल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनें वालम विना रे लाल, रोवत जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोम लगात ॥ सासनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछै मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ए ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झरलाइ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण बिहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, भाद्रवडै वर खंत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजै आंसू झरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछी साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती दृढ वाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ सेंहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतडी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद भणी यो करि दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगै, हांरे जिन आगे रे जिन आगे, हांरे ए तो अविचल सुखमा मागै, हांरे नाभीनंदन पाश ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हांरे दोय चरणे झांझर झमकै ॥ हांरे सोवनना घूघरी घमके, हांरे लेती फूदडी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशली डफ वीणा, हांरे रूडा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां, हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरब पून्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हूं छुं तारो, हांरे भवोभवना दुखडा वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखिउ करजो, हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणीरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुभमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरीपुरहुंती हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी याद्धाय ॥ हसती तो सिणगारया हो नेमीसर साहिब थे भला, घोडलांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाडो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ कुणो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

थो, ए पशु बांध्या छै किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे छै महाराज ॥ ५ ॥ थोंका तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब छोड़िया, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब छोड़ने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमभार ॥ ७ ॥ राजुल तो झूरे हो नेमीसर साहिब एकली, जल विन मछली जेम ॥ नव भवारो हो नेमीसर साहिब छोड़नें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समझावे हो राजुल दुःख मत करो, एतो कालो छै भरतार ॥ पाछे तो राजुल भाषै हो सहेली मारी थे सुणो, इण भव ए भरतार ॥ ९ ॥ राजुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परिवार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पाछे नीकल्या, एकली रही छै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अतियणा, भोज्या छै सबि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति भली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना झणकार ॥ झणका तो सुणिया हो रहनेमी बेठे ध्यानमें, खोली छै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी बेठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मांनै छोड़ी छै नेमभरतार ॥ १३ ॥ भोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांड़नो, उलटी करै नांखै तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाछो नही भखै, भखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, हुं वमा भाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम माहरे ऊपरां, तो पड़स्यो थे नरक मझार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावैं वारंवार ॥ कपड़ा तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती है प्रभु दरबार ॥ १६ ॥ राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो संजमभार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती है मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आगलै, मिलिया है मुगति मझार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रभूजी॥ अविचल थानक मैं सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रभूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया आतम काज प्रभूजी ॥ छूटा संसारना दुख थकी, रहवानो किहां ठाम प्रभूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे, तेहना बारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाडी विचै, छेड़े माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ उजला हार मोतीतणा, गोदुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी उजली अतिघणी, उलटो छत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दीपती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसुं जाई अड्या, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ॥ वैरी नहीं मित्रो नहीं, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गो- तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥ शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥ ॥शि० १०॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही ऊजाम हो गोतम ॥ काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि० ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वमाई वास हो गोतम ॥ शि० १२ ॥ अनंता सुखमें फिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो गोतम ॥ सहु कोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय हो गोतम ॥ अवर जगया रूंधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित छे, केवलदर्शन खास हो गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवे कदाश हो गोतम ॥ शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥ शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि० १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वमेरो॥१॥ नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धे समृद्धे अलकानें जीपे॥ राजा समुद्र विजे शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥ तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले छे बाथो ॥ आणंद घणें वसंत आयो, कुली छत्तीसें फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा सारू चलिया गोपालो ॥ मफ चंग वाजे रमे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतभामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेमनाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥ राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई, जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुंगलने भेरी सखरी सझाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरी जी गावे गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदझरता मेंगल झाकझमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, लाभी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोली मांग भराई ॥ सीस फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भाले टीकोजी सोहै, अणियाली आंष्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवेसर मोती भलके भलेरा ॥९॥ दाभिमकुलियां दांत वत्तीसे, बदनी बोलै सार बत्तीसै ॥ झुलमी तिलमी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रूपैकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ झांझरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपै सुंदर हालंती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गरकाव कीधी ॥ फाबंते कपमै सखियां वणाई, राजूल सरखी नार न काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां तिण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोमजी ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागे मिलिया छै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही जानी भूपति भलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें झाल पडामै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता सुरपतिसुं जुर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ छुमाया, अण-

परणया नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग् २ संसार मायाजंजालो, जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥

प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपाध्याय मन आणियै ॥ (उल्लालो) आणियै निज मन भाव सुद्धे, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नैं शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री बिन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कच्छदेसै रे विजयसेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणै रे एहवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लालो) मन कियो एहवो तेण निश्चै पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टालस्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्मजोगे रे मांहोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुओ विवाह सुहामणो ॥ तब विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउमंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संभरी ॥ मुझ शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पालो शुक्ल पक्षे हुं भोग भोगविस्युं पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इ[illegible] सांभल रे वि-

जया मन विलखी थई, पिउ पूछै रे किम चिंता तुझने भई ॥ तब विजया रे कहे शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण निश्चो कियो ॥ (उल्लालो) बालपणेंमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं, तो उभय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥ तुह्मे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख भोगवो, कृष्णपक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब वलतो रे तसु भरतार कहै इसो, विषयारस रे कालकुटविष छै तिसो ॥ ते भणी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता पिता न जणावस्यां ॥ (उल्लालो) मातपिता जब जाणस्ये तब दिक्ष्य लेस्यां धर दया, इम अभिग्रह लेईनैं ते भावचारित्रिया थया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां खड्गधारा व्रत धरे, मन वचन काया करी सूधो शील वेउं आचरे ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसर्या ए ॥ आणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहै विनयगुण परि-वर्यो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु, मुझ घर पारणो, करै मनो-रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै श्रावक सुणो, एह वात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि सूझतो, भातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो तुम्हे जिम तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अछै हिवे कच्छ-देश, सेठ विजय वली, विजया भार्या तसु घरै ए ॥ भावयती अहवास, तेहनें भोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ए ॥ जिण दास कहै भगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत छै घणा ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत णा ए ॥१०॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वडो ए ॥ देशी ॥ केवलीनें मुख सांभली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कच्छदेसैं हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो, शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथी शिव सुख होई रे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजयाभणी, भगतसुं भोजन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥ ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूछै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥ केवलीने सुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ भाय रे ॥ कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती, भोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूओ संबंध रे ॥ सेठ विजय विजया लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥ केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निरतीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मुगते पहुंता, दंपत्ती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै, भावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुंचै भवनें पार ॥१९॥ ॥ कलश ॥ इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें शील पाल्यो निरमलो, ते दंपतीना भाव शुद्धैं सदा शुभगुण सांभलो ॥ जिम दुरिय दोहग दूर जाये सुख थाये बहु परै, वलि सकल मंगल मनह वंछत कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, झीणी तो उडै मारग खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौत्तक उपनो मनमें एह ॥ सांभल रे दासी आज नगरमें वहहो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो परधान सखी रूसीया, कां केइ लूंट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गाम्यो धन नीसर्यो, गामा रह्या छै गामो गाम ॥ सां० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी रूसिया, ना कोई राजा लूंट्या

गांव ॥ भृग्गूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणारा संजम लियो, वरज्यो घणयोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भृग्गू जसा तिरो मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोडी ऋद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोडी कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे ऋद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७॥ ए ऋद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी; राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भृग्गूप्रोहित ऋद्धि तज नीसरयो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संकलपियोडो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूछो लेतां नावै थांने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजाइक दिने, छोडीनें काम विशेष ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंडारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो थाय ॥ सांभल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं भाषैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी झोलो वाजियो, का काई कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करडा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोइ कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो भूपाल ॥ सांभल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै, इसकी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवै नही, तूं बैठी छै घर मांय ॥ सांभल हे राणी० १५ ॥ भखरवाली तो दीसे नही, इसकी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोडीने नीसरी, थे पिण छोडो हो भूपाल ॥ सांभल हो राजा आग्या देवो तो संजम आदरुं ॥१६॥ रतन जरूतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पड़ियो फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिनै पांमु आणंद ॥ सांभल हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोड़नें, आरंभ धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मोक्षपणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मझै, हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमांहे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा भांगा लग रह्या १९ ॥ मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥ सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोभी मूरख थका, मुरझ रह्या भोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेते नही, लागी राग द्वेषरी लाय ॥ सांभल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पड़ियो आय ॥ आमिष सम भोग छोड़नें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांभल रे प्राणी संयमथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पाम्या छे आपणे हाथ ॥ कामभोगमें रकत होय रह्या, ते तज होय सांनाथ ॥ सांभलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा भोग छोड़ने, इव्य भावै हलक थाय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

गांव ॥ भग्गुपुरोहित धन तज नीसरचो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणारा संजम लियो, वरज्यो घणोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भग्गू जसा तिगें मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोडी ऋद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोडी कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे ऋद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७ ॥ ए ऋद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भग्गूप्रोहित ऋद्धि तज नीसरचो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ९ ॥ संकलपियोडो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूछो लेतां नावै थांने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजा इक दिने, छोडीनें काम विशेष ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंडारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमें थाय ॥ सांभल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं आपैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी भोलो वाजियो, का काई कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करडा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोइ कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो नृपाल ॥ सांभल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहै, इसमी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवै नही, तूं बैठो छै घर मांय ॥ सांभल हे राणी० १५ ॥ नजरवाली तो दीसे नही, इसमी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोडीने नीसरी, थें पिण छोडो हो नृपाल ॥ सांभल हो राजा आग्या देवो तो संजम आदरुं ॥१६॥ रतन जडतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पडियो फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिनै पांमु आणंद ॥ सांभल हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोडनें, आरंभ धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मझै, हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमांहे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा भांगा लग रह्या १९ ॥ मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥ सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोभी मूरख थका, मुरझ रह्या भोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेते नही, लागी राग द्वेषरी लाय ॥ सांभल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पडियो आय ॥ आमिष सम भोग छोडनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांभल रे प्राणी संयमथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पाम्या छे आपणे हाथ ॥ कामभोगमें रकत होय रह्या, ते तज होय सांनाथ ॥ सांभलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा भोग छोडने, द्रव्य भावे हलका थाय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं भोग जाणज्यो, ए काम वधारै संसार ॥ साप ज्युं मोर थकी डरतो रहै, ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण२ खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ ॥ हस्ती ज्युं बंधण तोडनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम लियां, सुणो कहुं हुं महाराय ॥ सांभल हो रा० सं० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोडीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांभल हो राणी सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडकै, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव ॥ छए जणा थोडा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बेठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रनु हुं वर्मो, मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांन्नलजो सहुको तुमें, कुण छे मुऊ समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पडुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधांरी देवल चढे, सीधे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्ये मुऊ होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करूं, मुऊ मोटी छे वात ॥ कुण २ दानथकी तिरचा, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुऊनें अन्निमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हूं वर्मो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पमिलान्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहे, ते तो मुऊ उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलान्यो ऋषिराय ललना ॥ शालिन्नड सुख न्नोगवे, दानतणें सुपसाय ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ न्नरत थयो चक्रवर्त्ति न्नलो, ते पण मुऊ फल जाण ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमी-रस वहराविया, पाम्यो न्नवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पमिलान्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव न्नव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ए ॥ गजन्नव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अवतर्यो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दान तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आडंबर आठै पहुर, याचकसुं विवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरै, भोगकरम संसार ॥ जिनवर कर नीचो करै, तुझने पड़ो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठै सहु कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सहु टले, शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करै, शील वड़ो वैराग ॥५॥ शीलै सर्प न आभड़ै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरि करी केसरी, भय जावै सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, में छोड़व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै जग हूं वड़ो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लोकनें, मैं दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में सीझव्या, मुझ जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या बैरखा, शंखराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते मैं नवपल्लव कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदे घर आणी रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी० ४ ॥ चंपाबार उघाड़िया, वली चलणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, मैं तसु कीधी भीरो रे ॥ शी० ५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

में कियो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, अ वतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध में करी, वलो धरम काज आरंन्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट किया, में अठोत्तरसो वारो रे ॥ पांमवनारी द्रौपदी, में राखो मान उदारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ए ॥ इत्यादिक में ऊधरचा, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥ तप बोल्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं किसुं, सांनल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा नोजन तें तज्या, जगमें मीठा नाद ॥ देहतणी शोना तजी, तुऊमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूम कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरे, बंमी सहु संसार ॥ आप एक तूं नांजतो, बीजा नांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोमवा, नांजु नवनय नीम ॥ अरिहंत मुऊने आदरे, वरस बम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरे, मुऊ लबधे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसै नपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में तारचा ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामसो, देशो मुऊ साबास ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण नव ऊधरचो, मूक्यो मुगति मऊार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप सरखो जग को नही, तप करै कर्मनूं सूम हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूड हो सुंदर ॥ त० २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन माली में उधरयो, छेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषेणनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेउरी, सुख भोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंडाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोडी सेवा करै, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, लाख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूझव्या, तिण मुज अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार हो सुंदर ॥ त० ८॥ कृष्ण नरेसर आगलै, डुक्करकारक एह हो सुंदर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुज महिमा सवि तेह हो सुंदर॥ त० ९॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर॥वृष्टि करी सोवनतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १०॥ इम बलभद्र प्रमुख बहू, तारचा तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, पहिलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ भाव कहे तप तूं किसुं, छेहथुं करे कषाय ॥ पूर्वकोडी जो तप तपै, क्षणमां खेरूं थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें बाल्यो सवि देश ॥ अशुभ नियाणो तूं करै, क्षमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियो द्वारिका दाह ॥३॥ दान शील तप सांभलो, म करो कूठ गुमान॥ लोक सहूको साख दे, धर्मे भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपूंसक बो त्रिण्हे, द्ये व्याकरणी साख ॥ काम सरे नहि कोइनुं, भाव भणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसवति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विध२कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंतत्तो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तारथा बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥ (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद्र ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततखिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एलापूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुजनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गछनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसभणी रे, दीधी गौतम दिख्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी छोडव्या रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतां रे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे रे, देखी पूत्रनी ऋद्धि ॥ मुजनें मनमांहे धर्योरे, ततखिण पामी सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगे रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामे देवता रे, तेह थयो मुज संग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रज्जु पाय पूजन नीसरी रे, डुर्गता नामे नार ॥ कालधर्म विचमां करी रे, पोहती स्वर्ग मझार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोज्ञा कारमी रे, रूप किसुं अज्ञिमान ॥ ज्ञरत आरीसाज्ञुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढज्जूति कलानिलो रे, प्र गट्यो ज्ञरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल म-साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज्ञ झाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांज्ञल पृथवीचंद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में ऊधर्या रे, मूंक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रज्जु वीरजी रे, मुजने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें सांज्ञलो, दान शील तप ज्ञाव ॥ निंदा छै अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंड ज्ञराय ॥ वेढ राड वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापीयो, ज्ञूंडो कोइय न दिठ ॥ वलि चंडाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो, सहुको ज्ञलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको ज्ञाव छै, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें ज्ञला, पण ज्ञाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको नाव विशेष ॥ ७ ॥ नगवंत इठ नंजण नणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चन विध धर्म नणंत ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम नणे रे, बेठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो नव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, नवियण सांनलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखै श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति नूलो नवि नर्म रे ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे छै जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे बासठ समे रे, सांगानेर मकार, प्रद्मप्रनु सुपसाजले रे, एह नणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गच्छ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मुनींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ समयसुंदर वाचक नणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ दान शीयल तप नावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ नणतां गुणतां नावसुं रे, रुद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति दान शील तप नाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधनें मननथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ नव्राही ॥ ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो गे, जैनमार्ग छंडी भुलां कां ज्ञमो गे ॥ २ ॥ अलोज्ञी अमानी निरागी तजो गे, सलोज्ञी समानी सरागी ज्ञजो गे ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो गे, नदीगंग मुकी गलीमां पमो गे ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंरुमाला ॥ केइ देव नत्संगे राखेछे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांस ज्ञक्षी महा विकराला, केइ योगणी ज्ञोगिणी ज्ञोग मांगे, केइ रुद्रणी ठागनो ज्ञोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश रा खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोज्ञना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंडुडं मन ज्ञाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपथी आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी ज्ञीरु ते केम ज्ञाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्ञाता ज्ञजो मोक्षदाता, अलोज्ञी प्रज्ञुने ज्ञजो विश्वख्याता ॥ र-त्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेछे, सवि धर्म एकत्व ज्ञूलो ज्ञमेछे ॥ किहां सर्पवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू-रवीरं ॥ ए ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंज्ञखंमं ॥ किहां कोद्रवान किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां ठागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूमवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवज्ञोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म धारी, नमो वीरस्वामी ज्ञजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न-थी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट जाचे ॥ तजो मोह माया हरो दंज्ञ रोसो, ज्ञजो पुण्य पोसी ज्ञजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रभु परमरागी, भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी है एक अर्ज मोरी, दीजै दासकूं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥ निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग संमुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरयां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु भाषित सार, सोभवियां मन शुद्धसें, नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कुमरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भक्ते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥५ ॥ बांधी वडसाखा छींके बैसी हेठल कुंडहुताश, तस्करने बलि मंत्र समप्यों श्रावक उड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट विरोध, जेणें नवकारैं हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंता थायै जिनवर एहवो है अधिकार ॥ सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध, परभव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परधल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग अधबलतो

ते टाले ॥ संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्युं उंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थाये धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णभुजंगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रभावे हारफूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पाम्यी बाण प्रहार, पद पंच सुणंता पांडुपतघर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर भवदुख भंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम भाखै भगवंत ॥ पूरबदिसि चारे आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी ऋद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित्य जपिये नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य भणीजे, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्तै आराधता ऋद्धिसिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स थुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तैं जलता आग निकाल्या नाग, किया वरूनाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी उद्धाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अक्खै कुण तो परखे, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंत्ताला उपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलाली झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी पक्खर सझी सक्खर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खम्म रहाए, प्रभु ज्ञानी आक्खंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाड़ उफाड़ दिखाले लक्कड़, वड़ फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिणं किया नियाणा तप खजाणा, कोम्मी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥ हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रनु अप्रतिबंध विहार कियो तब, रनबन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वम्म असुराणा वली हेराणा, पिठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार विरोध, महा अन्निमान धरंदा हे ॥ वाडल मतवाली नीली काली, वायु महा वाजिंदा हे ॥ ए ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट, दिवाकर तेज छिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू गाजंदा हे ॥ गरम्माटा वाटा सुणिया थाटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥ हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया घीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी धारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चल्ले जल खाला नदियां नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा हे ॥ ११ ॥ वम्मे पाहाम्मां ऊंगी झाम्मां, सझाम्मां ढाहंदा हे ॥ सम दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूठा जाण कि रुठा, फूठा मन असुरंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, काउसग्ग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसग्गाहंदी केल करंदी, पाठा नांहि मुमंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान धरंदा हे ॥ प्रनु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुन्नंदा हे ॥ देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम्म सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण बेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि प्रयुंजी दीठे प्रनुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमावत्ती देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि-

माना, पांवां आय लगंदा है ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस तारा, छत्तर ज्यूं ठावंदा है ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब प्रीत सुखंदा है ॥ इंद्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिल कंदा है ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सूंदर रूप सो हंदा है ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा है ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा है॥ नंढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा है ॥ १६ ॥ उर कंचु कसिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा है ॥ पहिरण तन खूवा हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा है ॥ कटिमेखल कड़ियां सोने जड़ियां, हीरा वीच हलकंदा है ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां, पग नेवर रणकंदा है ॥ ले झांझर ताला ताल कंसाला, पक्खावज्ज वाज़ंदा है ॥ कुहके करनाला वीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा है ॥ वाजे सरणाई सखरी धाई, नगारा रोझंदा है ॥ १८ ॥ पनमा वैरुट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा है ॥ तत्ताथेइ२ तान तझूा, रस भेद रमंदा है ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पावस जल पसरंदा है ॥ १ए ॥ धरणीधृर जाणया ग्यान पिछाणया, कमठासुर कोपंदा है ॥ नागादी पत्ती आंख्या रत्ती, कित्ती रीस आवंदा है ॥ रे मुढा धिग चित्त विणढा, क्यूं नांही समझंदा है ॥ साहिब बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा है ॥ २० ॥ ए क्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा है॥ असमांन खमाई रीस भराई, हिक्काइ बजरंदा है ॥ कित्ती बहु गल्लां पड़ै दहल्लां, धड़हड़ देह धूजंदा है ॥ धरणेंद्र ड़राया तब ते आया, पावां आय लगंदा है ॥ २१ ॥ कर जोड़ि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा है ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा है ॥ तें रीस न धरियां किणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा है ॥

कमठासुर कित्ती बहु विनत्ती, निज अपराध खमंदा हे ॥ २२ ॥ सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण सम्मरंदा हे ॥ सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे॥ सम्मेतशिखर पर चढके ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरत्ती जग ऊपत्ती, पार न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखके भेद परखके, गुमानी मोरुंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्ला पीर फकीर मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद अटल्लां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मुलकंदा हे ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मरू रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागोसांई भेद न पाई, भीरू पच्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरायण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा देवंदा हे ॥ तूं एकां थप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध आपंदा हे ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंदा हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, ऊणे सुर गावंदा हे ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेभा धुखंदा हे ॥ कुंकुंम कसतूरी केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला हंदा, टोम्हर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां भरीया गाबां, परमल तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फाबंदा हे ॥ आभूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंम्हल कान झिगंदा हे ॥ २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि जाउं मोजां पाउं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कत्थूं गल्लां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा हे॥ सिद्धांदा वासा तिहां रहासा, तुझ सेवक विलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगे पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समैं विपुला, नवनवा महोछव राजेला ॥ सुपसाथैं गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थावै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर निसाण घुरै, नर बे दरबार खड़ा पुहरै ॥ जय२ करजोड़ी उचरै, सानिद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ घमघम माद्दल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप इमें, सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुर मंदिर भरे धनें ॥ ७ ॥ तत खण धण खंच्यो आवे, करि स्यांमघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै, प्रवहण भवसायर मझ फरै ॥ बूड़ता वाहण जे समरै, ते आपद निश्चेसुं उबरै ॥ ९ ॥ खड़खड़ खड़ग प्रहार वहै, सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खेमकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरै, श्रीनागपुरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर भय टालै दूरै ॥११॥ वीरमपुर वाने सुधरै, खंभायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पाटै पवरै, जसु कीरति महीमंडल पसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षण आगे, उत्तर गुरु दीपै शोभागे ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागे ॥१४॥ पुर पट्टण जनपद गामे, गा ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पद वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजननें सुखिया राखे ॥ समरयां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक भाखै ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाछ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥ शुन्न मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवे सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश बावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न पमे वीजलियां, नूत प्रेत न कर सके छलवलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशालहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ वम्नगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंन्नो दोय खंम्म कियो, पोथी परगट परन्ना व थियो ॥ विद्या सोवनवरणो सझियो, वर नयर उज्जेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवम्म वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहम्मदे कूखै जनम न्नणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ९ ॥ इग्यार बत्तीसै जनम न्नणूं, इग्यार इगतालै दिक्ष गुणुं ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे बारेसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ सूरी पटोधरणं, परभाव उदेसर भयहरणं ॥ नवनिधि लक्षमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्रीअजमेरे, गढमंझो वर बीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा सागै, भावठ दालिद्र दूरे भागै ॥ मेरे असमालखानके सोभागे, गुरु पुर२में कीरति जागै ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरभव पूजा जेह करे ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरै, कवि सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद कुलांबर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल सुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल सविणाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम ॥ जिहां वसै जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म, सेतालें सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि माने सोय, में नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण पामें बहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते तंम्हि नवि मंम्है व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी छांह, निश्चै दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ त्रिसहर

विसनर विस नरनाह, भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रभु नामें ते न करै पीड, भाजै भावठ भवभय भीड ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन उद्योत, जिहांछै भवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में भेट्यो आज, रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअंगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो परमानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्न गिणियो, जुगपवरागम जो में थुणियो, चंद्रगच्छ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४॥ बार२ एक चित्त भणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर भुवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम२ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इस जो सदगुरु गुण अभिनंदै, ऋद्धि समृद्धे सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुझ हुवो ए ॥ १ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी विरियां आयवणी, केहवी करिये तुझ अरज घणी ॥ हिव अलगा छो तो वेगा आवो, हिव ढील घणीभर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गच्छ साचो, कोइय न जाणे तुझने काचो ॥ इण संकटमें आलश म करो, दादा दुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक पडी सदगुरु हमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

थे मत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब श्रीसंघ आगा लगे, पाछा किम जात्रा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले उजवालो, परघल निज ठेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाथे ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली, जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे सांभलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अनेक हो ॥ थां समरयां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥ सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामांहे बीजली, बलीर झबकाय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्छव करतां उच्छमें, मूंओ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, संघ मांहि राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वडनगररे ब्राह्मणें, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूर कीया तें सहू दुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखे अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, भंडारीमांहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छै ताहरा, कहतां न वे पार हो ॥ भागसंजोगे दादो भेटियो, अडवडियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं तूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो ॥ कनककीरत सुपसाउलै, लालउदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देशो ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरयां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु त्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जग सगले पूरै, दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो दुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो ठेगालां सेहर गाजै, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकड़ घोली, हाथे लेइ सोवन क चोली, पूजो दादाजीनें मिलश टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत माहाराजा, दादो राजै खरतर गछ राजा, दादो समरयां सफल करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीड़ा दुख हरियै, दादा जिम जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध करज्यो, दादा दुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंछित फलज्यो ॥ दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गहाले, सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै, सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ छतरीनितरी छवि छाजै, विधमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवे, दादोजी दीगां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवे, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकुजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ए ॥ अलगांधी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित पावै हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजालै, पीका हुवै आलेमाले हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजै जग जशना बाजा, राजे खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिल्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ संवत सतेरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सहाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरू ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगटयो, खरतर गछ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिद दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन२ साहिब चढते वानें, ध्यावो ध्यानधरू ॥ स० ॥ वाजे जेहना जशना वाजा, गवी गामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमें अमलहै, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमाये चरण नमंता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सद्गुरु, देराउरतें ध्यायोजी ॥ स० ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥ पंचनदी हम वैठे वेरी, दरीयै चित्त डरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥ दादा नखत्रणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥ समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ नाया नक्तिसूं पूर रहो रे, डुरिजन सब डुर हरो रे ॥ ना० ॥ मेरे मनमें नक्ति वैरागी, चित्त परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी नाग्यदशा अब जागी, जीया हो ना० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥ वलि अक्षत थाल वधावो, जीहा हो ना० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया हो ना० ॥ ३ ॥ घस केसर नरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम घोली ॥ गुरु पूज रचो नर ऊोली, जीया हो ना० ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष सूरीसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै सुन्न काजा, जीया हो ना० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो नवि हितसुं, कु० ॥ कशर चंदन कपूर अरगजा, नाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु० १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करै नवि रुच-सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा पूरै गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान वधारै, रूप रंग देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिधका री, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलाशी, सत्यरत्न सुख एही बलसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग देवश्रीचलत ॥ आज करो रे नव्वाद, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आछी वेला नें उ आगो दाव, इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै वद्य सार, फुलवारीनो नहीं जिइां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ऊन्ना करजोड़, कोण करै म्हारा दादाजीनी होड़ आ० ॥ ४ श्रीखरतर गछपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उछरंग, सत्यरत्न मन रंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ मैं ग्यान उमंग निरख्या गुरु माहाराज, छतियां हर्षन्नरी ॥ मैं० ॥ अमल अनंत गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमातमा रे, वं छित दायक स्वाम ॥ छ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ न्नविजन न्नक्ते न्नावसुं रे, ध्यावै न्नर२ थाल ॥ छ०२ ॥ केशर चंदन कुमकुमारे, न्नरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती रे, पूजै सहियर साथ ॥ छ० ३ ॥ कुसल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन चंद सूरी पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥ छ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीसरू रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ छ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रन्नाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाउं गुरुरा य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल धर्मी सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा, अशुन्न करम सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिद्रन्नंजन अरि सब गंजण ॥ प- गर सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सर ण ग्रही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

ज्ञा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी भ्रात कः रो मेरे सद्गुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलभर पीजै ॥ सुरतरु शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥ परमभगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो भरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरथां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सद्गुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल भेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गम्भालै दीपता, ज्यांरी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरथां संकट चूरता, कुशल करण अवतारो हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गच्छ अधिकारी हे माय ॥ स० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सझ सिणगार मनोहरू, ठम२ पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोभावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥५ ॥ विछड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवै, परघल लखमी ल्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वेला वाटमें, समरयां मानिध आवे हे माय ॥ भूखां भोजन मेलवे, तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवा,

थान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामग्री, गावै
गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै,
नवि मिल नावना नावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमें, पर
मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥
श्रीसदगुरुजीसें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ
रज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु-
धकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणक
मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट दुख मेटो,
सोमवार पूनम दिन नेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती
संपद सारी ॥ दादो० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवे, अतर
गुलाब केवको व्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर
क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी दु
स्मन चूरे ॥ धन२ सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥
दा० ॥ ४ ॥ नगणीसे अठावन वरसें, कातीपूनम दिन नलसै ॥
गछपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदे वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस
परस दरशण अब दीजे, अपणो दास मुझे समझीजै ॥ जगमें सु
रतरु सारखो रे, कीरति वारही थारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व
रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल
सूरिंद धणी रे, कहै रामरुद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥
॥ पुनः ॥ ॥ चाल नरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गछपति
दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिनम
णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, गाजेम कुल नदयाचले ॥
जिह्वासाह पितेश, जैतसिरी अंबर नलै ॥ २ ॥ गछपति चंदमु
णींद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र
काशन गनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, झिगमिग ज्योती जी

झिगमिगै, पूनमनैं सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचै अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुंदर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ्र थिर थुंभ वीकाण, बालूचर महिमा घणी ॥ कीरतबाग प्रधान, दुखभंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, वांया तुम सुनिझरतणी ॥ दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर भणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंद्रशिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसे अमृताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुरुगुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी बेडिया पार उतारो, तूं वण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता भाइव नीर जलधि ज्युं, यो संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही भर मझ धारो ॥ में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल गणपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु रटै कोइ ईसा, अल्ला उनया प्यारो ॥ मैं ध्याउं जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुण अरजी आथे गव तमहर, तुरतही विघन विडारो ॥ रामबाग पुर गंज अर्जीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ मैं इक सेवा चरणकमलकी, मांगूं

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत उगणीसे अमृतालीश, मेरुत्रयोदशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार तिहारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या मैं दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुझ मन निरमल काज ॥ दे० २ ॥ गुण ऋद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये भाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु तुह्म परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुभ थांन पुर२ सोहे, मुलक बीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रानऋद्ध सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥ ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधे सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुभ परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधारण, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमैं सहू, गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप भय पड़ियां, सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमी विरियां संकट पड़ियां, समरयां आवै धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिसियां पाणी, निरधनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक थिरता परगल भोजन, पग२ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अभय महा सुखदाई सदगुरु, नवनिधि वंछित थायजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित घर सपदं,

दान विशाल सहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ जिनकुश लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर, देश देशांतर कांइ जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुथिर थांनक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, छुनि यांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्मारा राज दादरे दरबार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय चंपेली, जक्ति करूं जरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगुलियांनें पांव समावै, आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणांने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थांने नलगे जी, रंग वणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः सद्गुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, मैं मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरया, आही थांरी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत छुख वेरी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं मैं नही ध्याउं, शरण ग्रही मैं तेरी, दूरथको मैं जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका मैं हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्मारत्नकी वीनती सुणके, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित लाय२, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर, थांभो वज्र विफार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः॥ होरी खेलो भविक सदगुरुके संग, नित आनंद उत्सव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित उमंग ॥ हो० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥नेमस्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणांरी पूज रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सदानी ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिके साहिब, वंछत

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये बालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद यालकेसनमुख गावै, पढत मधुर धुन गुण गोरी ॥ स० ॥१॥ केशर घोली जरी रे कचोली, पूजत हे बारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल भर्यो सदगुरुके, अबीर उमावत जरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश भाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकरी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं जण छुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि तदाता जगके त्राता, अरजी इय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामऋद्धिसार सुपाठक, वंदत हे छुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रजाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल जरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारो, चिंता दूर निवारो ॥ अबकी विरिया जूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, वमा जरोसा जारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, जीमजंजण अति जारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २ ॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन चंद मेरे हो सदगुरु, हम हें सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति पदं ॥ पु: ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

चारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलभर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी भांति करूं विध पूजा, आणके चित्त इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरूकी, वेर२ बलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥ जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण भर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंमले गाजे, फरशतां पाप सब भाजे ॥ पूजतां संपदा पावै, अचिंती लछ घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु, मुझ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु० २ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी डुसमन, ए सब दूर हरीजे हो ॥ कु० ३ ॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजे हो ॥ कु० ४ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नें कुमकुमा जी, कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थांरै वुफलां रे आगल

घूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवै काम नी जी, काई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थांरी गावी गोरै थापना जी, काई उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा न्हली गुरु मेरूते जी, कांइ सालूरेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ वधती गढ वीकाण॥ स० ॥ आसा पूरण आवजो जी, थेतो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतड़ी न्हले मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख तिहां राजै रे ॥ म्हारा सद्गुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखालां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन न्हरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सद्गुरु पाया, पूज्यां सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा, थांरे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजै, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई, दीठो मैं परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूरेवाली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल तिहां आवै, जिहां लूणियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंदन गुण गावै, करजोड़ी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीकी लावणी संग्रह ॥

सद्गुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गच्छपति साहिबा ॥ ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद्गुरु महर करीज्यो मुझपर, ज्युं भिंभनकूं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ भरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गुरुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पापतिमर छुट जाय ॥ गुरु परमानंद सुगुण शोजागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर रणकाती, लिये अली बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृदु समीर ऊणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसद्गुरु दरबार ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ६ ॥ रुद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री आवै जात्र करणकूं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊणकार, कौर सु विध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ हतेष माश प्रतिपत् दिन जव्या, शुक्ल पक्ष शुन्न वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहे, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उदार हो स० ॥ १० ॥ सदगुरु धर्मशील परज्नावे, कुशल होत नित साय ॥ रुद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेल्यां आज चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगहना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनमर जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

सरे, सऊ शोले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम गरूालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अजिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ ऋद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हुं वलिहार हे ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥

कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंगल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंगल मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित जयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥

श्रीसौजाग्य सूरीसरू, गुरु गछपति हो, खरतर गछ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठारी कुल दीपता, गुरु गछपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत अठारे बासठै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें, गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता, गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीस सतरे समैं, गु० पायो देवबि मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि उरुपती, गु० माघमाश सुखदाय ॥ सा० ॥ श्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणें हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ पर खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पान थी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहती रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणा रे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर वरसता रे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसा यथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना द्यो दीजै ॥ थांरी देशना सुण मन रीझै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमंडल ऊपर गायो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव-

गंधार, वलि भैरव राग मझार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥ पंच सबद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर झालर बाजै ॥ बहु सज्ज थया धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो, श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥ सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो भव कोरू कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो भविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रतपो ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, भर मोतियां थाल वधावै॥ लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापुत्र गोखे रतन जडाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गच्छराय हो ॥ श्रीजिनलाभ पाटोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोभ सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सोभागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १ ॥ सुगुरु म्हारा देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृतवाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० थे गो अवसर जाण हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरया, सु० विकस्या कमल कलाप हो ॥ राग विभास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार हो ॥ इम बहु विध भूसंभलै, सु० वरत्या जय२कार हो ॥ म्हा० ४ ॥ संघ सकल भगते करी, सु० जोवै थांरी वाट हो ॥ नीचे पधारो गणपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो॥ म्हा० ६ ॥ बहु भवियण प्रति-

मूकवै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु० टालै जवदुख जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण बत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ७ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी क्षमाकल्याण हो ॥ म्हा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, जविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरै उरनकूं तारै, शरण तिहारी गहियै ॥ ज० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशैं वहियै ॥ ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशै, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारै, राखै गोजन महियै ॥ ज० ॥ वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥ एक असंजम दोय विधि वंधन, त्रिविध दंम परिहरियै ॥ ज० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ षट् काय रक्षक महाजय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥ रिदयकमल नितप्रति राखीजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुह्म वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोजत तेज समाज ॥ जविजन वंदो रे जावै गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुधरम गणधरू रे, ज्ञाता दादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पूरव धर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें परगमा रे, श्रीयशोजद्र मुणिंद ॥ श्रीसंजूतविजय जद्रबाहुजी रे,

श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूतले रे, सुरनर नामत शिस ॥ भ० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमान परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गछ चोराशी प्रगट्या तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शीस जिनेश्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो रे, गछपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गछपती रे, श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गछमें थया रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री जिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गंभीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भंग पदारथ अति बिस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंमी वांवल आदरे रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए उवखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धारक आचारज छै घणा रे, पंचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लावण्यकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख पामसे रे, प्रातिकनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियडे मेह वरसीयो, सखि आज हुउ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें सौभाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्षांतिगुणे करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छत्तीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना भंडार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम भलहल भाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोभता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजै तह त्रि काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गच्छ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा भरतार रे ॥ जेहनें प्र णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ बिसतारता, सखि दे ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप भावना, बारे भावन सुविशष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश र ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षण में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ थाय निज ज्ञान प्र काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुभाष रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल बिंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, जगतितणै उवरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराय। राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी, नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टालै, पंच महाव्रत सूधा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि गाजै, इम छत्रीश गुणें गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम जंग प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुभ लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अभ्यासी, भविजन चितकमल विकासी रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवे, गणधर वंदन शुभ भावे रे ॥ सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर भरमने चूरे रे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः देशना ॥ नणदलबाई चुरूले जोबन फिल रह्यो ॥ ए चाल ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥ सदगुरु म्हारा, द्यो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिन उप दिस्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी नि रमली ए सहियां, भ्यासे घ [illegible] चूं [illegible] ॥ सद० ॥ २॥ तखत विराजो साभता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिणंद ॥ स०॥ तेज झलामल गुर तरू ए सहियां, मुखछवि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींच वा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा ए सहियां, भाखो नव तत्व सा [illegible] ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ भगति नित साचवै ए सहियां, पूरव पुन्यसुभाल ॥ सद० ॥ तारण तरण जिहाज ज्यूं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगछ महिमा निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥ ऋद्धसारनी ज्ञावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदे शना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्थाजनी पर तारो, गुरु म- नमो थे मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु ज्थाजनी० ॥ अमृत उ पम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारस खाणी, श्रुति नय निक्षेप प्रमा णी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु ज्ञानी गुणवंता, ज्ञवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण ऊ लकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ ज्ञविजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक ज्यूं जलधर हसिया, ज्पदेशे दुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु धर्म शील सोज्ञागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, ऋद्धसार व चन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥

अथ श्रीखरतर बृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चखाण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, और जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पुनमकों करे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि दशावर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हे तेसेंही अमावस पूनम भी चिरंतन पक्षीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करनेके हें, पारणे उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका क्षय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हें, उसमेंसे अग्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रखा हे, लेकिन सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जैनागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते जो चौदश कम होतो उपवास तथा पक्खी प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन तेरस तथा चौदस क्षय तिथिक वितंडेको न करे, और जो बेला करे तो हरीगमेतो दोनों दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवच्छरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवच्छरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन तीजके दिन कदापि काले भी नहि करे, और जो चोथ दो होय तो पहली चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ भी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय हे, दूसरी लौकतिथि हे. दुसरा यह प्रमाण हे, साठ घडीकी तिथि गेरके दुसरी घडी अधघडीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो उदयतिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अधघडी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? इस प्रश्नका उत्तर—हे भव्य, जो पहले दिन तिज मानी हे, उर ती जके दिन चोथ बहुत घडी भुगतेगा, लेकिन् वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घडी अ धघडी चोथ होनेसें चोथ मानीजेगा, लेकिन् जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहगी, तबतो एसी संपूर्ण तिथिकों छोडके दुसरी थोडीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही. कार्त्तिक माश बढे तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो बढताही नही, अगर बढेतो दुसरे फाल्गुणमें चोमा सा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ चोमासेकी चौदससें पचास गुणपचासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भा- दवा आसोज बढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो हो- यतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससे पचास दिन लांघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक ल्पसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ हे, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे वढ महीनाका शुक्ल पक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूंक जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पच्चक्खाण नहि करे, यह तिथियो का प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध हे, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखते हे ॥ निहिपक्खेपुन्नतिही, कयव्वा

जुत्तधम्मकज्जोय ॥ चाउद्दसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपडिक्कमणं ॥१॥ तत्तेवपोसहविही, कायव्वासव्वगेहिसुद्धेहेत्र ॥ नहुतेरसीइकीरई, जद्धानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरोदयपडियायावी, तेरसीहुंतिनपक्खियंकुज्जा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउसमणा ॥ ३ ॥ तिहिवुढीएपुव्वा, गहियापडिपुन्नजोगसंयुत्ता, इयराविम्भाणणिज्जा, परं थोवत्तितत्तुल्ला ॥ ४ ॥ (तसेइ ज्योतिष्करंड पयन्नेमें त्री एसाही लिखा हे) ॥ उविसहियानअट्ठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ पडिवेसहियानकयावि, इइनणियावीयरायेण ॥ १ ॥ अट्ठमिदिनंमि पायं, कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीउठीनकायव्वा ॥ २ ॥ पनरसमिमयदिवसे, कायव्वंपक्खियंतुपाएण ॥ चाउद्दसेविकइया, नहुतेरसिसोलसमेकहवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे तब पहली सामायकदंडक ३ वीर उच्चरके पीछे इरियावही पडिक्कमें, क्योंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीनद्रबाहूस्वामी, श्रीहरिन्नद्रसूरजी, तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागच्छी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमलागच्छी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये ग्रंथोमें पहले करेमिन्नंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥ तथा श्रीमहावीरस्वामीके व्व कल्याणक मान्य हे, इस वातका कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोमें पाठ हे; खरतरगच्छ, तपगच्छ के आचार्योंने ग्रंथोमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जाणके उठा कल्याणक न मानते हे उनोकों दिगंबरकी तरे मल्लिनाथस्वामीकों त्री स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो त्री आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे, दुसरा अपणे मनकल्पितपणेसें न माणनेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कल्याणकादिक पर्वतिथिको करे, लेकिन विनापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन किस

सिद्धांतमें त्री नही हे, पर्यूसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-
रणी एसा बंधाण नही, अधकी त्री करे । तथा आंबिलमें एक
अन्नद्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका क
थन हे इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रह
ण करणा नहिं चाहिये । तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी
पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया हे, कारण इस का
लमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट
होना दीखरहा हे, तथा श्रावककूं पच्चरकाणमें पाणस्सलेवाका
पाठ कहणा युक्त नही, यह पाठ साधूका हे, तथा दिनप्रति एक
उपवाश पचरकावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें
धारणा रक्खे, लेकिन् पच्चरकाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे ।
तथा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब बिदलकी गिणतीमें
हे, इस द्विदलधान्यकूं गोरस दही गछके साथ जक्षण नहिं करे,
तथा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार
पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन् संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं
माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी हे.
अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके हे जिसमे सरल शुद्धोपयोगी स-
मयसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सू
त्रोंके पाठ संयुक्त हे सो अनेकांती बुद्धिवानोने गुरुगमसें देखके
धारणा ॥ यह खरतरगछमेसें चोरासी गछ ज्या हे, जिस वास्ते
खरतरगछमें चोरासी नंदि हे, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के
निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४
मे निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, व
र्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० को शालमें अ-
णहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालोंकूं ज्ञान उर क्रिया

करके जीता, तब दुर्लभराजाने खरतर विरुद दिया, तबसे कोटिक गच्छ चंद्रकुल वज्रशाखावाले खरतरगच्छ कहलाणे लगे, लेकिन् अभी स्वमताभिमानी खरतरगच्छकूं संवत् बारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसें भया एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोमें लिखा हे, लेकिन् अपणे पूर्वाचार्योके बणाये सम्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिःके दो शिष्य भये, बडे जिनचंद्रसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये और श्रीमाल गोत्र थापा, दुसरे श्रीअभयदेवसूरिः, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाश नदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिः, जिनोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिन दत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंसो माहेश्वरी तथा ब्राह्मनोकों श्रावक बणाये, रांखेचा लूंणीया पारख, सांवसुखा मालू कोठारी, बोथरा नाहटा, वगैरे गोलछा श्रावक चम्म डुगड सेठिया अहलेचा, इत्यादिक तीनसें गोत्र स्थापक भणशाली प्रमुखगोत्रोंकूं ओसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोके नाम लिखणेसे ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समझ लेणा. एक अठारे जाति रत्न प्रभसूरिजीने ओसियामे ओसवाल बणाये हे, बाकी प्रायें सर्व ओस वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरिः माहाराज तक खरतरगच्छके प्रतिबोधक हे, पीछे ओसवालवंशी हुये पीछे संवत १५ सें से लेकर आज दिन तक और२ गच्छियोने तथा मताव लंबियोने इनोपर अपणा सिक्का जमाया हे, मूल वंशावली देखोगे तो सब व दोलत खरतर बृहद्गच्छकी हे, यह बात हमने बहोतोकी वंशावली तपासके लिखी हे, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी भये, इनोके शिष्य उपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिने क्षेमधाड़शाखा नविनाणगढमें पांचसे राजन्यवंशीयोकूं दीक्षा देके

से प्रसिद्ध नई, नस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु न्नये, जिनोके शिष्य पंम्रित श्रीकुशलनिधानमुनिः न्नये, नन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाब्जचंचरीक न० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंम्ली पं। केमचदंमुनिः चि। पेमचंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोके नपगारार्थ नपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बमा नपासरा विद्याशाला न। श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी गणिः ॥

